वृक्षारोपन कर पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने मे अपनी भागीदारी निभायें : श्रवण कुमार

पौधारोपन कर पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने मे अपनी भागीदारी अवश्य निभाये, मानव जीवन के साथ अन्य जीव जंतुओ को बचाना है, तो आपलोग एक एक वृक्ष लगाकर पृथ्वी को हरा भरा रखे,पेड़ की आवश्यकता सभी लोगो की है मौसम की बेरूखी है,मौसम बदलने की दवा है वृक्ष है, वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओं। उक्त बातें ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने 1 अगस्त 2018 को मसौढा पंचायत के कुझा गांव मे आयोजित मनरेगा के तहत सधन वृक्षारोपन अभियान के तहत पौधारोपन कार्यक्रम मे कही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्री श्रवण कुमार व डीएम कौशल कुमार, डीडीसी एमएस कैंसर सुल्तान सदर एसडीओ अनु कुमार व अधिकारियो संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया उसके बाद मंत्री समेत अन्य पदाधिकारियो ने वृक्षारोपन कर धरा को हरा भरा रखने का संकल्प लिया। इस गांव में मनरेगा योजना के तहत कमलेश चौहान के निजी भूमि पर वृक्षारोपन कार्यक्रम किया गया। योजना की प्राक्कलित राशि 208800 है, योजना संख्या 21/2018–19 है। कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने कहा वन महोत्सव के तहत वृक्ष लगाने का कार्यक्रम का भुभारंभ 1 अगस्त से राज्य के सभी जिले भाुरू किया गया है,जो अगामी 10 अगस्त 2018 तक चलेगी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सुबे की सरकार नीतीश कुमार ने राज्य के सभी मंत्री, विद्यायक, मुखिया, सरपंच, वार्ड सदस्य, पंच के अलावे सभी जनप्रतिनिधि व कार्यकर्ताओं के माध्यम से अभियान शुरू किया गया है। वृक्ष लगाने के साथ साथ उसे संरक्षित करना सभी लोगो को दायित्व है। नवादा जिले मे एक लाख पौधारोपन किया जायेगा, जिसमे मनरेगा के तहत 50 हजार व वन विभाग के माध्यम से 50 हजार पेड लगाये जायेगे। वही इस अभियान के तहत बिहार राज्य मे डेढ करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। मौसम को बदलने के साथ बीमारी को दूर भगाने के लिए हर मनुष्य को जागरूक होना है,वे अपने अपने घर मे एक पौधा अवश्य लगायें, बिहार मे 33 प्रतिशत वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है, अभी तक मात्र 8 प्रतिशत ही वृक्ष लग पाया है। पेट दर्द की दवा है और मौसम के मिजाज को बदलने के लिए वृक्ष आवश्यक है। पर्यावरण को बचाने के लिए सरकार के साथ आमलोगो की आवश्यकता है। सरकार के माध्यम से अनेक प्रकार की कल्याणकारी योजनाएं चलायी जा रही है, जिसका लाभ आपलोग अवश्य लें, सात निश्चय योजना के तहत हर घर नलजल आदि योजना गांव तक पहुंच रही है। मनरेगा के तहत खेत मे पेंड लगाना, रखवाली करने बालो को पारिश्रमिक देना, 200 पेड़ लगाने पर एक चापाकल, गोशेड, मुर्गीपालन, सुअर पालन, वर्मी कम्पोस्ट, मत्सय पालन समेत अन्य प्रकार का व्यक्तिगत लाभ दिया जा रहा है। हर घर बिजली मिल रही है। साथ ही साथ उन्होने कहा अगामी 15 अगस्त के पहले नारदीगंज प्रखंड को ओडीएफ करें, इस प्रखंड के सभी पंचायत खुले से मुक्त हो गया है, केवल डोहरा पंचायत के केशौरिया गाव को खुले से मुक्त करना है। सभी अधिकारी व जनप्रतिनिधि के अलावे ग्रामीण लोगो को जागरूक कर उस गांव को ओडीएफ करें। क्योंकि खुले मे शौच करने से बीमारी फैलती है। इसमे सबके सहयोग की आवश्यकता है। साथ ही साथ शौचालय का उपयोग अवश्य करें। आप स्वच्छ रहेगे, तभी स्वस्थ्य रह पायेगें। डीएम कौशल कुमार ने कहा पेड़ पुत्र के समान है मनरेगा के तहत हर घर मे एक पौधा अवश्य लगाये, मनरेगा के तहत पेड लगाये जायेग जिले के सभी प्रखंडो मे कार्यशाला आयोजित होगी। वृक्ष लगाने से पर्यावरण संतुलित रहेगा। डीडीसी एमएस कैसर सुल्तान ने कहा सुखाड की स्थिति से निपटने के लिए सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम मे व क्षारोपन मे अपनी हिस्सेदारी दिखायें। जदयू जिलाध्यक्ष सह पूर्व विधायक प्रदीप माहतो ने कहा सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मे अपनी भागीदारी दिखाकर पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए वृक्ष लगाकर वृक्ष को हरा भरा रखें। मौके पर बीडीओ राजीव रजन, सीओ कुमार विमल प्रकाश, जिला उद्यान पदाधिकारी संजय कुमार, जदयू जिला उपाध्यक्ष विनय यादव, जेएसएस दिनेश कुमार, बीएओ मो0 नौशाद अहमद, बीपीएम देवेन्द्र कुमार मिश्र, मुखिया रीता देवी, मुखिया प्रमोद कुमार, जदयू प्रखंड अध्यक्ष सुनील कुमार कुशवाहा, अर्जुन यादव, वेणू यादव, समाजसेवी राजेश चौहान, सतीश चौहान, रामधीन चौहान, रधूनंदन यादव कमलेश कुशवाहा, कैलाश यादव, युवा जदयू प्रखंड अध्यक्ष प्रियरंजन, व्यापार मंडल अध्यक्ष विपिन कुमार, पैक्स अध्यक्ष सिद्धेश्वर यादव, समेत अन्य पदाधिकारी व जदयू कार्यकर्ता ने अपनी भागीदारी निभायी। मंच संचालन शिक्षक देवाश्रय कुमार चंचल ने किया।

को सम्बोधित करते हुए बीडीओ राजीव रंजन, सीओ कुमार विमल प्रकाश, डॉ0 अखिलेश कुमार ने कहा आपलोग प्रशिक्षण मे सफल होकर राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय स्तर पर होने बाले प्रतियोगिता मे सफल होकर राज्य व देश का नाम गौरवान्वित करें, जब भी किसी तरह की मदद की आवश्यकता महसुस करें, तो बेहिचक सम्पर्क करें, सहयोग मिलेगा। आपसब युवा है, समाज व देश का भविष्य है। आप अच्छे करे, यही हमसबो की शुभकामनाएं है। इस तरह का आयोजन होने से समाज को एक नई सीख मिलती है, लोगो को अच्छे करने का मौका मिलता है। इस दौरान उन्होने प्रशिक्षुओ के अलावे साइकिंलिग एसोसिएशन के संरक्षक रमेश चंन्द्र दूबे, मुख्य प्रशिक्षक अभय कुमार लूईस, सहायक प्रशिक्षक रजनीश कुमार, राजीव रंजन केशरी के अलावे श्याम कुमार से मिलकर कार्यक्रम की जानकारी लिया। मुख्य प्रशिक्षक लूईस ने बताया इस प्रशिक्षण मे सफल प्रतिभागियो को राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले प्रतियोगिया में भेजा जायेगा। इस प्रशिक्षण से जहां स्वास्थ्य की रक्षा होगी, वही पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता लाना मुख्य उदेश्य है। इस प्रशिक्षण में बिहार राज्य के 9 जिले 34 प्रतिभागियो ने हिस्सा लिया। यहां से प्रशिक्षण पाने के बाद सफल प्रतिभागियो को पुनः दूसरे जिले मे प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण मे आये प्रतिभागियो का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह 5 बजे विद्यालय परिसर से किया गया। जो बनगंगा से राजगीर उसके बाद बनगंगा के रास्ते से गेहलौर घाटी तक तक पहुंच कर प्रशिक्षण प्राप्त किये। तकरीबन 120 से 150 किलोमीटर की दूरी तय किया। पुनः शाम को सभी प्रतिभागी विद्यालय परिसर से घनियाबां पहाड़ी तक पहुंचकर 10 किलोमीटर की दूरी तक प्रशिक्षण पायें। उपस्थित अधिकारियों से मिलकर सभी प्रतिभागी गदगद दिखें। कहा जब आपसबो का सहयोग व प्यार मिलता रहेगा,तो हमलोग अपनी मंजिल अवश्य पा लेंगे। इस विद्यालय परिसर में सभी प्रतिभागियो को निःशुल्क, भोजन, आवास की व्यवस्थ्या की गयी है। प्रशिक्षण कार्यक्रम 31 जुलाई 2018 को विद्यालय परिसर मे समापन समारोह आयोजित किया गया। एसोसिएशन जिलाध्यक्ष अरविन्द मिश्र, जिला सचिव मंदीप सिंह, कोषाध्यक्ष अमित दूबे, संयोजक कृष्णदेव शम्मर्ण चक्रवर्ती व प्रशांत तिवारी, रौशन कुमार, टारजन कुमार, राहुल कुमार, शैलेश कुमार, सत्यम कुमार, सौरभ कुमार समेत अन्य गणमान्य लोगो ने एसोसिएशन के संरक्षक रमेश चंद्र दूबे, प्रदेश सचिव कौशल किशोर, प्रदेश कोषाध्यक्ष बैद्यनाथ प्रसाद को बुके व पुष्पमाला देकर सम्मानित कर भावभीनी विदाई दिया गया। इसके अलावे बिहार राज्य के नौ जिले के आये 34 प्रतिभागियो को हौसलाअफजाई करते हुए आर्शीवर्चन दिया गया। अपने सम्बोधन मे एसोसिएशन जिलाध्यक्ष अरविन्द मिश्रा ने कहा मगध की पावन धरती पर बिहार राज्य के नौ जिले से आये प्रतिभागियो को साइकिलिंग प्रशिक्षण में भाग लेकर प्रखंड के साथ जिले का मान सम्मान बढाया है, साइकिंलिग क्षमता व गुणवता के साथ प्रशिक्षण मे सफल प्रतिभागियो को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने बाले प्रतियोगिता मे भेजा जायेगा। आपसभी प्रशिक्षु बिहार का नाम गौरवान्वित करें। इस तरह की प्रशिक्षण से जहां स्वास्थ्य की रक्षा के साथ पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूक किया जा रहा है, इससे दूसेर लोगो के लिए भी प्रेरणा मिली है। बिहार साइकिंलिग एसोसिएशन के सौजन्य से नारदीगंज प्रखंड मे प्रशिक्षण केन्द्र खोला जायेगा, जहां बिहार के सभी जिले के प्रशिक्षुओ को प्रशिक्षण देकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले प्रतियोगिता में भेजा जायेगा। वही एसोसिएशन के प्रदेश सचिव कौशल किशोर ने कहा यहां साइकिंलिंग प्रशिक्षण के उपर्युक्त वातावरण के साथ अच्छी सड़के है, बिहार के युवाओ को साइकिंलिग के प्रेरित किया जायेगा और वे सफल होकर राज्य व देश का नाम रोशन करें। मुख्य प्रशिक्षक अमित कुमार लूईस ने प्रशिक्षुओ को उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा आप साइकिंलिंग के लिए निरंतर प्रयास जारी रखे, यहां से प्रशिक्षण पाने के बाद आप अपने घरो में भी निरंतर अभ्यास अवश्य करे और दूसेर को भी जागरूक अवश्य करें, ताकि लक्ष्य को पाकर सूबे का मान सम्मान को बढाये। मौके पर सहायक प्रशिक्षक रजनीश कुमार, राजीव रंजन केशरी, श्याम कुमार के अलावे विद्यालय के उपनिदेशक राहुलदेव शम्मर्ण चक्रवर्ती, मो0 जुबैर खान, व अन्य प्रतिभागी मौजूद रहे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान जन–गण–मन गीत गाकर किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे विद्यालय के निदेशक सह संयोजक कृष्णदेव शम्मर्ण चक्रवती व प्रशांत तिवारी की भूमिका काफी सराहनीय रहा। ●

मंत्री शैलेश कुमार के इशारे पर निर्दोष पर कराया गया झूठा मुकदमा

● विजय आनंद

सूबे के ग्रामीण कार्य मंत्री सह जमालपुर के क्षेत्रीय विधायक शैलेश कुमार के इशारे पर पत्रकार के.एम. राज पर आदर्श थाना जमालपुर में छिनतई एवं मारपीट का झूठा मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने मुकदमा बिना घटनास्थल का जांच किए आवेदन प्राप्ति के साथ प्राथमिकी दर्ज करने में अपनी विशेष दिलचस्पी दिखाई। पत्रकार पर मुकदमा दर्ज होने से जिले के विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों ने प्राथमिकी की निंदा की है। साथ ही पुलिस के कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाया है। दर्ज प्राथमिकी में गोपाल कृष्ण कुमार ने कहा है कि वह बलीपुर रोड होकर अपनी बच्ची को छोड़ने जा रहे थे कि रास्ते में पत्रकार की के. एम. राज गाड़ी रोक लिया और विज्ञापन की मांग की। विज्ञापन नहीं देने पर उन्होंने पैकेट में हाथ डालकर 1100 रूपये छीन लिया और गाली गलौज, मारपीट किया। प्राथमिकी से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मंत्री प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार किसी बड़ी साजिश के तहत पत्रकार को फंसाने उद्देश्य से प्राथमिकी दर्ज कराया है। सबसे अधिक चौकाने वाली बात यह है कि गोपाल कृष्ण कुमार द्वारा प्राथमिकी के लिए आवेदन आदर्श थाना जमालपुर को जैसे ही दिया गया वैसे ही मिनटों में प्राथमिकी बिना जांच किए थानाध्यक्ख सुनील कुमार ने कर ली। थानाध्यक्ष ने आवेदन में अंकित बातों की जांच करना मुनासिब तक नहीं समझा, जो पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हैं। मुंगेर एवं जमालपुर की फिजाओं में एक सवाल तैर रहा है कि आखिर इतने सुलझे हुए थानाध्यक्ष ने ऐसी गलती आखिर क्यों की? कहीं उन पर किसी का

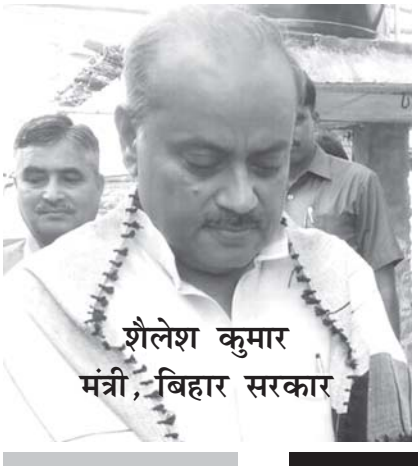

शैलेश कुमार
मंत्री, बिहार सरकार

राजनीतिक दबाव तो नहीं था? यह चर्चा मुंगेर एवं जमालपुर की फिजाओं में तैर रही है और लोग इन सवालों का जवाब अपने-अपने स्तर से तलाश रहे हैं। थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने बिना जाँच किए प्राथमिकी दर्ज करने में विशेष दिलचस्पी दिखाई, जबकि पुलिस मैनुअल के मुताबिक आवेदन में दिए गए तत्वों की जाँच जब तक नहीं हो जाती है, तब तक प्राथमिकी दर्ज नहीं किया जा सकता है। अपराध के लिए चर्चित मुंगेर में अक्सर देखा जाता है कि पुलिस संगीन मामलों की प्राथमिकी दर्ज करने में पुलिस तत्परता नहीं दिखा पाती है, लेकिन पत्रकार के विरूद्ध छिनतई जैसे छोटे मामले की प्राथमिकी दर्ज होने के 7 घंटे के बाद पीड़ित अमृत कुणाल राज को प्राथमिकी दर्ज होने की जानकारी हासिल हुई। इधर पत्रकार जब मामला दर्ज कराने थाना गए तो थानाध्यक्ष ने आवेदन लेने से साफ इंकार कर दिया।

हलीमपुर निवासी पत्रकार के.एम. राज जब अपनी ओर से गोपाल कृष्ण पर मारपीट लूट एवं जान से मारने संबंधित अपनी प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए आवेदन देने के लिए जमालपुर थाना गए तो वहाँ से थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने आवेदन पढ़ने के बाद आवेदन लेने से साफ इनकार कर दिया। सबसे अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि आखिर पुलिस ने पत्रकार के आवेदन को लेने से किन कारणों से इनकार किया। यह जांच का विषय है। ऐसे पुलिस मैनुअल कहता है कि कोई भी पीड़ित व्यक्ति अगर थाना में आवेदन देता है, तो पुलिस उसे लेकर अपने मामले की जांच करें और जांचोपरांत प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जानी चाहिए थी। लेकिन थानाध्यक्ष की कार्यप्रणाली सवालों के घेरे में है। जमालपुर पुलिस पर आरोप उछल रहे हैं कि मंत्री शैलेश कुमार के इशारे पर पत्रकार पर मामला दर्ज किया गया है। साथ ही पत्रकार द्वारा दिए गए आवेदन के आलोक में प्राथमिकी भी दर्ज नहीं करना मंत्री शैलेश कुमार के दबाव में ही हुआ है। ऐसे पीड़ित पत्रकार अमृत कुणाल राज सहित विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों केनेताओं के साथ-साथ आम लोगों का भी कहना है। वही एक ही दल के मंत्री शैलेश कुमार एवं पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा के की राजनतिक लड़ाई में निशाना बने

★ संगीन मामलों की प्राथमिकी दर्ज करने में पुलिस नहीं दिखाती है तत्परता,लेकिन छिनतई जैसी छोटे मामलों की प्राथमिकी बिना घटनास्थल का जाँच किए मिनटों में मंत्री के दबाव में दर्ज किया मामला।

★ प्राथमिकी दर्ज कराने वाले आखिर किस हैसियत से लिखते हैं, अपने को मंत्री प्रतिनिधि।

★ एक ही दल के मंत्री शैलेश कुमार एवं पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा की राजनीतिक लड़ाई में निशाना बने पत्रकार के.एम. राज।

★ नेशनल जनर्लिस्ट एसोसिएशन के प्रमंडलीय अध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष ने पुलिस कप्तान तथा डी.आई.जी. से कि मामले की निष्पक्ष जांच की मांग।

★ न्याय नहीं मिलने पर पत्रकार करेंगे शांतिपूर्ण आन्दोलन।

एस.आई. सुनील

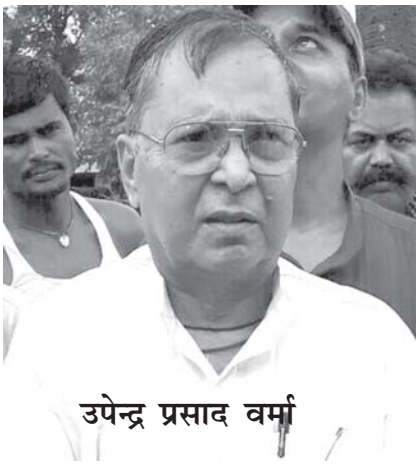
उपेन्द्र प्रसाद वर्मा

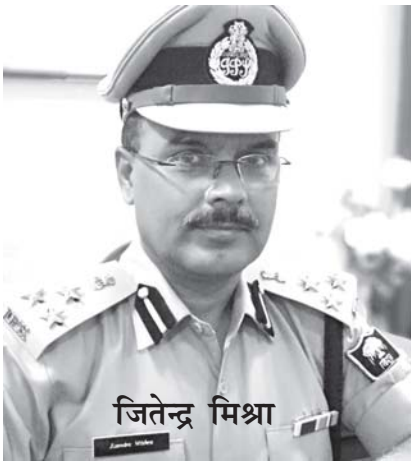
जितेन्द्र मिश्रा

पत्रकार। जमालपुर विधानसभा क्षेत्र में पिछले 6 महीने से मंत्री शैलेश कुमार एवं पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा के बीच जुबानी जंग छिड़ी हुई है। उपेन्द्र प्रसाद वर्मा की सक्रियता से जहाँ ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार की परेशानियाँ बढ़ गई है। वहीं खिसकते जनाधार से मंत्री शैलेश कुमार बौखलाए हुए भी है। बताते चलें कि शैलेश कुमार एवं उपेन्द्र प्रसाद वर्मा का ताल्लुक जनता दल यू से है। मंत्री शैलेश कुमार के विरूद्ध पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा ने खुले रूप से मोर्चा खोल दिया है। साथ ही जमालपुर की उपेक्षा सहित विकास कार्यों में भेदभाव को लेकर पूर्व मंत्री उपेन्द्र वर्मा लगातार जमालपुर विधानसभा क्षेत्र का दौरा कर कार्यकर्ताओं को अपने पक्ष में गोलबंद करने का कार्य कर रहे हैं। पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा की सक्रियता से संबंधित खबरें पत्रकार के द्वारा अक्सर प्रकाशित की जा रही थी। इसको लेकर मंत्री शैलेश कुमार पत्रकार अमृत कुणाल राज को टारगेट किए हुए थे। पीड़ित पत्रकार के.एम. राज ने बताया कि मंत्री के प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार सहित अन्य लोग अक्सर उन्हें धमकी दिया करते थे कि उपेन्द्र प्रसाद वर्मा की खबरें लिखना बंद करो। सिर्फ ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार की खबरें लिखो। नहीं तो अंजाम बुरा होगा। इधर पीड़ित पत्रकार ने पत्रकारिता धर्म का निर्वहन करते हुए ग्रामीण कार्य मंत्री एवं पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा की खबरें पूरी निष्पक्षता के साथ प्रकाशित करते रहे, जिसका परिणाम रहा कि सूबे के ग्रामीण कार्य मंत्री की बात नहीं मानने के कारण पत्रकार पर छिनतई मारपीट जैसे झूठे मुकदमें दर्ज कर भयभीत करने का प्रयास किया गया। पत्रकार पर दर्ज हुई प्राथमिकी राजनीतिक एवं पुलिस गठजोड़ का परिणाम बताया जा रहा है। जो विश्व योग नगरी में चर्चा का विषय बना हुआ है। मंत्री प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार की माँ है वार्ड नम्बर 20 की पार्षद सावित्री देवी, पत्नी बेला देवी, 201 केन्द्र आंगनबाड़ी सेविका पत्रकार द्वारा वार्ड में व्याप्त समस्या एवं आंगनबाड़ी केन्द्र में लूट से संबंधित खबरें किया करते थे, प्रकाशित अपने आप को मंत्री प्रतिनधि कहने वाले गोपाल कृष्ण कुमार की माता जमालपुर नगर परिषद की वार्ड 20 की पार्षद सावित्री देवी है तथा उनकी पत्नी बेला देवी आंगनबाड़ी केन्द्र की सेविका बेला आंगनबाड़ी केन्द्र की सेविका आदि से संबोधित खबर को निडरता के साथ पत्रकार के.एम. राज द्वारा वार्ड में व्याप्त सस्मस्या एवं आंगनबाड़ी एवं आंगनबाड़ी सहित लूट खसोट को लेकर अक्सर समाचार को प्रकाशित किया करते थे। इस वजह से भी मंत्री प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार पत्रकार पर खफा रहते थे। इधर पिछले 6 महीने से मंत्री शैलेश कुमार तथा पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा के बीच छिड़ी जुवानी जंग के कारण गोपाल कृष्ण कुमार अपने राजनीतिक गुरू से मिले मंत्र के तहत पत्रकार पर झूठा मुकदमा दर्ज करा लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ पर आघात पहुंचाने का काम किया। पत्रकार पर हुए झूठे मुकदमें के विरोधा में नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन ने एस.पी. एवं दिया जैसे कि मामले की निष्पक्ष जांच की मांग साथ ही न्याय नहीं मिलने की स्थिति में शांतिपूर्ण आन्दोलन की चेतावनी नेशनल जनर्लिस्ट एसोसिएशन के जिला महासचिव पत्रकार के.एम. राज पर ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार के प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार द्वारा छिनतई एवं मारपीट से संबंधित झूठा मुकदमा दर्ज कराए जाने की निष्पक्ष जाँच पुलिस नहीं करती है, तो सभी सब पत्रकार संगठन मिलकर संयुक्त रूप से शांतिपूर्ण आंदोलन किया जाएगा। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने कहा कि पुलिए एवं राजनीतिक लोग निष्पक्ष पत्रकारिता करने वालों को निशाना बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसकी शिकायत राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा डिप्टी सी.एम. सुशील कुमार मोदी से भी की जाएगी। इधर मंत्री का पक्ष जानने के लिए जब किया गया मोबाइल पर कॉल तो बजती रही पर मंत्री ने कॉल रिसिव नहीं किया। इधर पत्रकार राज पर जदयू नेता सह मंत्री प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण कुमार द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमें को लेकर ग्रामीण कार्य मंत्री शेलेश कुमार पर उछल रहे आरोप के बाबत जब उनके सरकारी मोबाईल पर कॉल किया गया तो, मोबाइल की घंटिया बजती रही। लेकिन मंत्री जी ने मोबाइल रिसीव नहीं किया,जिस कारण उनका पक्ष नहीं लिया जा सका। आरोप बेबुनियाद जदयू नेता गोपाल कृष्ण कुमार द्वारा पत्रकार पर दर्ज कराए गए प्राथमिकी के बाबत जमालपुर थानाध्यक्ष सुनील कुमार पर दछल रहे आरोप को लेकर जब उनसे बात की गई तो उन्होंने कहा कि लोगों का आरोप निराधार है। पुलिस निष्पक्ष रूप से कार्य कर रही है। इधर सरकार के मंत्री शैलेश कुमार अपने प्रतिनिधि गोपाल कृष्ण को बचाने के लिए अपने पावर का दुरूपयोग करते हुए पत्रकार पर झूठे मुकदमें दर्ज ही नहीं करवाया बल्कि उसे मीडिया से हटाने के लिए एक बड़ी साजिश कर रहे हैं, जिसकी निंदा शहर के तमाम बुद्धिजीवी, छात्र नेता मजदूर किसान नौजवान के अलावे पुलिस प्रशासन के अधिकारी भी दबी जुवान से कर रहे है। हालांकि इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए डी.आई.जी. जितेन्द्र झा ने कहा कि पुलिस इस मामले में निष्पक्ष तरीके से जाँच करेगी और किसी के दबाव में कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा, जिससे कि वर्दी की प्रतिष्ठा धूमिल हो सके जैसे पत्रकार के द्वारा दिए गए आवेदन पर भी कार्रवाई करते हुए प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया गया है।●

गोपाल कृष्ण कुमार

मैं आज भी भागलपुर हूँ...!!

● गौतम सुमन

हैल्लो! मैं भागलपुर बोल रहा हूँ, आपका अपना शहर भागलपुर। गंगा मैया के दक्षिणी किनारे पर तकरीबन पिछले तीन हजार साल से मेरा अस्तित्व कायम है। लिहाजा आप यह कह सकते हैं कि आपका शहर दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है। एक ऐसा शहर जिसके जलवे समय-सागर के थपेड़ों से वक्त बेवक्त बेरौनक जरूर हुए पर मिटे नहीं। महल्लों की रंगीनियाँ, शासकों की शौर्यगाथाएं और विद्वानों का तेज हमेशा मेरे हिस्से में रहा, पर मेरी असली पहचान हमेशा एक व्यवसायिक और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में रही।

वस्त्रों में सबसे अनुपम रेशम के उत्पादन के लिये मेरा नाम चांदो सौदागर के जमाने से पूरी दुनिया में फैला है और उसी के साथ फैली हैं विक्रमशीला विश्वविद्यालय की ख्याति, कर्ण की दानवीरता की कहानियाँ, जर्दालू आम और कतरनी चावल की खुशबू, जैन तीर्थंकर वासुपूज्य की ख्याति, महर्षि मेही का अध्यात्म और ऐसी ही सैंकड़ों चीजें। हजारों साल का बूढ़ा मैं भागलपुर आज अपनी कहानी लेकर आपके सामने हाजिर हूँ। पुण्य देश के राजा थे भगदत्त, जिन्होंने मुझे अपना नाम दिया। पहले मुझे भगदतपुर पुकारा जाता था, बाद में लोगों के लाड़-प्यार से बिगड़कर यह भागलपुर हो गया। पहले मेरा अस्तित्व एक उपनकर के रूप में था, जो अंगदेश की राजधानी चंपा से सटा था। समय का फेर देखिये अब चंपा ही उपनगर बनकर चंपानगर हो गयी है और मैं भागलपुर ही नगर का मुख्यकेन्द्र बन चुका हूँ। चंपा का नाम अंग राज चंप के नाम पर उनके पिता ने रखा था, पहले उस नगरी का नाम मालिनी था। फूल से दो नामों वाले उस शहर की भी क्या रौनक थी, जहाँ राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र अंग का राज्य चलता था, जिन्हें पृथ्वीपति की उपाधि मिली थी, उसी वंश में आगे चलकर चित्ररथ नामक न्यायप्रिय सम्राट हुए जिनके राज्य में लक्ष्मी और सरस्वती अपनी श्रेष्ठता का फैसला कराने पहुँची थी।

राजा रोमपाद जो अयोध्या के राजा दशरथ के समकालीन थे और उनका नाम भी दशरथ ही था। अयोध्या नरेश दशरथ की पुत्री शांता रोमपाद के ही महल में उनकी उतक पुत्री के रूप में रहती थीं, जिनका विवाह श्रृंगी ऋषि के साथ हुआ और उन्हीं ऋषि के द्वारा कराये गये अनुष्ठान से दशरथ को राम जैसे पुत्र मिले। राजा कर्ण की वीरता और दानशीलता की कहानी जगजाहिर है। वे इसी चंपा शहर में वास करते थे, उनका महल कर्णगढ़ कहलाता था। जहाँ आजकल पुलिस प्रशिक्षण अकादमी संचालित हो रही है। उनका विवाह भागदत की एक पुत्री से हुआ, जबकि दूसरी पुत्री का विवाह उनके मित्र दुर्योधन से हुआ था। फिर इस शहर पर जगत प्रसिद्ध चांदो सौदागर का राज हुआ, जिसकी बहू बिहुला ने अपने तप से अपने मृत पति और पाँच जेठों को फिर से जियाने में सफलता प्राप्त की और मनसा पूजा की शुरूआत की। अविश्वसनीय सी लगने वाली ये तमाम कहानियाँ पुराण के पन्नों में दर्ज है और यह भी कि कंबोडिया कभी भागलपुर का सांस्कृतिक उपनिवेश हुआ करता था और वहाँ का अंकोरवाट मंदिर वस्तुतः अंगरकोरवाट मंदिर है। हालांकि इस तथ्य से देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी सहमत नजर आते हैं और राष्ट्रकवि दिनकर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय में भी इस तथ्य का उल्लेख किया है।

बहरहाल इसके बाद की ऐतिहासिक कथा भी कम गौरवशाली नहीं है। खास तौर पर पाल राजाओं का जमाना। जब मेरे शहर के पड़ोस में एक गाँव अंतीचक में एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय खुला, जिसे विक्रमशीला महाविहार का नाम दिया गया। उस शिक्षण केन्द्र में दुनिया भर से छात्र आते थे। इसी विश्वविद्यालय का कमाल था कि मेरे इलाके से आर्यभट्ट और अतिश दीपंकर जैसे विद्वान पैदा हुए। आर्यभट्ट की कीर्ति तो दुनिया जानती ही है पर सबौर वासी अतिश दीपंकर का योगदान भी कम नहीं है, जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लामा संप्रदाय की शुरूआत की। बहरहाल काल के कपाल में चंपा, मालिनी, कर्णगढ़ तो समा ही गये और विक्रमशीला महाविहार भी जमींदोज हो गया और उसके साथ ही मिटने लगी यहाँ पैदा हुई तब साधना व सिद्ध और नाथ संप्रदाय की परंपरा। पहले अंग देश मगध का हिस्सा बना फिर बंगाल का। बंगाल से पाल और सेन वंश मिटे और तुर्क-अफगानों और मुगलों का शासन हुआ। फिर मैं अंग देश से राज्य और राज्य से क्षेत्र बनकर रह गया। सम्राट मिटे, राजा आये और राजा मिटे तो शासक और फिर महज जमींदार....। मगर इसके बावजूद इस क्षेत्र की महता कभी कम नहीं हुई। यह उसी दौर की बात है, जब शहर का केन्द्र चंपानगर और नाथनगर से हटकर भागलपुर में मेरे आगोश में सामने लगा था। पाल बंश के बाद सेन वंश के राजाओं ने बंगाल पर शासन करना शुरू किया, मगर उसका एक राजा लक्ष्मण सेन इतना कायत निकला कि वह मोहम्मद गोरी को आता देख गद्दी छोड़ भाग खड़ा हुआ। इस तरह बंग के अधीन अंग के इलाकों तुर्क-अफगानों और फिर मुगलों का आधिपत्य कायम हुआ। इसके बाद मेरे इलाकों में रौशन ख्याल और कला प्रेमी मुसलमानों की आबादी ने ठिकाना बनाना शुरू किया। मेरे इन बाशिंदों ने पूरे शहर में जगह-जगह इमारतें, मस्जिदें और मकबरे खड़े किये जो आज भी मेरी धरोहरों की श्रृंखला में चार चाँद लगाते हैं। उनकी हुनरमंदी इमारतों के कंगूरों से उतर कर रेश के डिजाइनों तक में आ पहुँची। इसकी जौहर का नमूना था कि लोग मुझे सिल्क सिटी या रेशम नगरी कह कर पुकारने लगे हैं। फिर शायरी के तरानों का क्या कहना कि बीड़ी बनाने वाला एक मजदूर कौस भी अपने शेरों से मीर और मोमिन को टक्कर देता रहा। वैसे तो मोहम्मद गोरी के आगमन से लेकर मीर कासिम के पतन तक इस शहर पर मुसलमानों की ही हुकूमत

उठा-पटक में मात खाने वाले कई शहजादे गुप्त रूप से भागलपुर में अपना ठिकाना बनाकर रहने लगे। शहर के लोग कई गुमनाम मकबरों के बारे में बताते हैं कि फलां मुहम्मद शाह का मकबरा है तो फला अहमद शाह का। इसके अलावा कई पीर-फकीरों ने भी मुझे अपना आशियाना बनाया, इसमें से कइयों के मजार आज भी कायम हैं

कई लोगों का यह भी मानना है कि मेरा नाम भागलपुर इसलिये पड़ा क्योंकि यहाँ दूसरे इलाकों से भागकर आये लोगों ने अपना ठिकाना बनाया है। यह भाग कर आये लोगों की नगरी है। इसलिए भागलपुर है। पता नहीं भागदत वाली कथा सही है या यह, मगर इस बात में सच्चाई जरूर है कि मेरे शहर के आगोश में कई दूर दराज के बाशिंदों ने पनाह ली है। चाहे वह सरयूपारी ब्राह्मण हों यो बंग भाषी या दरभंगा-मधुबनी के मैथिल या राजस्थान से पहुँचे माड़वाड़ी समुदाय के लोग। पता नहीं मेरी आबोहवा में क्या आकर्षण था कि इन सारे लोगों ने रहने के लिए मुझे ही चुना। मगर मेरे मिजाज को तय करने में इन लोगों का बड़ा योगदान है। खास तौर पर बंग भाषियों का जिन्होंने इस शहर के लोगों को कविता-कहानी लिखने और यात्रा-नाटक करने का चस्का लगाया। मेरे शहर में बसे मुल्ले आदमपुर की गलियों में मशहूर कथाकार को देवदास उपन्यास की कथा मिली तो टील्हा कोठी के एकांत में गीतांजलि की कड़ियों ने आकार लिया। यह उन्हीं लोगों की रौशन ख्याली का नतीजा था कि इस शहर की एक बेटी कादंबिनी गांगुली को ग्रेजुएट होने वाली देश की पहली महिला बनने का सौभाग्य तो हासिल हुआ ही वो देश की पहली महिला डॉक्टर भी बनी। अभिनेता अशोक कुमार और किशोर कुमार जैसे जमींदार खानदान के नवासे फिल्मी दुनिया के सतरंगी परदे पर अपना हुकूमत कायम करने में कामयाब रहे। प्रीतीश नदी ने साहित्य और मनोरंजन की दुनिया को कई पहचान दी। इसी आजाद ख्याली का नतीजा था कि यह शहर अंग्रेजी हुकूमत की खिलाफत में भी अगुआ साबित हुआ। पहाड़िया विद्रोही तिलकामांझी ने जब विद्रोह की लॉ सुलगाई थी, तब दुनिया अंग्रेजी जुल्म की हकीकत का आंकलन भी नहीं कर पाये थे। गाँधी जी के सत्याग्रह के मौके पर शहर में आंदोलनकारियों का हुजूम उमड़ता था। 1934 में जब मुंगेर में भीषण भूकंप आया और जबरदस्त तबाही मची तो इन्हीं सेनानियों ने बाना बदला और रिलीफ के काम में जुट गये। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कई जगह प्रदर्शन हुए और प्रदर्शनकारियों ने अंग्रेजी फौज की गोलियों का सामना बहादुरी के साथ किया। देश आजाद हुआ तो नेहरूजी प्रधानमंत्री बने। इसके बाद वे जब पहली बार भागलपुर आये तो लोगों ने सैंडिस कंपाउंड में चांदी की कुर्सी उन्हें बैठने के लिये दी। मगर उस जननायक ने चांदी की कुर्सी यह कहते हुए फेंक दी कि जनता जमीन पर और नेता सिंहासन पर यह नहीं चलेगा।

आजादी की लड़ाई में इस शहर ने जितनी कुर्बानियाँ दी आजादी के बाद उसका हासिल हमारे हिस्से में बहुत कम आया। शहर धीरे-धीरे ढहता रहा और लोगों में निराशा बढ़ती रही। उस निराशा का विस्फोट तब हुआ जब जेपी ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। एक बार फिर मैं व्यवस्था की तानाशाही के खिलाफ लड़ने वालों का केन्द्र बन गया। मेरे जेल में ही उस दौरान इमरजेंसी की खिलाफत करने वाले बंदियों को रखा गया था और जेल की चाहरदीवारी के अंदर से विरोध के स्वर फूटते रहे। कुछ ही सालों बाद शहर में ऐसी वारदातें हुई जो आज भी मेरे चरित्र पर बदनुमा दाग बनकर कायम है। अपराध नियंत्रण में नाकामयाब होकर पुलिस कर्मियों ने 33 युवकों की आँखों में तेजाब डाल दिया। खुद फैसला करने की इस पुलिसिया मनोवृति ने एक गलत काम के कारण पूरी दुनियां में मुझे चर्चा का केन्द्र बना दिया। दस साल बाद फिर पुलिसिया करतूत के कारण शहर की फिजा बिगड़ी और हजारों लोग साम्प्रदायिक हिंसा की बलि चढ़ गये। पहली घटना ने तो शहर के चरित्र का हनन किया था और दूसरी ने शहर की आबोहवा में जहर घोल दिया। तत्पश्चात् डी.एस.पी. मेहराकांड और कई हत्याकांड की लीपापोती ने मेरे यहाँ आतंक, भय और प्रशासनिक अकर्मण्यता को जन्म दे दिया, जिससे मुझे कारोबारी शहर के कारोबारी रिश्ते तक गड़बड़ाने लगे। खैर यह बुनकर-व्यवसायी का ही रिश्ता था कि शहर पुनः अमन-चैन की पटरी पर आ गया। उसके बाद से छिट-पुट घटना को छोड़ शहर का अमन-चैन बरकरार है। लोग जात-धर्म के बदले कारोबार की बातें करते हैं। सन् 2001 में बिक्रमशीला सेतु बना तो उत्तर बिहार के कई जिले मेरे संपर्क में आ गये। इसके बाद यहाँ के कारोबार ने तो जैसे उड़ान पकड़ लिया। डल चादर के लिये मशहूर यह शहर जो पहले डल स्वभाव का था, अब महानगरों की तेज रफ्तार जिंदगी से कदम मिलाने की कोशिश कर रहा हे। मरे उबड़-खाबड़ जमीन पर धड़ाधड़ अपार्टमेंट बन रहे हैं, शोरूम खुल रहे हैं, टूटी-फूटी सड़कें लक्जरी कारों से अटी रहती है, लड़के-लड़कियाँ बाहों में बाहें डाले ऐसे घूमते हैं जैसे कि हम दिल्ली-कोलकाता आ गये हों। रेस्तरां की सीटें फुल रहती है, बच्चे फटाफट अंग्रेजी बोलते हैं और जवान होते-होते मेरी फुटी किस्मत को कलपता छोड़कर बाहर पलायन कर जाते हैं, क्योंकि मेरे यहाँ इनके रोजी-रोटी के एक मात्र साधनाकेन्द्र स्पीन व सिल्क मील को भी एक साजिश के तहत बंद कर दिया गया है और उसे पुनः चालू करने की कोई सकारात्मक पहल भी नहीं हो रही है। मेरे यहाँ पर शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया को चौंकाने वाली तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय व कृषि विश्वविद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार व मनमानी ने शिक्षा माफिया को जन्म दिया, जिस कारण से मेरे युवा पुत्र-पुत्रियाँ भी मुझे छोड़कर अन्यत्र जाने पर विवश हो गये और वे चले गए, मैं देखता रहा। देश व समाज को अपाहिज बना रहे भ्रष्टाचार ने तो मेरे यहाँ सारे रिकार्ड ही तोड़ दिये हैं। सृजन महाघोटाला का विसर्जन कर कौओं को फंसाकर बाज को बचाने की सफल कोशिश ने इस बात की पुष्टि कर दिया है। इसके बावजूद शहर के शोर में मेरी मातृभाषा अंगिका की खनक कायम है। मेरी सभ्यता और संस्कृति आज कई क्षेत्र व भाषा की परिचायक बनी हुई है। मेरे यहाँ बिहुला विषहरी के बोल अब भी गूँजते हैं, गंगा घाटों पर अब भी स्नानार्थियों का मेला लगता है। कतरनी की खुशबू और जरदालू आम की गमक अब भी सैलानियों को मेरे पास खींच लाती है।

अपनी भाषा-साहित्य सभ्यता-संस्कृति और विरासत की बढ़ती लोकप्रियता के कारण साजिशन मैं राजनीतिक और प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार होता रहा हूँ। एक तरफ जहाँ मैं पानी-बिजली, आवास, शिक्षा-चिकित्सा, सड़क-यातायात, ट्रैफिक-महाजाम, रोजगार आदि ऐसी मूलभूत समस्याओं से त्रस्त होकर अपनी फूटी किस्मत पर आठ-आठ आँसू बहाता रहा हूँ। वही अपनी अस्मिता सृजन तो कोई चरणबद्ध आन्दोलन कर अपने पेट से जुड़े इस सवाल की खातिर समर्पण भाव से लगे हुए हैं। मेरी धरती पर आज भी साहित्यिक, सांस्कृतिक वे अध्यात्मिक त्रिवेणी बहती है। सुल्तानगंज का श्रावणी मेला, सन्त मेही दास का आश्रम, मांगनसाह पीर बाबा के मजार की आस्था, सुपर थर्मल पावर एन.टी.पी.सी. आदि आज भी एक मिशाल कायम किये हुआ है। मेरे यहाँ आवरब्रीज, रेल, मंडल कार्यालय, हवाई सेवा, एम्स, हाई कोर्ट के बेंच, बिक्रमशीला विश्वविद्यालय, जिला व अनुमंडल, यातायात, जाम-महाजाम, बदतर सड़कें और बिजली-पानी के त्राहिमाम आदि के मुद्दे पर कृत्सित राजनीति होती रही है, जिसके दम पर लोग सत्ता सुख के गलियारे तक आसानी से पहुँच जाते रहे हैं।

अपनी स्वाभिमानी, ऐतिहासिक व अविस्मरणीय कार्य कुशलता के कारण अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुझे बहलाने व फुसलाने की खातिर अपने महत्वाकांक्षी स्मार्ट सिटी योजना में मुझे भी शामिल कर लूट-खसोट व व्यापक हेराफेरी के लिए मेरे यहाँ भी द्वार खोल दिया है। इस योजना के नाम पर मुझे फिर से नोचा-भमोरा जा रहा है, पर मैं आज भी अपनी हाल-बदहाल पर अकड़ के साथ खड़ा हूँ और आज भी मैं आपका ही शहर बना हुआ हूँ। मैं वहीं भागलपुर हूँ, जो इतनी बदहाली के बाद भी पूरी दुनिया में अपनी हुनर का एक अलग पहचान स्थापित किए हुआ है और अपनी अस्मिता के समुचित सम्मान की खातिर आज भी सिसक-सिसक कर सरकार की वाट जोह रहा है। ●

(लेखक पूर्व पत्रकार सह केन्द्रीय अध्यक्ष, अंग उत्थानान्दोलन समिति, बिहार झारखंड हैं।)

सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह तक

● आशिष कुमारी कान्ता

पिछले दिनों जब पूरे बिहार में देशभर के स्वच्छाग्राही जुटे तो ऐसा दिखा कि बिहार फिर से ऐतिहासिक परिघटना का नेतृत्व करने को तैयार है। और हो भी क्यों नहीं इससे पूर्व अनेक अभूतपूर्व कारनामों की शुरुआत और नेतृत्व करने का सौभाग्य इसे प्राप्त रहा है। इस बार मौका था देश को खुले में शौचमुक्त कर देने का। यह सुखद संयोग ही था कि बापू के सिद्धान्तों को घर–घर तक पहुॅचानें और लोगों के दिलों–दिमाग में उतारने का काम राज्य सरकार द्वारा पहले से किया जा रहा था। राष्ट्रपिता की चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी समारोह के समापन अवसर पर बापू के स्वच्छ भारत के सपने का उद्घाटन का मंगल संयोग प्राप्त हुआ था। केन्द्र सरकार की स्वच्छ भारत मिशन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव इससे बेहतर और कुछ हो ही नहीं सकता था। सरकार की मंशा साफ है कि किसी भी महत्वपूर्ण अवसरों का (क्षेत्रानुसार, पर्व व त्योहार के मौके पर) भरपूर लाभ उठाया जाय। ताकि मिशन मोड में 2 अक्टूबर 2019 तक देश को खुले में शौच मुक्त घोषित कर सके।

ओडीएफ में देश के चार पिछड़े राज्यों के मुख्य सचिवों और कुछ जिलाधिकारियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने निर्देश दिया है कि अपने–अपने क्षेत्रों में समय, अधिकारी, अवसरों को विभाजित कर ओडीएफ के कार्य लक्ष्यों को युद्व स्तर पर पूर्ण करे एवं शौचालय विहीन समाज से देश को मुक्त कराये। प्रधानमंत्री ने बारी–बारी उन अधिकारियों से उनके क्षेत्रों का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू को समझा। उन चार राज्यों में इस दिशा में विभिन्न प्रकार की गतिविधियॉ चलाई गई। स्वच्छता रथ में लगे ऑडियो–वीडियों प्रणाली द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के मनोस्थिति को स्वच्छान्मुख बनाने का प्रयास किया गया। शौचालय निर्माण और उसका प्रयोग स्वच्छ भारत के संकल्पना का एक अभिन्न अंग है। स्वच्छ भारत अपने समेकित रूप में पर्यावरण संतुलन की ओर इशारा करती है। प्रदूषण के सभी स्वरूपों का निराकरण की ओर संकेत देती है। अकेले बिहार राज्य की बात करे तो कई चिकित्सा महाविद्यालय एवं नर्सिग होम में बायोमेडिकल वेस्ट का समुचित प्रबंधन नहीं है। इस संदर्भ में लगभग 1000 इकाईयों को नोटिस जारी किये गये है। पटना, मुजफ्फरपुर एवं भागलपुर में वेस्ट निपटारा केन्द्र स्थापित किये गए है। गया में एक और केन्द्र की स्थापना की जा रही है। वायु प्रदूषण के अनुश्रवण एवं निवारण हेतु पटना, मुजफ्फरपुर एवं गया में एक परिवेशीय वायु गुणवत्ता केन्द्र संचालित है। इसके अतिरिक्त पटना में चार एवं भागलपुर और दरभंगा में एक–एक केन्द्रों की स्थापना की जायेगी। विदित हो कि ई–वेस्ट प्रबंधन के तहत पुराने मोबाईल एवं बैट्री सहित विभिन्न इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रबंधन हेतु बिहार में कोई उपयुक्त व्यवस्था नहीं है।

स्वच्छता का सीधा अर्थ पर्यावरण स्वच्छता से लिया जा सकता है और पर्यावरण की शुद्धता विकास का मुखापेक्षी होता है। इसलिए सतत विकास या टिकाऊ विकास की अवधारणा सामने आयी है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाता है। पृथ्वी और पर्यावरण की सहन शक्ति की एक सीमा है। इसलिए सतत विकास उन सीमाओं के भीतर संसाधनों का उपयोग को संकेतित करती है। बापू के सत्याग्रह का शताब्दी समारोह के समापन का इससे बेहतर तरीका हो ही नहीं सकता है, जब देश भर के स्वच्छाग्राहियों जुटान चंपारण के उस सत्याग्रह स्थल पर हुआ जहॉ राष्ट्रपिता बापू ने सत्याग्रह की नीव रखी थी। 'सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह' की जिद माननीय प्रधानमंत्री की शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण की दिशा में दूरदर्शिता का परिचायक है। आज ओडीएफ की (खुले में शौच मुक्त) दिशा में पूरा देश लगा है। पर क्या हम ओडीएफ की व्यवहारिक पहलू को स्वीकार कर चुके है। आकड़े बताते है कि देश के 40 फीसदी हो चुके ओडीएफ प्रखंडों में आज भी खुले में शौच करने की प्रथा जारी है। जरूरत है व्यवहारिक परिवर्तन करने की और साथ ही साथ सामाजिक बहिष्कार और दंड की प्रक्रिया अपनाने की। ग्राम पंचायत और सरपंच इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शौचालय निर्माण महज प्रोत्साहन राशि के समानुपातिक बन कर रह गया है। आज अधिकतर प्रदेशों में शौचालय निर्माण, प्रोत्साहन राशि का बाट जोहती नजर आ रही है। कोशिश यह होनी चाहिए कि प्राथमिकता के आधार पर इसके निर्माण एवं प्रयोग को आदत में शुमार किया जाय। बापू की स्वच्छता आंदोलन एक समाजिक परिवर्तन की लड़ाई है। जिसे माननीय प्रधानमंत्री और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अगुवा की भूमिका निभा रहे है। स्वच्छ समाज के लिए वातावरण निर्माण सामूहिक प्रयास से ही संभव है। समाज में ऐसे कई उदाहरण पड़े हुए है, जिसने इस दिशा में एक मिशाल कायम किया है। किसी ने अपनी मवेशी बेचकर तो किसी ने मंगल सूत्र बेचकर भी शौचालय निर्माण कराया, जो इस आंदोलन को जनमानस तक पहुच को दर्शाता है। समाज में खुले में शौच प्रथा के पक्षधर को इससे प्रेरणा ली जानी चाहिए। आम लोगों में इस अभियान की लोकप्रियता और अनिवार्यता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है कि प्रोत्साहन राशि का समय पर भुगतान हो जाय। यह निश्चित तौर पर कैटेलिस्ट का कार्य करता है। भुगतान प्रक्रिया को सरल बनाते हुए अब सरकार ने 75 फीसदी वार्ड के ओडीएफ हो जाने पर ही राशि निर्गत करने का निर्णय लिया है। अभी भी दूर दराज प्रखंडों के गॉवों में यात्रा के क्रम में सड़क किनारे ओपेन डेफिकेसन का उदाहरण मिल जाता है। यद्यपि सरकार इसके लिए कटिबद्ध है। अपने कार्य योजना में स्वच्छाग्रहियों और स्वच्छता दूतों द्वारा ट्रीगरिंग प्रक्रिया अपनायी जाती है। जो व्यक्ति की मनोदिशा को झकझोर कर रख देता है और स्वच्छता की दिशा में व्यक्ति में व्यवहार परिवर्तन सहजता से हो जाता है। ट्रीगरिंग के तहत बनाई गई टीम–सदस्यों द्वारा सुबह शाम गॉव के ओपन डिफिकेसन क्षेत्रों का चयन कर विभिन्न गतिविधियों की माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाता है। टॉर्च, सीटी बजाना, ताली बजाना, गीत, नुक्कड़ आदि माध्यम को अपनाया जाता है। प्रोत्साहन के स्तर पर कई स्थानों पर वहॉ के जन प्रतिनिधियों एवं स्वच्छता की दिशा में अग्रणी कार्य करने वाले को सम्मानित भी किया जाता है। तरीका चाहे जो भी हो उद्देश्य स्पष्ट है कि देश को खुले में शौच से मुक्त कैसे किया जाय।

स्वच्छ भारत एक जन आंदोलन का एक रूप ले चुका है क्योंकि इसे अपार जन समर्थन मिला है। 'स्वच्छता ईश्वरत्व के निकट है' इस संदेश को जन–जन तक फैलाया जाना है। माननीय प्रधानमंत्री आकाशवाणी में प्रसारित होने वाली मन की बात कार्यक्रम में स्वच्छता के विभिन्न आयामों से लोगों को अवगत कराते रहे है। गॉधी जी का मानना था कि स्वच्छता ईश्वर भक्ति है। इसी संदेश को देश दुनिया तक पहुॅचाने के लिए सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह मुहिम की शुरुआत की गई है। अक्टूबर 2019 तक सभी प्रदेशों को ओडीएफ घोषित करने का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय स्तर पर पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय के सचिव परमेश्वरन अय्यर के अनुसार 31 मार्च तक 15 राज्य और 3 केन्द्रशासित प्रदेश ओडीएफ घोषित किये जा चुके है। आकड़ों पर गौर करे तो 2 अक्टूबर 2014 को देश जहॉ 38.7 फीसदी से शौचालय आछादित था तो अभी यह 80 फीसदी हो गया है। 55 फीसदी लोग तब खुले में शौच का प्रयोग करते थे अब यह घटकर 20 फीसदी रह गया है। महज तीन सालों में यह प्रगति देखने को मिला है। वो दिन दूर नहीं जब हम ओडीएफ की दिशा में जल्द ही या समय रहते शत–प्रतिशत कामयाबी हासिल कर लेंगे।●

जिले में समरसता के लिए बुने जा रहे हैं सामाजिक ताने-बाने

सवर्ण नेताओं ने महादलितों का किया सम्मान, फैलाई जागरूकता

● नवीन कुमार रौशन

इतिहास गवाह है कि चाहे पौराणिक वर्ण व्यवस्था हो या फिर जमिंदारी व बटाईदारी प्रथा, इन व्यवस्थाओं में लाखों खामियाँ होने के बावजूद कुछ न कुछ खुबियाँ तो थी ही। तभी तो शायद इन्हीं खुबियों के बदौलत हमारी पौराणिक सामाजिक समरसता की ताने-बाने इतनी मजबुत हुआ करती थी कि वर्तमान की तरह कभी भी वर्ग संघर्ष नहीं हुआ करता था। तब के समय में जिसे ब्रह्मणवादी व्यवस्था कहकर आज गालियाँ देते हैं, लोग उस व्यवस्था में हरेक वर्णों के लिए सम्मानजनक व्यवस्था की गई थी। ब्राह्मण जहाँ इस व्यवस्था के तहत पुजा-पाठ व धर्म प्रचार का ठेका ले रखा था वहीं दूसरे समाज के लोगों के सम्मान व जीवकोपार्जन के लिए भी व्यवस्था थी। जिसके लिए चाहे सवर्ण ब्राह्मण हो या क्षत्रिय ही क्यूं न हो दूसरे वर्णों का मनूहार किया करते थे। उनके सम्मान व जीवकोपार्जन हेतू ऐसी व्यवस्था थी, कि चाहे वह किसी वर्ण का हो संस्कार व संस्कृति की रक्षा के लिए उनकी मनूहार करना मजबूरी थी। शादी संस्कार हो या फिर जन्मोत्सव या श्राद्ध संस्कार ही क्यूं न हो। जाति विशेष की ढोल नाड़ काटने वाली दाई माँ का प्रथम स्तन पान, जोग की तेल मिट्टी के बर्तन, उस्तुरे की मुडन और मुखाग्नि के बगैर चाहे जन्म संस्कार हो या फिर विवाह संस्कार और अंतिम संस्कार ही क्यों न हो पूरा नहीं माना जाता था। इन संस्कारों में भाग लेने के लिए जहाँ वर्ण विशेष

महादलितों के विकास के लिए भाजपा है कृतसंकल्पित : डॉ. ठाकुर

पाँच दशकों तक देश पर राज करने वाली कांग्रेस और उसकी सहयोगी पाटियां लोगों के बीच यह भ्रम फैला रही है कि भाजपा आरक्षण विरोधी है। जबकि वास्तविकता यह है कि भाजपा ही एक मात्र ऐसी पार्टी है, जो दलितों एवं महादलितों के विकास के लिए कृत संकल्पित है। सत्ता में हमारी पार्टी भले ही आज आयी हो, लेकिन इस वर्ग के साथ हमारा आत्मिय सम्मान पुराना है। जब हम सत्ता से बाहर थे, तब भाजपा और इसके सहयोगी संगठने महादलित समाज के उत्थान के लिए कई प्रकार के प्रकल्प चलाया करते थे। और आज जब हमारी सरकारें है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी अनु. जाति के कल्याण के लिए कई योजनायें चला रखी है। हमारी सरकार की ये कोशिश है कि इस समाज के लोगों का अपना मकान हो। इसमें बिजली और शौचालय की भी व्यवस्था हो प्रधानमंत्री का यह सपना हो कि दलित वस्तियाँ भी स्वच्छ रहे। प्रधानमंत्री के इस सपने को पूरा करने के लिए आप इसमें सहयोग करें, आपके सहयोग के वगैर मोदी जी का यह सपना साकार नहीं हो सकता। राज्य की सरकार भी आपके विकास के लिए कोई कसर छोड़ना नहीं चाहती, नशा मुक्ति अभियान इसका प्रमाण है। स्वच्छता और नशा से होने वाले हानियों को आप समझ सकें इसके लिए जरूरी है कि आप अपने बच्चों को शिक्षित करें। शिक्षा के बगैर किसी भी समाज का स्थायी विकास असंभव है। समाज का हर तबका शिक्षित हो इसके लिए केन्द्र व राज्यों की सरकार बच्चों के लिए सरकारी विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा के साथ-साथ पोशाक, भोजन छात्रवृति सहित साईकिल की भी व्यवस्था की है। यही नहीं आर.टी.आई. के तहत गरीब परिवार के बच्चों को निजी विद्यालयों में पढ़ाई के समान अवसर प्राप्त कराये हैं अगर ये सारी व्यवस्थायें 50 वर्षों में पूर्व की सरकारें उपलब्ध करा देती तो आज आरक्षण की जरूरत ही नहीं होती। नीतिश व सुशील मोदी की अगुवाई में बनी संवेदनशील सरकार गरीबों के हर दर्द से वाकिफ है, तभी तो नशामुक्ति के बाद इस सरकार ने दहेजबंदी का फैसला लिया है। गरीब परिवारों के लिए दहेज जुटा पाना कितना मुश्किल है। इसे हमें बताने की जरूरत नहीं है।

के लोगों का मनुहार होता था वहीं उसके जीवकोपार्जन के साधन ढोल, चुल्हा, आदि की पुजाई की भी व्यवस्था थी।

समय बदलता गया वर्ण व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी, जमिंदारी प्रथा व बटाईदारी प्रथा का उदय हुआ। यह नकारा नहीं जा सकता कि जमिंदारी प्रथा या बटाईदारी प्रथा में जूल्म हुए हैं। लेकिन उस प्रथा के समय भी एक अच्छी बातें यह थी कि मालिक अपने बटाईदारों के परिवारों का चिंता किया करता था, उत्सवों में, त्योहारों में यह सुनिश्चित किया करता था कि पकवान के निवाले उसके यहाँ काम करने वाले घरों तक भी पहुँचे। बटाईदारों के घरों में होने वाले शादी-व्याहों की चिंता पूरे गांव समाज की चिंता हुआ करती थी। मालिक चिंतित हुआ करता था कि शादी ब्याह वाले उन घरों में कोई कमी तो नहीं। अन्न और वस्त्र की कमी को जहाँ मालिक पूरा किये करते थे, वहीं गाँव के छप्परों पर फैले कोहड़े व कदुयें सारी की सारी उस उत्सव वाले घरों में पहुँचा दिये जाते थे, भले ही छुआछुत के कारण उन घरों में बने मिठाईयों को मालिक हाथ भी नहीं लगाता हो। अपने बटाईदारों के होनहार बच्चों की शिक्षा-दीक्षा प्राप्ति की व्यवस्था भी मालिकों के जिम्मे हुआ करता था। दलित समाज के भगवान माने जाने वाले बाबा साहेब भिमराव अम्बेडकर खुद इसके उदाहरण हैं विद्यालयों व छात्रावासों तथा खेल के मैदानों में छुआ-छुत का सामना करने वाले बात अम्बेडकर की उच्च शिक्षा भी ऐसे ही राजाओं व महाराजाओं के बदोलत पूर्ण हुई थी। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने दलित समाज से आने वाले भीमराव जी को उच्च शिक्षा पूरी करने में भरपूर मदद की थी। गाँवों में चौपाल की व्यवस्था सामाजिक समरसता को सबल प्रदान किया करता था। चौपाल जहाँ पर समाज व वर्ग के लोग इक्कठा हुआ करते थे। जिसमें घर गाँव के हर एक घर की। सुख व दुख की चर्चा में हुआ करती थी। हाँ यह अलग बात है कि उस चौपाल में एक वर्ग जहाँ उच्च आसन पर विराजमान होता था वहीं दूसरा वर्ग के लिए नीच आसन की व्यवस्था थी। बावजूद उस ऊँचे बैठे आसन और नीचे आसनों पर बैठे लोगों के बीच जो आत्मियता हुआ करता था। वह वर्तमान में समकक्ष बैठे लोगों के बीच भी नहीं है।

राजनीति व राजनीतिज्ञों ने वोट के खातिर उन गांवों के सामाजिक और ऊँच नीच की ऐसी जहर घोली कि हर लोग एक दूसरे को मरने-मारने को तैयार है। पिछले दिनों भीमसेना द्वारा भारत बंद और उसके बाद सवर्णों द्वारा भारत बंद में

बेहतर पुलिसिंग कर रहे हैं गुप्तेश्वर पाण्डेय

बिहार के पुलिस महानिदेशक (सेन्यशुलिस) गुप्तेश्वर पाण्डेय इन दिनों बेहतर पुलिसिंग करने में लगे हैं। बिहार में नशा मुक्ति हेतू बने कानून में बिहार की पुलिस कार्यवायी तो कर रही रही है। अब समाज को इसके प्रति जागरूक करने का भी कार्य कर रही है। जो समाज की असली रूरत है। किसी भी कानून से पहले समाज में उसके प्रति जागरूकता अतिआवश्यक है। इसी के तहत बिहार सैन्य पुलिस के महानिदेशक पिछले दिनों मगध प्रमंडल के अरवल व जहानाबाद जिले में नशा मुक्ति के खिलाफ अलख जगाने पहुँचे। बुद्धिजीवी विचार मंच के बैनर तले अरवल के नगर भवन तथा जहानाबाद के स्वामी सहजानन्द संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रमों में पुलिस महानिदेशक गुप्तेश्वर पाण्डेय अपने तार्किक तथा दार्शनिक अंदाज में कहा कि नशा नाश की जड़ इस जड़ को हमें समाज से उखाड़ फेंकना है। उन्होंने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर के संतान है, बावजूद उनके स्वभाव व संस्कार में इतना भिन्नता क्यूँ? मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया को जटील बताते हुए गुप्तेश्वर पाण्डेय ने कहा कि व्यक्ति वह नहीं जो उपर-उपर से दिखता है। उसका रंग, रूप वेश-भुषा तो आवरण मात्र है, उसका अंत:करण यानि उसका मन, बुद्धि और उसका चित ही उसका असली रूप है। बिगड़ा मन ही व्यक्ति व समाज का असली शत्रु है। अत: जरूरी है कि अपने अंत: करणों पर अंकुश रखा जाये। क्योंकि अंकुश विहीन अंत:करण हमें नहीं बल्कि अंत:करणों पर हमारा नियंत्रण हो। और जिस दिन अंत:करणों पर आपका नियंत्रण हेगा उस दिन नशा जैसी नाश की जड़े खुद-ब-खुद समाप्त हो जायेगी। नशा मुक्ति की जहानाबाद की सभा में जिले के पुलिस कप्तान मनीष कुमार ने कहा कि इस अभियान की सफलता तभी सम्भव है, जब बुद्धिजीवी समाज इसे आत्मसात कर कानुन के भय के साथ लोगों में जनजागरण करना होगी तभी इस अभियान को मुकाम मिल सकेगा और अरवल में कार्यक्रम का संचालन जहानाबाद जिले के वरिष्ठ पत्रकार संतोष श्रीवास्तव ने किया, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्ष अरवल के जिलाधिकारी, सतीश कुमार सिंह ये पुलिस अधीक्षक उमाशंकर प्रसाद मुख्य अतिथि थे। इन जिला पदाधिकारी एवं आरक्षी अधीक्षक अरवल ने कहा कि शासन नशा जैसे बुराई से राज्य व समाज को बचाने के लिए प्रशासन हर स्तर पर प्रयासरत हैं।

हुए हिंसे इसके उदाहरण है। ऐसी परिस्थितियों में सवर्ण समाज के नेताओं के द्वारा महादिलतों की चिंता करना, उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए जागरूकता फैलाना, इस समाज के जागृत लोगों को सम्भावित करना और अपने समाज के लिए नशा जैसे कुरीतियों से लड़ने हेतु प्रेरित करना वास्तव में अपने आप में काबिले तारीफ है। एक तरफ राजनीतिक के लिए एक ओर जहाँ लोग एक दूसरे समाज के खुन के प्यासे बने है, वहीं भाजपा नेत्री इंदू कश्यप के नेतृत्व में फ्रेण्डस ऑफ बी.जे.पी. के बैनर तले जहानाबाद जिले में बन रहे सामाजिक समरसता के मजबूत ताने-बाने की जितनी भी सराहना की जाये कम होगा। वोट की राजनीति ने समाज को इस कदर तोड़ा है कि पूर्व की तरह इसे जोड़ पाना तो नामूमकिन है, बावजूद हिन्दू सरकार व संस्कृति में अभी भी एक दूसरे के लिए पूरक सवर्णों व दलित समाज जिस दिन अपनत्व के साथ, एक साथ बैठने लगेगा, उस दिन आपसी कटुता निश्चित रूप से कम होगी। महादलितों के लिए आयोजित फ्रेण्डस ऑफ बी.जे.पी. द्वारा नशा मुक्ति जागरूकता अभियान कार्यक्रम की खासियत यह रही कि इसके उद्घाटनकर्त्ता व आयोजक जहाँ सवर्ण समाज के लोग थे वहीं इसके मुख्य अतिथि पिछड़े समाज के। इस कार्यक्रम में जहानाबाद विधानसभा के लगभग एक दर्जन से भी अधिक गाँवों के लोगों ने भाग लिया। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि भाजपा के राज्यसभा सांसद डा. सी.पी. ठाकुर व विधान पार्षद सुरजनंदन मेहता ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इस कार्यक्रम में 250 महादलित परिवारों के बीच तमिलनाडू कैडर के अपर पुलिस महानिदेशक करूणा सागर की मदद् से वस्त्र वितरित किया गया, वहीं सरकार के नशामुक्ति अभियान के फायदे गिना कर इस समाज को जागरूक करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भाजपा के बिहार प्रदेश के जानी-मानी नेत्री इंदू कश्यप ने कहा कि शिक्षा के बगैर किसी भी समाज या परिवार का विकास असंभव है, इसलिए कमाये गये पैसों को नशा में बर्बाद करने के बजायें अपने बच्चों को शिक्षित करने में लगाये। श्रीमति कश्यप ने कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को मातृशक्ति बताते हुए कहा कि आप अपने बच्चियों को भी पढ़ायें क्यूँ आपकी जब एक लड़की पढ़ेगी तो दो परिवारों का विकास होगा, जिससे समाज का विकास जल्द संभव हो सकेगा। भाजपा विधान पार्षद सुरजनंदन मेहता ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप भाजपा पर भरोसा रखें। क्यूँ कि एन.डी.ए. की सरकार ही अनुसूचित जातियों व पिछड़ों का विकास कर सकती है। अपनी सरकार की उपलब्धियों तथा विरोधियों की नाकामियों तथा विरोधियों की नाकामियों को गिनाते हुए श्री मेहता ने कहा कि हमारी सरकार आपके विकास के लिए कई नीतियाँ बनाई है। जिसका लाभ आपको तब तक नहीं दिखेगा जब तक आप नशे के गिरफ्त में है, इसलिए आइए हमसब नशा न ही करेंगे और न ही करने देंगे इसका शपथ लेकर नशे के विरूद्ध सरकार के छिड़े अभियान में सहभागी बने।●

जिले भर में आयोजित किये गये कई कार्यक्रम

जहानाबाद जिले ने मनाया 32वाँ स्थापना दिवस

● **नवीन कुमार रौशन**

जहानाबाद जिले ने अपना 32वाँ स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसके लिए बनाये गये आयोजन समिति के देख-रेख में पूरे जिले के विभिन्न सरकारी एवं निजि संस्थाओं ने सप्ताह भर कई कार्यक्रम सम्पन्न हुये। सप्ताह भर चले कार्यक्रमों का समापन जिला मुख्यालय स्थित स्थानीय नगर भवन में हुआ। जिसका उद्घाटन द्वीप प्रज्जवजित कर जिले के प्रभारी मंत्री जय कुमार सिंह ने किया। मुख्य समारोह का उद्घाटन करते हुये उद्योग तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री श्री सिंह ने जिलेवासियों को स्थापना दिवस की बधाई दी तथा कहा कि युवा हो चुके इस जिले ने अपने इन 32 वर्षो में कई उत्थान व पतन देखे हैं। इन वर्षो में इसे बनाने तथा बिगाड़ने में कई लोगों ने भूमिकायें निभायी है। बावजूद यहाँ के वासियों के प्रयास, जन-प्रतिनिधियों के नेतृतव तथा पदाधिकारियों द्वारा जमीन पर उतारे गये कल्याणकारी योजनाओं की वजह से यह जिला अपने पुराने गौरव को प्राप्त करने हेतु अग्रसर है। इस जिले के विकास में राज्य सरकार भी कोई कसर नहीं

छोड़ रही है। हमारी सरकार के सात निश्चय कार्यक्रमों का क्रियान्वयन भी इस जिले में तीव्र गति से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पक्की गली-नली, घर-घर बिजली, शौचालयों जैसे बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ, इंजिनियरिंग, पॉलिटेक्निक, जी.एन.एम., स्कूल, सहित जीवन स्तर को ऊंचा उठाने वाले कई संस्थानें स्थापित की जा रही है। जिले के जिलाधिकारी के नेतृत्व में जहाँ विकास की गति को गति मिला वहीं आरक्षी अधीक्षक ने जिले में अमन-चैन स्थापित

कर विकास के पहिये के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ है। नीतिश जी के नेतृत्व में अनुसूचित जाति तथा पिछड़े वर्ग के कल्याण हेतू कई कल्याणकारी योजनायें चलाई जा रही है।

इस अवसर पर सदर विधायक कृष्ण मोहन उर्फ सुदय यादव ने अपने पिता पूर्व मंत्री मुन्द्रिका सिंह यादव को याद करते हुए कहा कि जिले के विकास में अपने नेतृत्व के बदौलत अहम भूमिका निभयी है। जहानाबाद का चहुमुखी विकास हो, इस हेतु मैं हमेशा प्रयासरत रहूँगा। मखदुमपुर के विधायक सुबेदार दास ने कहा कि अब जहानाबाद अपनी बदनामियों को धो चुका है, स्थिति काफी सुखद है, वेमिशाल परिवर्तन हुए हैं, अब जहानाबाद बिहार में शांतिप्रिय जिला के रूप में सुमार हो रहा है।

आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए जिला प्रशासन के मुखिया जिले के जिलाधिकारी आलोक रंजन घोष ने कहा कि पूर्व के झंझावतों से जहानाबाद निकल चुका है। अब अपने विकास व स्वनिर्माण की और यह जिला अग्रसर है। जिसमें जनप्रतिनिधियों के अलावा प्रशासन के अलावे यहाँ के युवा भी महती भूमिका निभा रहे हैं। यहाँ के युवाओं का सहयोग अगर यूं ही मिलता रहा तो जिला प्रशासन इसके स्वर्णिम गौरव को अविलम्ब प्राप्त करा इसे अग्रगणी जिले में लाकर खड़ा कर देगी। आरक्षी अधिक्षक मनीष ने कहा कि जिले में पुलिस प्रशासन व आमजन के तत्परता के कारण विधि व्यवस्था बेहतर है। इसे और बेहतर असमाजिक तत्वों एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस प्रशासन कोई कसर नहीं छोड़ रही है।

इसके अलावे स्थापना दिवस समारोह को जिला परिषद् अध्यक्षा आभा रानी, भाजपा

जिला अध्यक्ष पुनम सिन्हा, जदयू जिलाध्यक्ष राजीव नयन, जदयू के पूर्व जिलाध्यक्ष जय प्रकाश चन्द्रवंशी आदि ने सम्बोधित करते हुए जिलेवासियों को सृजन दिवस की बधाईयाँ दी। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के बच्चों ने आकर्षक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लोगों को आनंदित कर दिया। इस कार्यक्रम में चले कार्य पूरे जिले में सप्ताह भर चले कार्यक्रमों के विजेताओं को जहाँ अतिथियों व जिलाधिकारी व आरक्षी अधीक्षक ने सम्मानित किया वही महादलित परिवारों के बीच वास भूमि का पर्चा वितरित किया गया। साथ ही 188 स्वयं सहायता समूहों को बैंकों के माध्यम से 2 करोड़ 82 लाख का वित संपोषण किया गया। वहीं बिहार स्टेट क्रेडिट कार्ड योजना के तहत छात्रों के बीच क्रेडिट कार्ड का भी वितरण किया गया। आगत अतिथियों ने जिला प्रशासन के वरीय पदाधिकारियों के साथ, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक आधार पर लगाये गये विभिन्न संस्थानों के स्टॉलों का भी निरीक्षण किया। इस कार्यक्रम में एक स्मारिका के मुख्य पृष्ठ का भी विमोचन हुआ।

उपविकास आयुक्त रामस्वरूप प्रसाद, जिला प्रबंधक, राज्य खाद्य निगम राजेन्द्र प्रसाद अनुमंडल आरक्षी पदाधिकारी, प्रशांत भूषण, ए. एस.पी. पंकज कुमार, के अलावे जिले के कई गणमान्य लोगों ने शिरकत किया। कार्यक्रम के अंत में अनुमंडल पदाधिकारी परितोष कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं कार्यक्रम का संचालन जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी शम्भू नाथ झा ने किया। ●

चाणक्या नेशनल लॉ युनिवर्सिटी में लिगल ऐड क्लीनिक का शुभारंभ

बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा नालसा के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को बिहार राज्य में प्रचारित एवं प्रसारित कर रही है। बालसा द्वारा टेली लॉ का शुभारंभ भी गत् वर्ष किया गया था, उसी कड़ी में दिनांक 06/08/2018 को नेशनल लिगल सर्विसेज ऑथोरिटी एक्ट 1987 के प्रोविजन के आधार पर चाणक्या नेशनल लॉ युनिवर्सिटी में लिगल ऐड क्लीनिक की शुरूआत की गई है। इस लिगल ऐड क्लीनिक का उद्घाटन विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर पूर्व न्यायाधिश श्रीमती मृदुला मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार मनोरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, बालसा के सदस्य सचिव सुनिल दत्त मिश्रा, संयुक्त सचिव आर.एन.एस. पाण्डेय, विश्वविद्यालय के फैकेल्टी एवं क्लीनिक के छात्र सदस्य, इसके कॉडीनेटर शिवम तथा व्यवस्थापक फादर पीटर, अधिवक्ता महराजा अविनाश कुमार, इत्यादि उपस्थित थें। इस लिगल सर्विस क्लीनिक के पैनल अधिवक्ता शिवानंद गिरि तथा पीएलभी दिनेश कुमार श्रीवास्तव को बनाया गया है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार मनोरंजन प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया कि यह लिगल सर्विस क्लीनिक लिगल अवर्नेस कैम्प के अलावे कई अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करेगा एवं जरूरतमंदों को मुफ्त में लिगल सलाह भी देगा। यह लिगल सर्विस क्लीनिक सप्ताह में बुधवार एवं शुक्रवार को दिन में 3 से 5 बजे तक खुला रहेगा। इस अवसर पर बालसा के सदस्य सचिव सुनिल दत्त मिश्र ने आगे भविष्य में और भी कार्यक्रम की शुरूआत करने की बात बतलायी। **प्रस्तुति :- अमित कुमार**

शिक्षा और पर्यावरण के प्रति गंभीर पालीगंज डीएसपी

● विकास कुमार

मि थलेश कुमार के जाने के बाद वर्तमान डी0 एस0 पी0 मनोज कुमार पांडेय पालीगंज के 14वें डी0एस0पी0 के रूप में पदभार ग्रहन किये है। इनहो ने अपना योगदान 31-08-2017 को पालीगंज में दिया है। ये बिहार लोक सेवा आयोग 52वी से 55वी तथा 2013 से 2014 बैच के है। मनोज कुमार पांडे का कहना है कि जब से मै यहॉ योगदान दिया हूँ तब से ये प्रयास किये है कि जनता से जुड़ कर अपराध को नियंत्रन किया जाये। तथा जनता के समस्याओं को दुर किया जा सके। अभी तक जो भी मुख्य-मुख्य काड हुए है। वे ये है कि यहॉ के तीन बड़े-बड़े बिजनेश मैन है। उनको धमकी दिया गया तथा उन से रंगदारी की मॉग किया गया था। पैसा नही देने पर हत्या की पलानींग किया गया था। ये बहुत बड़ा मामला था। सलेश पटेल जिनका एस0डी0 पब्लीक स्कूल तथा पेट्रोल पम्प है वही जेनरल सिंह स्कूल संचालक तथा तिसरा बस डिपो के संचालक है इन तिनो कि अपराधियो ने पूरी रेकी की गई थी। और अपराधीयों ने हत्या कि पुरी पलानींग किया था। मनोज कुमार पांडे का कहना है कि हमलोगों ने केश को पुरी फौलो कर रहे थे तथा ऐन वक्त पर हमलोगों ने पॉच अपराधीयो को पकड़ा और उन्हें जेल भेजा। और हमलोगों ने एक बड़े कॉड होने से बचाया। इस तरह से हमलोगों ने कई काम किये है। कुछ दिन पहले इनोभा गांड़ी लूटाई थी जिसे 48 घंटे के अंदर हमलोगों ने बरामद किया। और अपराधीयो को पकड़ा उसमें 3 अपराधी पकड़े गये है। मनोज कुमार पांडे का

कहना है कि पुलिस का अपना काम है अपराध को रोकना, तथा अपराध घटीत न हो इसके लिए निर्वाक उपाय करना पर इसके अलाबा हमने एक और प्रयास किया है पालीगंज अनुमण्डल में ये कि जनता से जुड़ कर के शिक्षा, पर्यवरण को अमलीजामा पहनाना, जैसे मैने यहॉ ज्वाईन किया था तो यहॉ के आस-पास के ऐरीया में, वहॉ हमने देखा की शराब बहुत बड़ी समस्या थी। लोग शराब बनाते थे। तो हमने सम्पर्क किया उनलोगो से और मैने कहा की आप शराब बनाना छोड़ीये और जो आपके बच्चे है उनको भेजीये हमलोग पढ़ायेंगे। पहले तो एक महीने तक दो,चार बच्चे ही आये और आज हमारे पास 120 बच्चे रोज आते है और मै उनको आवास पर पढ़ाता हूँ। जो 120 बच्चे पढ़ने आते है उनको कॉपी, किताब, पेन, पेन्सील, रब्बर, कट्टर की व्यवस्था हमलोग करते है। मै खुद उन्हे पढ़ाने में सामिल रहता हूँ। जब मै सामिल नही हो पाता हूँ। या बाहरी कार्यो में व्यस्त रहता हूँ तो मेरे दो जवान है वे पढ़ाते है। यहॉ सिविल समाज के लोग आगे आये है वे भी इस कार्य को सराहा है। वे भी आगे आये है वे भी हेल्प कर रहे है। उनसे मैने बस यही कहा है कि आप पढ़ाने में अपनी भुमिका निर्वाह करे और मुझे कोई मदद नही चाहिये। बाकी सारी खर्च हमारा रहेगे। कॉपी किताब, कलम इत्यादी। आप सिर्फ पढ़ाने में अपना समय दिजीऐ। यहॉ पठन-पाठन की सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध कराये जाते है उनका कहना है कि हमलोगो ने जो स्कूल खोला उसका बड़ा असर रहा है। जिससे लोगो ने शराब बनाना बंद किया और दूसरा प्रयास मैने किया था कि अनुमण्डल में कंक्रिट वाला क्षेत्र था तथा यहाँ आने के साथ मैने हरा-भरा करने का प्लान किया और यहाँ हमलोगो ने कंक्रिट को हटा कर के, बालू को हटा करके अपने जवानों के सहयोग से हमलोगो ने एक पार्क का निर्माण किया है। इस पार्क के खासियत यह है कि पूरा पार्क मेरे और मेरे जवानो के सहयोग से बनाया गया है। किसी श्रमिक कि सहायता नहीं ली गई है और मेरा प्रयास है कि इस पार्क को और बड़ा करते हुए एक और सामने वाले एरिया में बनायेंगें। मेरा सोच है कि शिक्षा के क्षेत्र, प्रयार्वण का क्षेत्र हो या स्वास्थ का क्षेत्र हो, इस तरह से समाज से जुड़ कर काम करेंगे। पालीगंज के जनता को ढ़ेरों उम्मीद हैं। ऐसा प्रतीत होता हैं कि दिल के साफ मनोज कुमार पांडेय पालीगंज को अपराध नियंत्रण के साथ जनता की बुनियादी समस्याओं को गंभीरता से लेंते है। मनोज कुमार पांडेय कानून का पालन करने के मामले में सख्त हैं। डी०एस०पी० मनोज कुमार पांडेय के लिए यहाँ चुनौती कम नहीं है, लेकिन यह पूरा करेंगे, ऐसा विश्वास यहां की जनता को है।●

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
देशराज सिंह, मुखिया
ग्रा०-ललूआडिह,
पं०-पांकड़, हरनौत, नालंदा

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
मोनू पासवान, सरपंच
ग्रा०-बेलछी, पं०-बेलछी,
चण्डी, नालंदा

युवा वर्ग को राजनीति में आना चाहिए : अजेन्द्र शर्मा

अजेन्द्र शर्मा का कहना है कि पढ़े-लिखे युवाओ को राजनिति में आना चाहिऐ, तथा जो पढ़े-लिखे युवा है और बेरोजगार है उन्हे बेरोजगारी भता मिलना चाहिये साथ ही साथ युवा वर्ग आयोग का गठन हो। मेरा उददेश्य केवल यही होना चाहिये समाज कल्यान, हमारे समाज का किस तरह उन्नती हो तथा गॉव का विकास सबसे पहले जरूरी है। तथा क्या-क्या कमी है उसे कैसे दुर करे उसका प्रयास करना चाहिये। और मेरा प्रयास रहता है कि कैसे गॉव तथा गरीबो का विकास हो। ये युक्त बाते अजेन्द्र शर्मा ने केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के संवददाता **विकाश कुमार** के साक्षात्कार में कही। विशेष बातचीत के प्रमुख अंश:-

★ आप का पुरा नाम।

अजेन्द्र शर्मा

★ केवल सच पत्रीका में समय देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपको भी धन्यवाद।

★ आप कहॉ के रहने वाले है?

मै बिहार के जहानाबाद जिला के सेन्धवॉ गॉव का रहने वाला हूँ।

★ आप कि शिक्षा दिक्षा कहॉ तक हुई है?

मै स्नातक किया हूँ पटना मगध यूनिवर्सिटी से।

★ आप अपनी परिवारिक पृष्टभूमि के बारे में बताये।

हम दो भाई है और मेरे बच्पन में ही पिताजी का देहान्त हो गया था। मेरी माँ स्टेट बैंक जहानाबाद में थी। हम दो भाई है एक भाई पुलिस डिपार्टमेंट में है और हम राजनिति में है।

★ आप राजनिति में कब आये?

राजनिति का शौख मुझे बच्पन से था परन्तु भारतीय जनता पार्टी में 2000 से एक्टीभ हुऐ है।

★ क्या आपका परिवार पूर्व से राजनिति से ताल्लुक रखता था?

नही, मेरे परिवार में दुर-दुर तक राजनिति से कोई ताल्लुक नही रखते है।

★ राजनिति जिवन में आने का मुख्य कारण क्या रहा आपका?

राजनिति में आने का मुख्य उददेश्य यह रहा कि जनता का जो अकांक्षा है राजनेता से उसे कैसे पुरा कर सके। कभी-कभी हम देखते है कि गॉव-घर के गरीब बच्चे है उन्हे राजनिति का लाभ मिलना चाहिए व उन्हे नही मिलता है। मै चहता हूँ की हम उनलोगों को मदद कर सके। मेरा राजनिति में आने का मुख्य उददेश्य यही है।

★ जहानाबाद उपचुनाव 2018 में एनडीए का हार का मुख्य कारण क्या रहा?

ये चुनाव में हार का कारण, कही न कही जो एनडीए का गठबंधन टुटा था उसके बाद जब ये दोनो जुड़ा तो जदयू और भाजपा का कम्बीनेश्न बैठ नही पाया। जिससे दोनो वोटर मिल नही पाये। मेरा मानना हे कि हमलोगो की फिलडींग बढ़ीया से नही हो पाया। जिसके कारण 2018 का जहानाबाद उपचुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

★ आने वाला लोकसभा चुनाव 2019 के बारे में क्या कहना है। तथा आपकी इसमें क्या भुमिका होगा?

पिछले लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी के लहर पर चुनाव जिते थे। इस बार उनके काम के आधार पर चुनाव जितेंगें। मोदीजी ने 4 साल में जो काम किये है, उसको जनता के बिच जा रहे है तथा बता रहे है कि पहले कॉग्रोस के पास जो सता रहा और मेरा 4 साल का कार्य, जो अच्छा है उसे पर जनता निर्णय कर ले।

★ भ्रष्टाचार पर आप क्या कहेंगें?

जब से नरेन्द्र मोदी आये है तब से भारतीय राजनिति के शब्दकोश से भ्रष्टाचार शब्द समाप्त हो गया है। ये सबसे बड़ी उपलब्धी है भारत सरकार की।

★ वर्तमान सरकार की कार्यपद्यति पर आपकी क्या राय है?

वर्तमान सरकार कार्य कर रही है इसमें कोई शक नही। और भाजपा जदयू मिल कर अच्छा काम कर रही है। बिच में दोनो अलग-अलग था जिसका दूस परिणाम रहा लेकिन धिरे-धिरे दोनो मिल कर काम ठिक ढ़गं से चल रहा है। कुछ दिन में धीरे-धीरे दिखाई देने भी लगा है कि भाजपा जदयू डबल ईन्जन का क्या फायदा है।

★ भविष्य में आपकी क्या योजना है?

राजनिति में है तो विधान सभा लड़ने कि इच्छा है। अभी मै उस लायक नही हूँ कि हम आगे सोचे। मेरा प्रयास यही है कि विधान सभा के टिक्ट मुझे मिले आगे पार्टी की निर्णय। पर मै विधान सभा के लिए प्रयास रत हूँ।

★ आज कि शिक्षा व्यवस्था पर आपका क्या कहना है?

ऐसे तो शिक्षा व्यवस्था ठिक है। जो मार्केट में मैसेज आ रहा है कि शिक्षा में गड़बड़ी है। और जिस आधार पर आप मुझ से पुछ रहे है। इसमें सरकार की कोई कमी नही है। जो तुरूटी है उसे सरकार दुर करने में लगी हुई है। जो 2 से 4 प्रतिशत कही-कही कमी है उसे सरकार पकड़ने में लगी हुई है। अगर सरकार ऐक्टीभ नही रहता शिक्षा में तो जो गलती हो रहा था व पकड़ में नही आता। और आज जो परिणाम आ रहे है उसी से आप समझ सकते है कि हमलोग शिक्षा में काम कर रहे है यदी काम नही करते तो जो गलती हो रही है व चलते जाता लेकिन कही न कही हमलोग इसमें सतर्कता वरत रहे है, और हमलोग ठिक ढ़गं से लायेगें। इसी का

परिणाम है जो आपके सामने है।

★ आप अपनी उपलब्धीयों के बारे में बताये?

जाड़े के दिनो में गरीबों में कम्बल बाटते है, किसी की बेटी की शादी हो उसमें सहयोग करते है। किसी कि बिमारी हो तो हर संभव मदद करते है। अपने क्षेत्र का आपसी बिवाद भी मुल-भुत समस्या रहा है। कई लोगों को केश-मुक्दमा में तथा सुलह-समझोता कराने का काम भी किया है। और जो पार्टी का निर्देश होता है हम पार्टी के आधार पर काम करते है। भारत सरकार तथा बिहार सरकार के योजनाओ को गरीब जनता तक पहुचाने का काम भी करते है।

★ युवा वर्ग से क्या अपील करना चाहेंगे?

युवा वर्ग को राजनिति में आना चाहीये। पढ़े-लिखे युवाओं को राजनिति में आना चाहीये। पढ़े-लिखे युवाओं को राजनिति में आने से सरकार द्वारा चलाया जा रहा योजनाओं को गरीब जनता तक पहुचाने में मदद मिलेगी। मै चाहुँगा की युवा लोग राजनिति में आये और जनता के समस्याओ को दूर करे। तथा जो युवा पढ़े-लिखे है और बेरोजगार है उन्हे बेरोजगारी भत्ता मिले, सरकार के तरफ से ये भी मदद होना चाहीए। सरकार को एक सर्वे कर के जो युवा पढ़े-लिखे है उसका उपयोग हम कैसे करे और जो उपयोग लायक नही है उन्हे युवा भत्ता मिलना चाहीऐ। और युवा वर्ग आयोग का गठन हो, उसका एक अध्यक्ष हो। जैसे निगम या बोड में होता है। युवाओं को सहयोग करे, इससे युवाओं को एक नया पलेटफार्म मिल सकता है।

★ केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के माध्यम से लोगों को क्या संदेश देना चाहेंगें?

मैं यही कहना चाहुगां कि मेरा उददेश्य केवल यही होना चाहिये समाज कल्यान, हमारा समाज का किस तरह उन्नती हो तथा गॉव का विकास सबसे पहले जरूरी है। तथा क्या-क्या कमी है उसे कैसे दुर करे उसका प्रयास करना चाहिये। और मेरा प्रयास रहता है कि कैसे गॉव तथा गरीबो का विकास हो। और मै खास कर के युवाओं को कहना चाहेंगे कि युवा पिढ़ी जो संक्रमणकाल से गुजर रहा है, वह युवा अपनी सकरातमक उर्जा को पुरी तरह बिकसित करे,

★ केवल सच में समय देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपको भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

आई.जी. के आदेश पर की गई छापेमारी

● **मयंक कुमार/सुनिल कुमार**

पटना प्रक्षेत्र के आई.जी. नैयर हसनैन खान के निर्देश पर औरंगाबाद जिला के विभिनन क्षेत्रों में बालू की अवैध ढुलाई ओवरलोडिंग और शराब को लेकर लगातार छापेमारी चल रही है। छापामारी के दौरान 109 ओवरलोड ट्रक को जप्त किया गया। जिला प्रशासन के द्वारा बालू की अवैध ढुलाई को लेकर की गई छापेमारी में वारूण थाना क्षेत्र से 82 ट्रक एवं एक लोडर को जप्त किया गया है। बड़े पैमाने पर ट्रक की जप्ती को लेकर चर्चा का विषय बना हुआ है। सोन नदी में अवैध बालू की निकासी ओवरलोडिंग अवैध तरीके से शराब के परिवहन व अन्य अवैध कार्यों को रोकने के लिए जोनल आई.जी. के निर्देश पर औरंगाबाद डी.एम. के द्वारा गठित टीम के द्वारा बारूण के विभिनन जगहों पर 4 अगस्त के रात्रि में छापामारी की गयी। गठित टीम में उत्पाद अधीक्षक सुनील कुमार, जिला खनिज पदाधिकारी मो. रियोजुद्दीन एम.वी.आई. उपेन्द्र राम बारूण थाना प्रभारी संतोष कुमार सिंह एवं एस.आई. अस्विनी कुमार सिन्हा शामिल थे। सड़क से गुजर रहे दो पहिया चार पहिया व अन्य वाहनों का जांच बालूघाट का निरीक्षण व अन्य जगहों पर जांच किया गया। प्रभारी थानाध्यक्ष संतोष कुमार सिंह ने बताया कि बारूण नवीनगर सड़क से अवैध तरीके से ओवरलोड बालू ले जा रहे है। ट्रक को पकड़ा गया है। जिससे बालू चलान पर अंकित क्षमता से अधिक बालू लदा हुआ था। साथ ही बारूण लिंक रोड एनिकट के समीप से अवैध बालू लदे एक ट्रक एवं एक लोडर को भी जप्त किया गया है। आवरलोड बालू ट्रक से जुर्माना वसुल कर छोड़ दिया जाएगा। वहीं बालू की चोरी छिपे अवैध ढुलाई कर रहे एक ट्रक एवं एक लोडर के साथ उनके मालिक एवं चालक पर प्राथमिकी दर्ज की जाएगी।

वहीं दूसरे तरफ मुफस्सिल थाना क्षेत्र में ट्रक को धर पकड़ को लेकर गठित टीम में शामिल डी.टी.ओ. विरेंद्र प्रसाद खनिज विकास पदाधिकारी वीणा कुमारी, उत्पाद निरीक्षक, राजकिशोर प्रसाद सिंह एवं थानाध्यक्ष कृष्ण नंदन कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए 22 ओवरलोड ट्रकों को जप्त किया गया है। मदनपुर थाना क्षेत्र में जिला खनिज विकास पदाधिकारी मोहम्मद रियाजुद्दीन प्रवर्तन अवर निरीक्षक हरिशंकर कुमार उत्पाद अवर निरीक्षक आलोक रंजन, इंस्पेक्टर श्याम किशोर सिंह के द्वारा की गई संयुक्त कारवाई में 7 ट्रक को जप्त किया गया है। एस.पी. डॉ. सत्य प्रकाश ने बताया कि अवैध खनन मामले में जब्त किए गए वाहनों के चालक एवं मालिक पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। ●

महीनों चल रहे नाली विवाद को सी.ओ. संजय ने सुलझाया

● मयंक कुमार/सुनिल कुमार

बारूण प्रखंड के जम्होर थाना अन्तर्गत कुड़वा गांव में नाली के पानी रोक लगा देने से पूरे गाँव में जलजमाव हो गया था। एक तो बरसात का मौसम में पानी पानी हुए रहता है और अगर जल बहाव का निकासी बन्द कर दी जाए तो गाँव व ग्रामीणों का हाल कैसा होगा। आप समझ सकते हैं। जल जमाव होने से ग्रामीणों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। वहीं गंदगी भी फैल गई। गाँव के प्रथम पक्ष रामप्रवेश पासवान ने अंचलाधिकारी के पास आवेदन देते हुए शिकायत किया और कहा कि फरवरी माह से नाली से परेशान हैं हमलोग। हमलोग के गांव में नाली का पानी बहने से गांव के ही मंगलदेव यादव ने रोक लगा दिया है। जिससे जल जमा हो गया है। नाली

की रोक होने से गांव में विवाद खड़ा हो गया। जिससे सभी ग्रामीण परेशान है। शिकायत मिलते ही बारूण अंचलाधिकारी संजय कुमार अम्बष्ट एवं जम्होर थानाध्यक्ष अविनाश कुमार कुड़वा गाँव पहुंच कर दोनों पक्षों को बुलाया एवं समझौता कराई। अंचलाधिकारी संजय कुमार अम्बष्ट ने बताया कि रामनरेश पासवान के टोला से नाली पोखरा में जाकर मिलती है, जो बहुत पुरानी है। इस बीच में मंगलदेव यादव का मकान बन जाने से नाली की रोक लगा दी गई थी। लेकिन नाली का रास्ता दूसरी तरफ मुड़ते हुए पुल पोखरे में कर दिया गया है। जिससे जलजमाव की समस्या का निदान हो गया है। साथ ही स्थानीय मुखिया को भी इस बात से अवगत करा दिया गया कि जितना जल्द हो सके इस गांव में पक्की नाली का निर्माण कराया जाए। ●

मानव जीवन अल्प है, इसे व्यर्थ न गवांए

● मयंक कुमार/सुनिल कुमार

औरंगाबाद बारूण प्रखंड स्थित कुड़वा ग्राम में ब्रहमविद्या विहगम योग संस्थान के द्वारा एक दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बिहार के महामंत्री डी.एन. सिंह, मंत्री रामचंद्र तिवारी, जिला सहसंयोजक डॉ. श्याम नारायण प्रसाद ने अनंत श्री सद्गरू सदाफल देव महाराज सद्गुरू धर्मचंद्र देव जी महाराज एवं सद्गुरू स्वतंत्र देव जी महाराज के तस्वीर पर माल्यार्पण एवं अखंड द्वीप प्रज्जवलित कर किया गया। मंच का संचालन आध्यात्मिक महाविद्यालय के विद्यार्थी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित आचार्य मयंक कुमार शास्त्री ने की। कार्यक्रम में उपस्थित मंत्री रामचन्द्र तिवारी ने बताया कि अनियंत्रित मन के द्वारा अनेकों दूषित कार्य हो जा रहे हैं। जिससे लोग परेशान है। अनियंत्रित मन से अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिस के समाधान के लिए मन को नियंत्रण में करना अति आवश्यक है और मन को नियंत्रण करने के लिए

विहंगम योग की साधना ही संभव है। वही महामंत्री डी.एन. सिंह ने कहा कि विहंगम योग का सहज योग है, जिसके द्वारा मानव अपने जीवन के रहस्य को बड़ी आसानी से समझ जाता है। घर परिवार व अपने समाज में रहते हुए भी मानव भक्ति के मार्ग पर वही चल सकता है, जो विहंगम योग अर्थात् सद्गुरू सदाफल देव महाराज के सिद्धान्त को अपने जीवन में उतार लेंगे। विहंगम जो कहता है, कि जीवन अल्प है इसे यू हीं ना व्यर्थ जाने दें, अध्यात्म के बिना सब कुछ अधूरा है। साथ ही स्ववेंद महाग्रंथ को आत्मसात करें। विहंगम योग आध्यात्मिक संस्थान के साथ-साथ सामाजिक संगठन भी है, जो विश्वस्तरीय कार्य की गति बड़ी तेज है। मौके पर उपस्थित बारूण प्रखण्ड के प्रभारी शिक्षक सुनील कुमार संगम धमनी पंचायत के उप मुखिया प्रतिनिधि धर्मजीत यादव बबन राम, राम प्रसाद सिंह, उपदेष्टा कांति देवी, धीरेन्द्र कुमार, श्याम नारायण सिंह विद्यार्थी प्रदीप कुमार, युगल सिंह, वशिष्ठ सिंह के साथ सैंकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे। ●

जर्जर स्थिति में पुलिस थाने का ओ.पी.

● मणिभूषण तिवारी

भोजपुर जिले के पीरो थाना अन्तर्गत हसन बाजार ओ.पी. का अपना भवन नहीं है। शाहपुर थाना अंतर्गत बहोरनपुर ओ.पी. का अपना भवन नहीं है। उदवन्तनगर थाना के अंतर्गत गजराजगंज। करनामेपुर ओ.पी., सिन्हा ओ.पी.। ये सभी के मालखाने एवं थानेदारों को दी गई गाड़ियाँ सब के सब जर्जर स्थिति में है। मैं पुछना चाहता हूँ डी. जी.पी. महोदय से क्या ये थाना सिर्फ दिखावे के लिए खोला गया है। बारिश के दिनों में कैसे संभाला जाता होगा थाना अभिलेख और मालखानों में रखे सामग्री को। जरा सोचिये कैसे सुशासन आएगा। ये तो भोजपुर जिला का सवाल है मगर मुझे तो लगता है कि पूरे बिहार का यही हाल होगा, क्योंकि गुगल के वेबसाइट पर भी बिहार के ओ.पी. का नाम और फोटो नहीं डाला गया है। तो क्या फायदा इतने लम्बे अरसे से ओ.पी. को संचालित करवाया जा रहा है और सुविधा के नाम पर कुछ भी नहीं दिया जाता। ये कैसी सुशासन व्यवस्था है। पब्लिक भी पुछना चाहती है, सुबे के मुखिया सुशासन बाबू माननीय श्री नीतीश कुमार जी से। क्या जर्जर हालत में पुलिस

कर्मी जर्जर जीप से पेट्रोलिंग और चोर उचक्के को पकड़ पायेगी। आपके जांबाज ऑफिसर थानेदार तो मीडिया को स्टेटमेंट भी नहीं दे पाते, इस डर से कि कहीं मुझे इस पदभार से मुक्त ही ना कर दिया जाए। पुलिसकर्मियों को डरा-डरा कर कब तक सुशासन लाते रहेंगे। हमारे जांबाज ऑफिसर को निर्भिक बनने में सहयोग करें और जर्जर भवनों तथा जर्जर जीपों से निजात दिलायें तभी सुशासन का सपना साकार होगा। अन्यथा इस तरह शौतेलापन व्यवहार करके सुशासन का ढिंढोरा पिटवाना बेमानी होगी। सबसे ज्यादा खराब स्थिति में बहोरनपुर ओ.पी. है, जहाँ हमारे केवल सच की टिम ने वहाँ के मौजूदा हालात का जायजा लेना चाहा परन्तु वहाँ के थानेदार ने सिर्फ यही कहा कि आप लोग खुद ही देख लिजिए मुझे क्या बोलना है। पिछले दिनों भोजपुर पुलिस कप्तान श्री अवकाश कुमार ने भी वहाँ के जर्जर स्थिति को देखकर मजबुर हो गये, थाना भवन के अनुशंसा के लिए। मगर देखना होगा कि डी.जी.पी. महोदय और सुशासन बाबू क्या कदम उठाते हैं। चारों तरफ विकास के ढिंढोरे पिटे जाते हैं मगर असली समस्या पर ध्यान किसी का नहीं जाता। आपको राजनीति करनी है करिये, परन्तु पुलिस कर्मियों को राजनीति का शिकार मत बनाइये। क्योंकि कुर्सी बना होता है चिपक के रहने के लिए नहीं कभी ना कभी तो फेवीकोल छुट ही जाएगा तो क्यों ना कुछ ऐसा करें कि कुर्सी से हटने के बाद ये अफसोस नहीं करना पड़े कि मैं ये पुनित कार्य कर सकता था, परन्तु नहीं किया। मुखौटा हटाईए दोहरी राजनीति का क्योंकि किसी ने ये भी कहा है कि-

जमीर जिंदा है तो कबीर जिंदा रख।
बन जा चाहे सुलतान पर अपने अंदर,
एक फकीर जिंदा रख।
जिंदगी हार जायें या जीत जाये,
अपने तरकस में उम्मीद का एक तीर जिंदा रख।

अब देखना है कि थानों के ओ.पी. को उनका नाम और सही सम्मान कब मिलता है।●

कई दशकों से छले जा रहे कलम के सिपाही

● मणिभूषण तिवारी

आजादी का नाम लेकर जीने वाले आजादी के साथ कलम चलाने वाले, आजादी के साथ बोलने वाले, आजादी को सिने में संजोने वाले। ये आजाद सिर्फ नाम के हैं। चंद्रशेखर आजाद सिर्फ नाम के आजाद हैं, क्योंकि अगर सच में आजाद है, तो उन्होंने सच्चाई के मार्ग पर चलने का जो रास्ता दिखाया था आज उसे धुमिल क्यों किया जा रहा है। उन्हें उनके कलम की आजादी पर धुल क्यों फेंका जा रहा है। मैं बात कर रहा हूँ पत्रकार एवं पत्रकारिता की। कोई पत्रकार सच बोलता है और सच लिखता है, तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है या फिर जिन्दगी से ही बेदखल कर दिया जाता है। क्या स्वतंत्र भारत में मीडिया की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा पर सरकार को नहीं सोचना चाहिए। लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र को बचाने और चलाने में मीडिया कि अहम भूमिका है पर, आज वो उपेक्षित होते जा रहा है। मीडिया पर असामाजिक तत्वों का दबाव बढ़ते जा रहा है। क्या ये हमारे लोकतंत्र के लिए खतरा नहीं है। इस पर कौन विचार करेगा। सच खबर लिखने वाले कलम के सिपाही को गाड़ियों से रौंद दिया जाता है और उसके बीबी बच्चे, बुढ़े माँ–बाप न्याय के लिए दर दर भटक रहे होते हैं। किसी मीडियाकर्मी को मारकर रेलवे ट्रैक पर सुला दिया जाता है और उसके मौत का तमाशा बना दिया जाता है कि हत्या है या आत्महत्या। क्या ऐसा कलमकार जो हमेशा से भ्रष्टाचार को उजागर करता था। वह इतना कमजोर हो सकता है कि आत्महत्या कर लेगा। ये सवाल सके मन में है, परन्तु सबको पता है कि सरकार क्या चाहती है। सरकार यही चाहती है कि मीडिया हमारी गुलामी करती रहे और उसका नतीजा आपके सामने है।

सरकार की गुलामी करने वाले, मुखिया, सरपंच, बी.डी.ओ., सी.ओ. की गुलामी करने वाले आज असली मीडियाकर्मी बन कर घुम रहे हैं। सम्मान और पैसा कमा रहे हैं और छोटी–छोटी बच्चियों को शिक्षा के नाम पर शोषण कर चकलाघर चला रहे हैं। सच्चे सिपाही को उनका उचित सम्मान और मेहनताना नहीं मिलता यही हाल है, हमारे आजाद भारत के आजाद सिपाही की। हमेशा से ही दोहरी राजनीति होती रही है। मीडियाकर्मी जो सच्चा देशभक्त है, वो तो मर कर आजाद हो गया, मगर उसे शहीद की दर्जा नहीं मिल सकती, क्योंकि वो देश का सिपाही नहीं था। कसूर उसका इतना था कि वो सच लिखता था। चाटुकार और रसुखदार तो जीवन आनंद बीमा के तरह जिन्दगी के साथ भी जिन्दगी के बाद भी लक्ष्मीदेव इन्द्र बन कर सुख भाग रहा है और क्यों ना करे सरकार भी तो यही चाहती है। तो ऐसे में सरकार को भी चाहिए कि मीडियाकर्मियों को सरकारी कर्मचारी घोषित कर दें और अपने मनमाफिक खबर लिखते रहे। कमसे कम मरने के बाद शहीद का दर्जा तो मिल जाएगा और किसी मीडिया को नोवेल पुरस्कार और शहीद का दर्जा क्यों मिलेगा। उसको तो दूसरे को दिलवाने से फुर्सत ही नहीं है कि अपने और अपने परिवार के बारे में सोचेगा। सच तो यही है कि लोकतंत्र के प्रहरी मीडियाकर्मी आज उपेक्षित है, शोषित है। सहमा हुआ है। पता नहीं कब क्या हो जाए। अगर यही हाल कुछ दिन और चलता रहा तो सभी कलम के सिपाही अपना कलम तोड़ देंगे। यही सच है। ●

प्राइवेट शिक्षा क्षेत्र : सेवा या व्यवसाय

● बिन्ध्याचल सिंह

भोजपुर जिला में स्थित बिहिया बाजार व्यवसाय व कृषियंत्र निर्माता के साथ श्रमिको के शोशण व प्रदुषण के लिये विशेष रूप से जाना जाता हैं जहॉ सती शिरोमणी महथीन माई का मंदिर स्थित है। बिहिया में प्रदुषण के लिये रामको कम्पनी जिम्मेवार है, जबकि श्रमिको के शारीरिक शोषण के लिये बनिया वर्ग। परन्तु श्रमिको के मानसिक शोषण करने प्राइवेट विद्यालय के निर्देशक जिम्मेवार है। जिसका प्रमाण यूनिर्वसल और विवेकानन्द संस्कार भारती से प्राप्त कर सकते हैं। प्रखण्ड बिहिया के प्राइवेट विद्यालय ऑक्सफोर्ड, शान्ति निकेतन आदर्श महथीन ज्ञानपीठ के निर्देशक पुर्णतः सेवा भाव से विद्यालय संचालित करते आ रहे हैं, वही प्लट टू युनिर्वल पूर्णतः व्यवसाय की दृष्टि से संचालित कर रहे है। आपको बताते चले कि ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल के निर्देशक अजय कुमार, शान्ति निकेतन के निर्देशक अभिषेक क्षत्रप और आदर्श महथीन ज्ञानपीठ के निर्देशक श्री कमल चौबे है। जिन्होने सती शिरोमणी महथीन माई की इतिहास को सूचीवद्ध कर चुके हैं। प्रखण्ड बिहिया में संचालित होने वाले दो प्राइवेट विद्यालय की तुलनात्मक जानकारी इस प्रकार है। पहला–आदर्श महथीन ज्ञानपीठ सिकरिया। दूसरा– प्लस टू युनिर्वसल बिहिया। 04 जनवरी 1988 से आदर्श महथीन ज्ञानपीठ 'सिकरिया' प्राइवेट क्षेत्र में गरीब परिवार के छात्रो को शिक्षा देना प्रारम्भ किये जो आज तक अपनी अस्तित्व बनाये हुये है। 03 जुलाई 2018 को केवल सच प्रतिनिधि ने विद्यालय के सचिव श्री कमल चौबे से विद्यालय की लम्बी समय से गुणवतापूर्ण शिक्षा व अस्तित्व के बारे जानकारी लिये तो श्री चौबे ने आज के प्राइवेट शिक्षा क्षेत्र में लूट से कोसो दूर की बात सामने आई। श्री चौबे जी द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी व स्थानीय लोगो से सच्चाई सामने आई कि श्री कमल चौबे 04 जनवरी 1988 से वर्तमान तक अपनी पुस्तैनी जमीन 16 बिगहा, 13 कट्ठा जमीन विद्यालय संचालित करने के लिये बेच चुके है। इतना ही नही आदर्श महथीन ज्ञानपीठ में 31 मार्च 2018 तक आदर्श महथीन ज्ञानपीठ सिकरिया में छात्रो से मासिक शुल्क–250/रू0 लिया जाता है और छात्रावास में नामांकन के लिये मात्र–2200/रू0 है, जो जॉच विषय है। जबकि प्लस टू युनिर्वसल विद्यालय के निर्देशक श्री नीरज कुमार 23 वर्षो में लगभग उतना ही चल और अचल सम्पति कर चुके है जितना कि श्री कमल चौबे ने अपनी पुस्तैनी जमीन बेच चुके है। युनिर्वसल विद्यालय बिहिया में छात्रो से 650 रू0 मासिक शुल्क लिया जाता है। स्थानीय लोगो के अनुसार– छात्रावास में नामांकन के लिये 25000/रू0 लिया जाता है। पुर्णतः व्यवसाय पर संचालित होने वाले प्राइवेट विद्यालय प्लस टू युनिर्वसल विद्यालय बिहिया की जानकारी अगले अंक में:–''धन की बाढ में निर्देशक माला–माले माल। ●

कमल चौबे

गरीबों के मसीहा थे बाबू धर्मपाल सिंह

● बिन्ध्याचल सिंह

प्राचीन मुनिषियो जैसे सुगठित शरीर घनी–पतली भौहे, सिर भारतीय द्योतक उन्नत ललाटए ममता और करूणा से प्लावित ऑखे अपने ढंग का अद्भुत चेहरा मानो कुछ कहना चाहते हो ऐसा था, स्वरूप बाबू धर्मपाल सिंह का। सिंह साहब भारत के उन रत्नो में से एक थे, जिन्होने शाहपुर विधान सभा के चेहरे को पढ़ने का प्रयास किये। जिन्होने विधान सभा के खोये हुए आत्म–विश्वास को ढुढने का प्रयास किये, जिन्होने मानवता के कष्टो से राहत, छुटकारे और बोध के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित किये। उन्होने क्षेत्र के संस्कृति को नवीन जीवन और चेतना देकर राज्यकीय प्रांगण में खडा किये। उन्होने शाहपुर के रंग–रंग में उत्थितव्यम, जाग्रव्यम और बोधितव्य की भावना का संचार किये।

इनका जन्म–06 दिसम्बर 1945 ईस्वी को बिहिया प्रखण्ड के अमराई गॉव में हुआ था जो प्रखण्ड मुख्यालय से लगभग 06 किलोमीटर दूर एन0 एच0–30 के उतर तरफ में स्थित है। जहॉ वर्तमान में बाढ़ पीडितो, असहायो के घर में सुबह–शाम दो जून की रोटी उपलब्ध कराने में अहम योगदान करने वाले अमराई इण्डेन का गैस गोदाम स्थित है, जो विगत–2015 से सेवा उपलब्ध करा रहे है। जिसका श्रेय अमराई इण्डेन के मालिक–श्री विवेक सिंह ''बब्लू'' की परमार्थी होने का प्रमाण है। सिंह साहब विद्यार्थी जीवन से ही गरीब सहपाठियो को मदद करते थे जो उनके परम पुज्य पिताजी की प्रेरणस्रोत थी। स्वर्गीय धर्मपाल सिंह शाहपुर विधान सभा क्षेत्र से लगातार दो बार प्रतिनिधित्व करने का मौका जनता ने सौपी थी, जिसका कार्य काल–1990–2000 तक था जबकि उन्होने प्रथम चुनाव–1985 में लड़े थे। सिंह साहब द्वारा किये गये कार्य आज भी प्रेरणास्रोत है। आपको बताते चले कि उनका नाम बाबू धर्मपाल सिंह था, परन्तु शाहपुर विधान सभा क्षेत्र की जनता, समाज सेवी, बुद्धिजीवी, महिला छात्र को धर्मपाल सिंह कहते आप नही सुने होगें और न सुन सकते है। केवल लोग उन्हे ''विद्यायक'' जी कहते है। विद्यायक जी का इतिहास रहा है कि पुरे राजनीतिक जीवन में सरकार द्वारा दी गई वेतन और पेंशन का व्यक्तिगत खर्च नही किये है। सरकार द्वारा दी गई राशि का विद्यायक जी गरीब, असहाय बुजुर्गो की सेवा करने में खर्च करतें थें। प्रत्येक वर्ष गरीब परिवार के दर्जनो लड़कियों की शादी–विवाह का खर्च वहन, ठंढी के मौसम में सैकडो कम्बल का वितरण, बाढ पीड़ितो के लिये नाव, भोजन दवा इत्यादि का व्यवस्था करते थे। वह शाहपुर विधान सभा के प्रथम और अंतिम राजनेता थे, जिनके विधान सभा के लगभग प्रत्येक जनता से उनका सीधा पहचान था। जिसका मुख्य कारण था विधायक जी का लगातार क्षेत्र भ्रमण।

विवेक कुमार बब्लू

विद्यायक जी उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को बिहार से बाहर पढने के लिये पुरी खर्च व्यक्तिगत् वहन करते थे। इतना ही नहीं गम्भीर बीमारी से ग्रसित रोगियो को रोग विशेषज्ञ चिकित्सक से जॉच कराने मे पुरी मदद करते थे। धर्मपाल सिंह की मृत्यु 06/01/2015 को हुई। उनकी मृत्यु शाहपुर विधान सभा के लिये भरी दोपहर में सूर्यास्त के समान था। उनके दाह–संस्कार में मानो अमराई से बक्सर तक उनके चाहने वाले का कतार लगा था। प्रिय पाठकगण जानकारी देना चाहता हूँ कि 25 जनवरी 2015 से धर्मपाल सिंह स्मृति संस्था का आयोजन किया जाता है। जिसका संचालन श्री विवेक सिंह 'बब्लु' सचिव–जितेन्द्र सिंह 'परमार' और सदस्य–श्री राम सुजान सिंह 'प्रमुख' है। विद्यायक जी के गोद में पले–बढे धर्मपाल सिंह स्मृति संस्था के संचालक श्री विवेक सिंह 'बब्लु' उनकी ही राह पर चलने के लिये दृढ़संकल्पित है। यानि दूसरे शब्द में विद्यायक जी द्वारा किये जा रहे कार्य को गति प्रदान विगत चार साल से करते आ रहे हैं। विद्यायक जी के पुण्यतिथी के दिन बिहार के मानी–जानी फुटबॉल टीम की मैच बिहिया हाई स्कुल के मैदान में आयोजित की जा रही है। पुण्यतिथी के दिन आप दावे के साथ कह सकते हैं कि भले ही धर्मपाल सिंह की शरीर नही हैं परन्तु उनकी कृतियॉ आज भी जीवित है।●

रोगों का अम्बार बना भोला स्वीट्स भण्डार

● बिन्ध्याचल सिंह

लूट की छुट में भोला स्वीट्' भला कैसे पीछे रह सकता है। लोगो के गिरते नैतिकता में नया भोजपुर चौक पर स्थित स्वीट भण्डार साथ है क्योकि उसके पास अवैध वजन; श्रमिक के खुन चुसने; सरकारी जमीन को हडपना जैसे अनेको कार्य उसके पास शामिल है। बिहार की शराबबंदी हो या अतिक्रमण मुक्त बाजार इससे भोला स्वीट् को लेना–देना नही है। जब जब कानूनी डंडा चलता भोला स्वीट् अंचलाधिकारी डुमरॉव को मोटी रकम

देकर पुनः अतिक्रमण कर लेता है। यहा तक कि तीन मंजिला मकान बिहार सरकार में निर्मित है जो जॉच का विषय है। लोहिया स्वच्छता मिशन से कोसो भोला स्वीट भण्डार नया भोजपुर में आप अवैध रूप से बनाई गई मकान में स्थित चापाकल के पास नजर डालेगे तो कुडे का बाजार मिलेगा। इतना ही नही दुकान में रखी स्पंज रसगुल्ला में मक्खियो की सैकडो लाश दिखाई देती है जैसा कि 08/07/2018 को देखने को मिला। स्थानीय लोगो के अनुसार– भोला स्वीट भण्डार मिठाई के साथ रोगो का बीज भी मिठाई के कीमत में बिक्री करता है। जो जॉच का विशय है।

खबर से असर नही, धमकी में कसर नही

● बिन्ध्याचल सिंह

मोजपुर जिला के नगर पंचायत बिहिया में स्थापित रामको ''सिमेंट की चादर बनाने की कम्पनी है। रामको से लगभग सैकडो परिवार का भोजन चलता है। रामको कम्पनी की वजह से बिहार सरकार सहित बिहिया के व्यवसायो की राजस्व में वृद्धी हुई है। इसको नकारा नही जा सकता है; यहॉ तक की नगर पंचायत सहित पडोसी गॉव के जमीनो का मुल्य असमान छू रहा है। चर्चित व स्वादिश्ट दालमोट ''किसान दालमोट'' बियाडा औद्यौगिक क्षेत्र बिहिया में स्थित है जिसके मालिक श्री गोपाल जी है। बिहिया के चर्चित व्यवसायी श्री गोपाल जी जहॉ श्रमिको को भरपेट भोजन और अग्रिम मजदुरी देते है वही रामको अपने श्रमिको को भविश्य निधि' प्रशिक्षण, सुरक्षा मुहैया कराती है। परन्तु रामको में पदस्थापित पदाधिकारी कागज पर ही श्रमिको का भविश्य निधि प्रशिक्षण व सुरक्षा की सभी सुविधॉए पुरा कर देते है। प्रिय पाठकगण याद दिलाना चाहता हुँ कि रामको का प्रथम खबर जनवरी–2016 में 'नया साल–नया व्यवहार' से प्रकाशित हुई थी। खबर की असर से कम्पनी के एच0 आर0 श्री चन्द्रशेखर सिंह श्रमिको व पदाधिकारियो के बीच बोले रहे थे कि केवल सच नही केवल झुठ खबर हैं परन्तु पत्रिका में लगातार रामको की सच्चाई व घोटाले की पोल खुलने लगी तो सहायक प्रबंधक सह अनैतिकता के पदाधिकारी श्री अमरेन्द्र कुमार बख्शी व एच0 आर0 श्री सिंह एवं सहायक प्रबंधक 'लोडिग' सह भ्रष्टाचार पदाधिकारी श्री राजीव रंजन ने सबसे पहले खबर की असर में श्रमिको को गाली देना बंद करवाये। फिर हल्के शब्दो का प्रयोग बिल्कुल बंद किये; सिमेंट का टुटा हुआ चादर जो जमीन खोदकर जेसीबी से रखा जाता था जेसीबी रामको परिसर में प्रवेश पर वर्जित किये। जो पत्रिका की सफलता है। जब–जब रामको की खबर प्रकाशित होती है तब–तब रामको परिसर में स्क्रीन–टच मोबाईल की पाबन्दी होती रहती है जिसका प्रमाण श्रमिको से प्राप्त कर सकतें है। लेकिन यक्ष प्रश्न यह है कि एच0 आर0 की नजर में जब खबर से असर नही है या खबर धरातल की नही है तो पत्रकार को धमकी क्यो दिया जाता है? या फिर पत्रकार पर कोई प्राथमिकी दर्ज क्यो नही की जाती है? ''खिसीआइल बिलाई खम्भा नोचे वाली'' भोजपुरी कहावत को चरितार्थ करतें हुये कम्पनी के एच0 आर0 13/04/2018 को पत्रकार को बर्बाद करने की धमकी दे चूके है जो पत्रिका की खबर की शत् प्रतिशत सफलता का प्रमाण है। रामको में कार्यरत कम्पनी के सुपरवाईजरों का चाहे जितना भी गुणगान किया जाय कम ही होगा; जैसा की रामको में कार्यरत ठीकेदारो के नये व पुराने श्रमिक केवल सच प्रतिनिधि को जानकारी विगत कई वर्षो से देते आ रहे है।अन्त में केवल सच की कलम सेः– खबर दब नही सकती रामको के शुभ चिन्तको के दबाने से कि सच्चाई कम नही होगी पत्रकार को धमकाने से। ●

श्रमिको द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार पदाधिकारीगण की सूचीः–

रामको के पदाधिकारी	कार्य के अनुसार पद	पद
पंकज कुमार	ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ पदा0	कार्य प्रबंधक
चन्द्रशेखर सिंह	ईमानदार व दबंग पदाधिकारी	वरिष्ठ प्रबंधक
अमरेन्द्र कुमार 'बख्शी	वरीय भ्रष्टाचार व अनैतिकता पदा0	सहायक प्रबंधक
राजीव रंजन	भ्रष्टाचार पदा0	स0 प्रबंधक/लोडिंग
अमित कु0 श्रीवास्त	ईर्ष्यालु पदा0	विद्युत अभियंता
संतोष जैना	श्रमिको के अशुभ व अहंकारी पदा0	सुपरवाइजर उत्पादन
निवासन बांगा	रिकार्डतोड़ व कर्तयनिष्ठ पदा0	उत्पादन प्रबंधक
सर्वेश पाण्डेय	कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार पदा0	गुणवत्ता व मात्रा प्रबंधक
शुक्ला जी	शुभ चिंतक पदा0	सहायक प्रबंधक/उत्पादन

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
सुलेखा देवी,
मुखिया
ग्रा०-बसनियामा, पं०-बसनियामा,
हरनौत, नालंदा

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
संजीव कुमार,
मुखिया
ग्रा०-सतंनागा, पं०-भगवानपुर,
चण्डी, नालंदा

छोटी कर्तव्यनिष्ठा की बड़ी बात

● बिन्ध्याचल सिंह

चले में अस्त–तस पगुरी में रंथ'' उपयुक्त भोजपुरी कहावत को चरितार्थ करते हुये डुमरॉव अनुमण्डल में औषधि निरीक्षक अपनी सेवा दे रही है। महीना के तीस दिन में छः दिन भी क्षेत्र में भ्रमण न करने वाली निरीक्षक अपनी बात और कर्तव्यनिष्ठता की औकात को भुलकर राज्यकीय स्तर की बात करती रहती है जिसकी जानकारी प्रतिनिधि को सदर अस्पताल परिसर में स्थित औषधि निरीक्षक कार्यलाय में उपस्थित औषधि निरीक्षक 'बक्सर' अरुण कुमार 'लोरिक' से बातचीत के दौरान मिली। श्री लोरिक जी से बातचीत के दौरान प्रतिनिधि ने मोबाईल नम्बर की मॉग कर रहे थे कि औषधि निरीक्षक' डुमरॉव' ने महिलाओ के आरक्षण का सदुपयोग करते हुये बीच में ही धारा प्रवाह बोलने लगीः– आप हमारे बेवसाईट खोलकर बिहार के सारे औषधि निरीक्षक का मोबाईल नम्बर ले सकते है। जरा सोचियेः– बात! औषधि निरीक्षक बक्सर श्री अरुण कुमार 'लोरिक' से हो रही थी। और नसीहत मैडम दे रही थी। क्योकि 'सलाह दुनिया की सबसे सस्ती वस्तु है'। 'तिल के ताड' बनाने वाली औषधि निरीक्षक 'डुमरॉव' अपनी कर्तव्यनिष्ठता से कई गुना पीछे चलने वाली; बात बिहार स्तर की करती है। बक्सर जिला में कार्यरत दोनो निरीक्षक कभी भी; किसी भी शहर बाजार में दिखाई नही देते है। परन्तु!यक्ष प्रश्न यह है कि जब निरीक्षक क्षेत्र भ्रमण नही करते है तो मेडिकल दुकानदारो की जॉच कैसे होती है। औषधि निरीक्षक डुमरॉव आई0सी0डी0एस0 के सी0डी0पी0ओ0 को गुरु मानकर उनकी राह पर चलकर कार्य करती आ रही हैं। सी0डी0पी0ओ0 द्वारा सेविकाओ को दी जानेवाली टी0एच0आर0 के समय अपनी सेवा शुल्क रजिस्टर में मॉगवा लेती है उसी प्रकार औषधि निरीक्षक भी सेवा शुल्क आवास पर मॉगवा लेती है। जिसकी जानकारी मेडिकल क्षेत्र के जानकारो ने प्रतिनिधि को दी। जान की कीमत आम से कम आंकने वाली निरीक्षक को केवल सेवा शुल्क की चिन्ता और बिहार की चिन्तन करने में प्राकृत द्वारा दी गई तोहफा अर्थात मस्तिष्क खर्च करती रहती है। वर्तमान में बक्सर जिला के किसी भी बाजार में चलने वाली मेडिकल दुकान स्वास्थ्य विभाग की नियम व शर्त पुरा नही करती है। अनुमण्डल के नया भोजपुर, डुमरॉव, कृष्णब्रहम्म, कोरान सराय, बगेन गोला पुराना भोजपुर के मेडिकल दुकानदार औषधि निरिक्षक की व्यवहार से बिल्कुल ही त्रस्त है। क्योकि निरीक्षक क्षेत्र के मेडिकल दुकानदारो से दो हजार से बीस हजार रूपये की वसूली करती आ रही है। मेडिकल दुकानदारो ने जानकारी उपलब्ध कराई की बिहार प्रदेश के जदयू के वरिष्ठ नेता भरत मिश्रा जी दुकानदारो से अवैध वसूली प्राथमिक स्वास्थ्य विभाग में अनियमितता; डाटा अपरेटरो की वेतन सम्बन्धी बिन्दुओ पर लगातार उच्च पदाधिकारीयो से बात–चीत करते आ रहे है। आने वाले कल मे दबंग औशधि निरिक्षक से छुटकारा मिल सकता है। जैसा कि भरत मिश्रा जी का अथक प्रयास है। ●

आरोपी का नाम हटाकर चार्जशीट न्यायालय में समर्पित

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज जिले के कोढ़ोबारी थाना में पदस्थापित पुलिस अवर निरीक्षक शिवपूजन कुमार के खिलाफ उनकी पत्नी ने फरवरी 2018 में महिला थाना में दूसरी शादी करने व उनकी व उनके बेटे के हत्या का प्रयास करने की प्राथमिकी दर्ज करायी थी। महिला थाना में दर्ज प्राथमिकी के अनुसंधानकर्ता पर एसआई शिवपूजन कुमार की पत्नी सुधा रानी ने रिश्वत मांगने की शिकायत एसपी से की है। दिनांक–03.08.18 को सुधा रानी ने एसपी कुमार आशीष को जांचकर्ता के मोबाइल रिकार्ड की सीडी बनाकर दी है। सुधा रानी ने अनुसंधानकर्ता राधा प्रसाद यादव पर आरोप लगाया है कि रिश्वत नही देने पर कांड संख्या 5/18 में चार आरोपी का नाम हटा दिया। साथ प्राथमिकी में दर्ज धारा–506,494 एवं 3/4 दहेज निषेध अधिनियम को हटाकर चार्जशीट न्यायालय में समर्पित कर दी। फिलहाल शिवपूजन कुमार अररिया जिले में पदस्थापित है। सनद् रहे कि सुधा कुमारी ने अपने पति शिवपूजन कुमार के खिलाफ दूसरी शादी रचाने,पुत्र के साथ सुधा रानी पहली पत्नी को जान से मारने का प्रयास करने, आर्थिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का मामला दर्ज करवाया था। शिवपूजन कुमार जिले के कोढ़ोबारी थाना में थानाध्यक्ष थे। सुधा रानी को प्राथमिकी दर्ज करवाने के लिए भी कड़ी मक्कशत करनी पड़ी थी। महिला थाना से उसे लौटा दिया गया था। कुछ पुलिस वाले सुधा के हाथ से लिखा हुआ आवेदन छीन लिया था, कहा घर में बैठकर निपटारा होगा। सुधा रानी तत्कालीन पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा के पास भी शिकायत के लिए गई थी। तत्कालीन एसपी के पहल पर प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद भी सुधा रानी को धमकी पर धमकी मिलती रही। सुधा रानी डीजीपी से भी गुहार लगा चुकी है। पीड़िता के भाई आलोक कुमार को फोन कर केस के अनुसंधानकर्ता राधाप्रसाद यादव ने पूछा....हां आलोक जी क्या हाल–समाचार है। अरे आप लोग काहे नही ये कागज पत्राचार कर रहे हैं। प्रॉपर जो चैनल है, उसी के अनुसार न काम होगा।जब केस हुआ है, तो उसी के अनुसार ही न काम होगा। बिना वजह के पैसा खर्च करने से क्या फायदा है। आप लोग तो पढ़े लिखे लोग हैं। सर, हमलोगों को उसने दो साल से परेशान करके छोड़ दिया है। ये कागज भेजने से क्या फायदा होगा। आप तो बेकार में न पैसा खर्च कर रहे हैं। इन सारे कागजातों के मेंटेनेंस में दिक्कत हो जाती है। इन लोगों ने बहुत प्रताड़ित किया है। दहेज लिया। हमलोगों को कही का नही छोड़ा है। आदमी ऐसे में क्या करेगा। अगर कल बच्चे को मार देगा, हम ही को मार देगा, इसकी जम्मेदारी कौन लेगा। अरे सब कुछ चैनल से ही होगा वही पुलिस कप्तान कुमार आशीष, ने कहा की इस मामले की जांच फिर से की जाएगी। पीड़िता सुधा रानी ने जो साक्ष्य दिया है और जो आरोप लगाया है, उसकी जांच डीएसपी को सौंपी गई है। जांच रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई होगी। वही राधाप्रसाद यादव, अनुसंधानकर्ता ने कहा है की जांच के क्रम में जो पाया,उसकी रिपोर्ट वरीय अधिकारियों को सौंप दी है। मुझ पर लगाए गए सभी आरोप बेबुनियाद और निराधार हैं। गौर करे तो जब वरीय अधिकारी के सामने गलती पकराई जाती है तो ऐसे ही कहते है की आरोप निराधार है हमें फसाया जा रहा है किन्तु सही जांच नही करते जिस कारण सफाई देनी पड़ती है। हम वैसा कार्य क्यो करे जिससे आरोप लगाए कोई ? अब देखना यह दिलचस्प होगा की सुधा रानी को न्याय मिल पता है या नही...पर आम नागरिको का कहना है की पुलिस कप्तान कुमार आशीष पीड़ित महिला को न्याय अवश्य दिलाएंगे जिलेवासी को पुलिस कप्तान कुमार आशीष पर पूरा भरोसा है की दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे।●

नशाबंदी का अलख जगाने स्कूल पहुंचे डीएम और एसपी

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज डीएम और एसपी ने पूर्ण शराब बंदी और नशाबंदी के लिए जागरूकता फ़ैलाने के कर्म में स्कूल के बच्चों के बीच उनसे संवाद किया उनकी समस्याएँ सुनी त्वरित कारवाई का भरोसा दिया।और साथ ही पर्चे बाँट कर सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना शराब बंदी को घर घर तक ले जाने की अपील भी की पर्चे के माध्यम से शराब और तमाम तरह के नशे की बुराईओं और कानून के कड़े प्रावधानों का जिक्र किया गया है। इसके साथ महिलाओं की रक्षा में तैनात स्पेशल पिंक पेट्रोलिग के बारे में भी बतलाया गया बच्चियों से अपील की गयी की वे अपने आप को कभी भी असुरक्षित ना समझे किशनगंज पुलिस उनके साथ हमेशा खड़ी है।आप को मालुम हो की 15 लोगो को पिंक पेट्रोलिंग ने छेड़खानी करते दबोचा था नगर परिषद क्षेत्र स्थित एसडीपीओ आवास के पीछे स्थित बुद्ध शांति पार्क में 26 जूलाई को पुलिस ने छापेमारी की। छापेमारी में नौ लड़की एवं छह लड़के को पुलिस ने हिरासत में लिया।हिरासत में लिए गए सभी युवक व युवती अन्य जिले प.बंगाल के निवासी हैं। छापेमारी का नेतृत्व कर रहे एसडीपीओ डॉ० अखिलेश कुमार ने छापेमारी की पुष्टि की है।मजनूओं के खिलाफ अभियान चला रही किशनगंज की पिंक पेट्रोलिंग दस्ता ने आपत्तिजनक अवस्था में पाए गए 15 युवक-युवतियों को हिरासत में लेकर महिला थाना लाया गया। जिसमें अधिकांश लड़कियां नाबालिग थी जो पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल से यहां आकर अपने प्रेमी संग घूम रही थी।हालांकि बाद में पुलिस ने सबके अभिभावकों को जानकारी देते हुए बांड भरकर थाने से मुक्त कर दिया। गौर करे तो इनका मुख्य मकसद बच्चों को नशा से दूर रहने की सीख देना था। इस दौरान दोनों अधिकारियों ने बच्चों के साथ न सिर्फ सीधा संवाद किया बल्कि उन्हें शराब और नशीले पदार्थो से दूर रहने की भी नसीहत दी।खासकर पूर्ण शराबबंदी को सफल बनाने में बच्चों की भूमिका पर भी चर्चा किए।इस दौरान दसवी वर्ग की एक छात्र मंच के पास गई और डीएम व एसपी से सिर्फ इतना ही कह पाई कि दहेज के लिए पापा मां को प्रताड़ित करते हैं, जिसके बाद वह फफक-फफक कर रो पड़ी। एसपी ने महिला पुलिस अधिकारी को अलग से कमरे में ले जाकर छात्र से बात करने के लिए कहा।छात्र रीमा कुमार कामती ने कहा कि उपद्रवी लड़के विद्यालय के गेट पर खड़े होकर फब्तियां कसते है।एसपी ने थानाध्यक्ष को सात दिन के अंदर ऐसे तत्वों से निपटने का निर्देश दिया।पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने विद्यालय की छात्राओं से कहा कि मुखर होकर नो कहना सीखें, मनचलों का मंसूबा टूट जाएगा। पुलिस द्वारा पिंक पेट्रोलिंग गाड़ी चलायी गयी है जो सिर्फ फब्तियां कसने वाले लफंगों पर नजर रखती है। मुसीबत पड़ने या फिर खतरे की आंशका भांपकर पुलिस पिंक पेट्रोलिंग के नम्बर 844428162 पर डायल करें।पुलिस तुरंत सेवा में हाजिर होगी। गौर करे तो पुलिस प्रशासन के साथ समाज के लोगों को जागरूक होने की जरूरत है। घटनाओं के प्रति समाज के लोगों संवेदनशील होने की जरूरत है। अपराध नियंत्रण की जिम्मेवारी सिर्फ पुलिस प्रशासन की ही नही होती बल्कि समाज के प्रबुद्ध लोगों का भी दायित्व है कि वारदातों के प्रति जागरूक रहें।वही जिलाधिकारी महेन्द्र कुमार ने छात्र-छात्राओं से अपील की कि अच्छी शिक्षा प्राप्त कर स्वस्थ व स्वच्छ समाज व राष्ट्र निर्माण के गवाह बनें। राज्य सरकार अब ऊंची शिक्षा के लिए भी कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया है।इन योजनाओं का लाभ लें। स्टूडेन्ट क्रेडिट कार्ड, कौशल युवा विकास जैसी योजनाएं सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए डीएम ने कहा कि प्रशासन अवाम और सरकार के बीच कड़ी का कार्य करती है।आपको बताते चले की शहर के वार्ड नम्बर 05 स्थित माधवनगर भी पुलिस कप्तान श्री कुमार पहुंचे। वहां मौजूद महादलित समाज को नशा मुक्ति अभियान में प्रशासन का साथ देने का अपील किया।नशा से होने वाले नुकसान को विस्तार से बतलाया गया।कार्यक्रम में एसडीपीओ डॉ० अखिलेश कुमार, पुलिस निरीक्षक प्रमोद राय, थानाध्यक्ष आफताब अहमद, महिला थानाध्यक्ष महाश्वेता कुमारी सहित अन्य मौजूद थे।

दूसरी ओर किशनगंज आए दिन मासूमों के साथ हो रहे अत्याचार को देखते हुए किशनगंज एसपी कुमार आशिष ने अभिभावकों से अपील करते हुए उन्हें हर वक्त सचेत और चौकन्ना रहने को कहा है। उन्होने अभिभावकों से कहा है कि हर हाल मे अपने बच्चों को आत्मविश्वासी बनाएं और अपने बच्चों से प्रतिदिन प्यार से ये जरूर पूछे कि बस ड्राइवर ने कुछ कहा है टीचर कैसे चीयर करती है तुम्हें टॉयलेट जाती हो तो स्वीपर या कोई अन्य व्यक्ति तो नही होता वहां क्या आज कुछ गलत या अजीब फील हुआ तुमको ? कोई प्राब्लम तो नही है तुम्हे स्कूल में? अगर तुम सही हो तो टीचर हो या प्रसिपल, किसी से मत डरना। कोई बड़ा घर हो या बाहर कुछ गलत करने को कहे तो उसकी बात कभी मत मानना। बिल्कुल भी मत डरना।मुझे पूरा विश्वास है तुम पर।तुम बिल्कुल भी अकेले/अकेली नही हो।कोई धमकी दे,तो बेखौफ मुझे बताओ। स्कूल तुम से बढ़कर नही।कुछ इस तरह से बच्चों को आत्मविश्वासी बनाएं। ये बाते किशनगंज एसपी कुमार आशीष ने कहा कि अपने बच्चों को बिल्कुल LOWER K.g.से ही गुड टच व बेड टच के बारे में रोज Aware कर के स्कूल भेजे। क्यूंकि समाज अति से ज्यादा गंदा हो चला है।ऐसे में जागरुक माता-पिता बने, बच्चों के साथ Friendly रहें, अनुशासित वो समय के साथ स्वयं हो जाएंगे।

श्री कुमार ने कहा कि उन्हें हरपल अहसास कराएँ कि वो कितनी अहमियत रखते हैं आपके लिये। उन्हें इतना जोड़े खुद से कि वे कभी कुछ गलत भी कर जाएँ तो सबसे पहले स्वयं आपको बताएँ। सभी माता पिता बच्चों को अपना दोस्त बनायें। बच्चों को चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर 1098 व डायल 100 के बारे में बताएं।यदि बच्चे उनके साथ हुए किसी प्रकार के शोषण के बारे में बताते हैं तो उनकी बातों को ध्यान से सुने उन पर विश्वास करें उनकी बातों को महत्व दें।बच्चों का अपना दोस्त बनाये व उनसे दोस्ताना व्यव्हार करें। उन्हें बताएं की आपके साथ जो हुआ है इसमें आपकी कोई गलती नही हैं। आप निर्दोष हो।इसके पश्चात माता पिता या वे व्यक्ति जिन्हें बच्चे शोषण के बारे में बताते हैं, तो उनकी जिम्मेदारी है कि वह बच्चो के साथ हुए शोषण की घटना को छुपाये नही और तत्काल इसकी सूचना निकट के पुलिस थाने, डायल 100 व चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर 1098 पर दें।डायल 100 व 1098 पर सुचना देने वाले का नाम, पता, मो. नम्बर व पहचान पूर्णत: गोपनीय रखा जाता है और ये दोनों नंबर नि:शुल्क है।साथ ही पिंक पेट्रोलिंग हेल्पलाइन न0 8544428162 पर भी फ़ोन कर सकते हैं। एसपी कुमार आशीष ने बताया कि यदि कोई बालक या बालिका आपको उनके साथ हुए शोषण के बारे बताते है और आप उस घटना को दबाने का प्रयास करते है या पुलिस अथवा जिम्मेदार विभागों को सुचना नही देते हैं तो आपके विरुद्ध pocso act 2012 के अंतर्गत कठोर सजा का प्रावधान है। डरें नही,सजग रहें, जागरूक बने और जिम्मेदार नागरिक होने का परिचय दें। पुलिस और चाइल्ड लाइन को बाल अपराधों को रोकने में आपके विशेष सहयोग की आवश्यकता है। एसपी ने कहा कि अब समय आ गया जागरुक होने व जागरूकता का परिचय देने का। ●

न रुका है न रुकेगा-ओवरलोड की इंट्री

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला किशनगंज जिला इन दिनों इंट्री माफियाओं के आतंक से जूझ रहा है। किशनगंज से सटे दोनों छोर पर स्थित फरिंगोला,रामपुर और दालकोला के अलावे ठाकुरगंज के गलगलिया के समीप ढचक्करमारी से इंट्री माफियाओं का खेल आरंभ हो जाता है इससे राज्य सरकार को प्रतिमाह करोड़ों-करोड़ के राजस्व का चुना लग रहा है वजह यह है कि इंट्री माफियाओं और अधिकारियों के गठजोड़ में चावल और मवेशी लदे ट्रक के अलावे ओवर लोड ट्रक व कंटेनर को बेरोकटोक किशनगंज जिले से पार कराया जाता है इसके एवज में ट्रक चालकों से मोटी रकम वसूली जाती है जाहिर है कि प्रतिदिन लाखों की कमाई हो रही है।इस प्रकार बिहार से कालाबाजारी के सरकारी चावल के अलावे मवेशी बंगाल और आसाम भेजे जाते है। वही बंगाल से आने वाले बालू, गिट्टी किशनगंज पहुंचते ही इंट्री माफिया के लिए यह सोने में तब्दील हो रहा है।हैरानी की बात यह है कि इस मामले में अधिकारी भी कुछ बोलने से कतराते है।बिहार बंगाल सीमा पर स्थित दालकोला, रामपुर, फरिंगोला, बलिचुका के अलावे ठाकुरगंज के गलगलिया के समीप बंगाल सीमा पर लाइन होटलों में माफियाओं का अघोषित कार्यालय संचालित हो रहा है इंट्री के धंधे में अब सफेदपोश भी अपना दाव आजमाने से पीछे नही हट रहे है। चक्करमारी के होटलों में बैठकर इंट्री का चाल चला रहे है। इस धंधे में कई गुट के लोग लगे हुए है जानबूझ कर बंगाल क्षेत्र में कार्यालय संचालित होते है,ताकि किसी भी तरह के जांच पड़ताल के लफड़े से बचा जा सके ओवर लोड ट्रक चालक सबसे पहले इन्ही कार्यालयों में संपर्क स्थापित करते है। ट्रक चालकों से राशि लेकर उन्हें कोड वर्ड दिया जाता है। किशनगंज जिले में तैनात परिवहन विभाग के अधिकारियों को कोड वर्ड का पता होता है जब संबंधित ट्रक चालक किशनगंज के सीमा पहुंचते है तो अपना कोड वर्ड बताते है और वहां से बेरोकटोक पार कर जाते है जो वाहन बिना कोई कोड के पकड़े जाते है तो उनसे तय जुर्माना वसूला जाता हैं।वही डीटीओ कहते है की मै किसी की नही सुनता मेरा काम करने का तरिका कुछ अलग है इसीलिए विभाग ने सजा के तौर पर किशनगंज भेजा है।आपको मालूम हो कि दिनांक-29.07.2018 को समय तकरिबन 05:45 शाम मे तकरिबन 12 से 15 ओवरलोड टेलर दालकोला की तरफ से आ रहे सिल्लिगुड़ी की ओर जा रहे थे।उसी बक्त डीटीओं के मोबाइल नम्बर 9431039312 पर फोन किया गया कम से कम 9 से 10 बार रिंग भी हुआ पर डीटीओ किशनगंज रविन्द्र कुमार गुप्ता ने कॉल उठाया नही और स्वीच ऑफ कर लिए।जिससे लगा कि सही मायने मे इनका काम करने का तरिका कुछ अलग है।अगर उस वक्त कॉल उठा लेते तो सारा का सारा ओवरलोड टेलर को पकड़ फाइन किया जा सकता था।सुत्र कहता है कि ये सब मोबाइल बंद कर देना फोन नही उठाना ऐसा जान बुझकर करते है ताकि ओवर लोड को पकड नही सके। बाद मे पुछनें पर बहाना भी बनाने से नही चुकते है ऐसे अधि कारी।पर दुसरा दिन भी कॉल डीटीओ साहब को किया गया पर हैरान की बात यह कि दुसरा दिन भी कॉल उठाना मुनासिब नही समझे जिससे प्रतीत यही हो रहा है कि दाल मे कुछ काला है। आपको मालूम हो कि डीटीओ रविन्द्र गुप्ता किशनगंज से पहले औरंगाबाद मे पोस्टेड थे।वहां भी ये हमेशा सुर्खियों मे रहे।करीब 8 माह पहले ओबरा प्रखंड मे ट्रक पर कार्रवाई करने पर इन पर आरोप भी लगे।बात हाथापाई तक आ गई।इसके कुछ दिनों बाद ही लोजपा के कद्दावर नेता और मगध प्रभारी प्रमोद सिंह ने इन्हें लेकर कलेक्ट्रेट तक का घेराव कर लिया था।

★ परिवहन विभाग के अधिकारी के प्राइवेट कर्मी के मोबाइल उगल सकता है इंट्री माफियाओ का राज :- एक सवाल यह है की अधिकारी जो अपने साथ चार-पांच प्राइवेट कर्मी को जीप में ले चेकिंग करते है उनको तन्खवाह किस फंड से देते है ? क्या सरकार भुगतान करता है या खुद अधिकारी अपनें तन्खवाह से यह बहुत बड़ा सवाल है।सूत्र कहता है की उक्त अधिकारी के प्राइवेट कर्मी whatsapp पर नम्बर लेते है ओवरलोड ट्रक का और जब कोई ट्रक पकड़ा जाता है तो अधिकारी अपने प्राइवेट कर्मी को उसी वक्त फोन करके पता करता है की पकरा गया ओवरलोड ट्रक का नम्बर दिया गया है या नही...अगर भूल बस नम्बर उक्त कोड में नही रहता है तो उसी वक्त उसे सीज कर दिया जाता

डीटीओ के बड़े बोल : मैं किसी की नहीं सुनता, सजा के तौर पर भेजा किशनगंज

भास्कर न्यूज | किशनगंज

जिले में शुक्रवार को नए डीटीओ रविन्द्र कुमार गुप्ता ने योगदान किया। विगत चार वर्षो से जिले में डीटीओ प्रभार पर ही थे। इस बार जिला को स्वतंत्र डीटीओ मिला है। उम्मीद थी कि कुछ अच्छा फीडबैक सुनने को मिलेगा, लेकिन योगदान के बाद डीटीओ के बड़े बोल सुनने को मिले। पत्रकारों से चर्चा में उन्होंने कहा कि मेरा काम करने का तरीका बिल्कुल अलग है। मैं किसी की भी नहीं सुनता। इसलिए शायद विभाग ने सजा के तौर पर किशनगंज भेजा है। डीटीओ ने कहा कि सरकार के राजस्व में इजाफा एवं अवैध तरीके से चलने वाले वाहनों पर नकेल कसना ही उद्देश्य है।

रविंद्र कुमार गुप्ता

हमेशा सुर्खियों में रहे रविंद्र

रविंद्र कुमार गुप्ता किशनगंज से पहले औरंगाबाद में पोस्टेड थे। वहां ये हमेशा सुर्खियों में रहे। करीब 7 माह पहले ओबरा प्रखंड में ट्रक पर कार्रवाई करने पर इन पर आरोप भी लगे। बात हाथापाई तक आ गई। इसके कुछ दिनों बाद लोजपा के कद्दावर नेता और मगध प्रभारी प्रमोद सिंह ने इन्हें लेकर कलेक्ट्रेट तक का घेराव कर लिया था।

है अगर नम्बर रहता है तो उस ओवरलोड ट्रक को छोड़ दिया जाता है। जिस वक्त ट्रक पकरा जाता है तो उसी वक्त इंट्री माफिया उस अधिकारी को या प्राइवेट कर्मी को फ़ोन भी करता है और सीज नही करने को भी कहता है।सूत्र कहता है की इस क्षेत्र में जो कारवाई होता है ओवरलोड इंट्री का वो तो पुलिस करती है ना की परिवहन विभाग के अधिकारी,जबकि ये दाइत्व तो परिवहन विभाग के अधिकार क्षेत्र में है।कुछ ग्रामीणों का कहना था की अगर ओवरलोड ट्रक पार करने की सुचना परिवहन विभाग को दी भी जाती है तो बहाना बना देते है और समय पास मोबाइल पर करने लगते है या कॉल नही उठाते है तब तक ओवरलोड ट्रक बंगाल सीमा में प्रवेश कर जाती है। दालकोला, रामपुर फरिंगोला व बलिचुका के अलावे ठाकुरगंज-गलगलिया से सटे चक्करमारी लाइन होटलों से इंट्री माफिया का खेल लगातार जारी है। ओवर लोडेड ट्रक कंटेनर बेरोकटोक पार कराने के नाम पर प्रतिदिन लाखों की वसूली हो रही है।सुलगती कारवाई कि आग पर मैनेजिंग का पानी ढलते है चंद मिनटों मे कारवाई की आग राख बनता है फिर जो जैसा होता है नियम कानून तोड़ ओवरलोड और ओभर टेक कर मनमानी ढंग से चलता है। टिंकू ठाकुरगंज, वर्मा जी, जाबदुल, नाजिम लोहागड़ा, साजन, रफीक धनपुरा, मुखिया जी, नूर, बाबा, पप्पू दरबार, विधायक जी, झा जी, बिनोद, सहवाज, मिश्रा जी, वकील साहब, सूरज फारिंगोला, फिरदोश, सोनू, ठीकेदार मास्टर जो इंट्री का मास्टर माइंड है और कोबरा कोड से संचालित है।एनएच 31 और एनएच 327 ई0 देश के व्यस्त राज्य मार्गों में शामिल है।इसी रास्ते एक तरफ आसाम तो दूसरी तरफ दिल्ली तरफ वाहनों का परिचालन होता है। इसमें सबसे अधिक संख्या ट्रक/टेलर व कंटेनरों की होती है। चावल, मवेशी, कोयला, लकड़ी, गिटी, लोहा आदि के बड़े पैमाने पर इस मार्ग पर परिवहन होता है। लेकिन अधिक लाभ के चक्कर में ये वाहन चालक परिवहन नियम के अवहेलना कर निर्धारित मात्रा से अधिक वजन लोड करते है। इसी वजह से मजबूरन जुर्माना से बचने के लिए वाहन चालकों को इंट्री माफिया के संग में जाना पड़ता है।वाहन चालकों को इससे लाभ तो हो ही रहा है, संबंधित विभागीय अधिकारी भी मालामाल हो रहे है। ●

जो लोग राजस्व से खिलवार कर ओवरलोड इंट्री का कार्य कर रहे है उन लोगो को किसी भी सूरत में बख्सा नही जायेगा।बहुत जल्द इंट्री माफियाओ पर कारवाई की जाएगी।

कुमार आशीष, एसपी, किशनगंज

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Reg. No.- 13 Pat 1955-56 Mob. No.-9334103566

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKARBAGH, PATNA- 800 020 (BIHAR)

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल 1730 सदस्य हैं जिनमें 1600 सदस्यों को लोहिया नगर कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूखंड आवंटित है तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित है।

समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नॉमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नॉमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अतः वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नॉमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव तथा संबंधित प्रयोजनों के लिए आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिए स्ट्रीट लाइट, सड़क, मरम्मत, मैनहोल सफाई, पार्क निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल0 पी0 के0 राजगृहार अध्यक्ष | **सिद्धेश्वर प्रसाद** उपाध्यक्ष | **प्रो0 एम0 पी0 सिन्हा** सचिव

समिति के द्वारा जगनपुरा में एक सामुदायिक भवन का निर्माण किया गया है, जहाँ शादी-विवाह एवं अन्य समारोह करने की व्यवस्था उपलब्ध है।

विवादित जमीन पर चल रहा कॉलेज

● धर्मेन्द्र सिंह

निदेशक इंसान स्कूल ने अबुल हसन के सेवानिवृत्त होने के बाद मोहम्मद इदरीश को प्रभारी प्राचार्य बनाया गया। लेकिन बाद में उनको प्रबंधन के विरुद्ध कार्य करने के पश्चात उन को पदमुक्त किया गया एवं कॉलेज की परीक्षा संबंधी कार्यों को पूरा करने के लिए शिफा सैयद हाफिज को प्रबंधन द्वारा प्राचार्य का प्रभार दिया गया। बच्चों के परीक्षा होने के उपरांत शिफा सैयद हाफिज को कार्यवाहक निदेशक बनाया गया और प्रबंधन द्वारा निर्णय लिया गया कि विवाद रहने तक इस में नया नामांकन नहीं किया जाएगा। आपको मालूम हो कि सचिव बिहार विधालय परीक्षा समिति बिहार पटना ने वर्ष 2013 मे ही पत्र निकाल आदेश दिए कि महाविद्यालय/विद्यालय मे विवाद अगर बरकरार रहता है तो विधार्थियों के नामांकन पर रोक लगाई जाएगी। तदुपरांत बिहार विधालय परीक्षा समिति-सम्बद्रता उपविधि के अध्याय-1ट कंडिका-15 के तहत महाविधालय/विधालय की प्रस्वीकृति/मान्यता वापसी की कार्रवाई की जाएगी। परंतु वर्ष 2014 में मो0 इदरीश द्वारा बच्चों का अगले सत्र में नामांकन भी लिया गया एवं अधि कारियो से साठ-गाँठ कर सरकारी अनुदान राशि की भुगतान भी लिया गया और आज भी लिया जा रहा है। और आज भी नामांकन जारी है। यहाँ तक छात्र/छात्रों से अधिक राशि भी ली जा रही है। आपको मालूम हो की मौजूदा विवाद को देखते हुए टीएमसी प्रबंधन द्वारा बोर्ड बिहार विद्यालय परीक्षा समिति तथा इससे संबंधित जिला शिक्षा पदाधिकारी को वस्तु स्थिति की जानकारी देते हुए अनुदान की राशि को तत्काल प्रभाव से रोकने का आग्रह किया गया ताकि सरकारी राजस्व का नाजायज भुगतान रोका जा सके तब तक जब तक की उच्चस्तरीय जांच कमिटी द्वारा सही एवं संवेधानिक परिणाम नहीं

निकलता है इसलिए टीएमसी सोसाइटी जिसके तहत इंसान इंटर कॉलेज को बिहार शिक्षा परिषद एवं बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा इंटर कॉलेज को मान्यता प्राप्त प्रदान की गई ने समय-समय पर अनुदान राशि की अवैध निकासी को रोकने तथा उच्चस्तरीय कमेटी द्वारा जांच करने का आग्रह किया जाता रहा है परंतु इसके बावजूद अब तक टीएमसी के आग्रह को नजर अंदाज करते हुए बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा अनुदान की राशि का भुगतान किया जाता रहा है परिणामत: छात्र/छात्राओं की भविष्य अधर में है, क्योंकि अब तक महाविद्यालय का स्थिति संसयपूर्ण तथा संदेहास्पद बनी हुई है जिससे लोगो में शिक्षा विभाग के प्रति रोस व्याप्त है। यहाँ तक शैचालय छात्र/छात्राओं के लिए नहीं है तो विभाग किस प्रवाधान के तहत विवादित कॉलेज की जमीन पर अनुदान दे रही है जो जॉच का बिषय है। आप गौर करे कि इंसान इंटर कॉलेज वर्ष 1993 मे सैयद हसन साहब के भाई शीश मोहम्मद साहब के हाथो द्वारा तालीमी मिशन कोर (टीएमसी) के बैनर तले इंसान इंटर कॉलेज का संगे बुनियाद रखा गया। जिसमे शीश मोहम्मद साहब ने बिहार राज्यपाल (गवर्नर ऑफ बिहार) के नाम से 3 एकड़ 50 डीसमील जमीन डोनेट किए, तब सवाल यह है कि कॉलेज के बोर्ड पर 1980 कैसे दर्शाया जा रहा है जो जॉच का बिषय है? वर्ष 2013 मे फर्जी प्राचार्य बनकर मो0 इदरीश द्वारा केस न0-281/2003 से मो0 मोईन एवं मो0 खुर्शीद पर टाइटल किया जो की पटना हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दिया। मो0 मोईन एंव मो0 खुर्शीद के पक्ष मे फैसला आया। गौर करे की केस न0-5406/2014 से मो0 इदरीश द्वारा हाईकोर्ट पटना मे केस दर्ज करवाया उसके बाद केस को वापस इदरीश द्वारा ले लिया गया ताकि असलियत सबके सामने उजागर न हो जाए। उसके बाद वर्ष 2012 मे केस न0-24/2012 मे केस किया। फिर पटना हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दिया गया। ऐसे-ऐसे अनेकोबार केस नम्बर बदल-बदलकर करता रहा तब-तब पटना हाईकोर्ट ने केस को खारिज करते गया। शीश मोहम्मद साहब ने मिशन को टीएमसी सोसाइटी के द्वारा 299/1993 डीड न0-2757 गर्वनर ऑफ बिहार राज्यपाल के नाम से 3 एकड़ 50 डीसमील जमीन डोनेट (दान) किए। जिसका खाता नंबर 9 प्लॉट न0-265 खता न0-1 खेसरा न0-279 खाता-1 मे ही खेसरा न0-280/281/282 रकवा कुल-3 एकड़ 50 डीसमील चौहदी पूर्व मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर, पश्चिम मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर, उत्तर मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर, और दक्षिण मे भी इंसान स्कुल शिक्षा नगर, लेकिन दुर्भाग्य है कि पदाधिकारी कर्मचारी की लापरवाही का यह हुनर का नमूना है कि निम्न खाता का खाता न0-04,103,111,128 जमाबंदी न0-38 रकवा 3 एकड़ 50 डीसमील आज तक चल रहा है। यह जॉच का बिषय है कि शीश मोहम्मद साहब के द्वारा भिन्न-भिन्न खाता खेसरा की जमीन भिन्न-भिन्न चौहदी दर्शाकर गर्वनर ऑफ बिहार के नाम से जमीन डौनेट हुआ और कर्मचारी के मिली भगत का ये नमूना दिख रहा है। उक्त जमीन पर वाद सं0-75/2012 जिसमे मोहम्मद मोईद बनाम प्रिंसिपल इंसान इंटर कॉलेज सैयद शिफा हाफिज मुकदमा न्यायालय अनुमंडल पदाधिकारी किशनगंज मे दायर हुआ जो कि प्रिंसिपल इंसान स्कुल के खिलाफ गया। जमीन सिद्व नही हो पाया कि प्रिंसिपल इंसान इंटर कॉलेज एवं अन्य कर्मचारी द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर अपनी दुकान कहे या कॉलेज चला रहे है। आपको बताते चलेकि इस दौरान इंसान इंटर कॉलेज दो ग्रुप मे बट गया कभी इंसान इंटर कॉलेज के प्राचार्य सैयद शिफा हाफिज और अब दो-दो और प्राचार्य का दावेदार खड़े हो गए है जो अपना नाम मो0 सलाम एवं मो0 ईदरिश बता रहे है। इंसान इंटर कॉलेज तालीमी मिशन कोर (टीएमसी) ने रेगुलेशन लेकर सोसाइटी से इन लोगो को पदमुक्त कर दिया और यह लोग फिर अवैध रूप से विवादित जमीन पर आज भी अपना कब्जा बोर्ड लगाकर दुकानदारी कर रहे है जो कि सरासर गलत है। यह जमीन आज भी अवैध रूप के कारण भूमी उप समाहर्ता किशनगंज

सिंघिया चौक स्थित संचालित इंसान इंटर कॉलेज विवादों के घेरे में

सहारा न्यूज ब्यूरो

किशनगंज।

तालीमी मिशन कोर सोसायटी के द्वारा सिंघिया चौक स्थित संचालित इंसान इंटर कॉलेज की मान्यता को जांच की मांग जोर पकड़ने जा रही है।

कई ग्रामवासियों ने उक्त कॉलेज को भूमि संबंधित कागजातों पर सवाल खड़ा करते हुए उच्च स्तरीय जांच की मांग जिला प्रशासन से की है। लोगो ने हैरत जताते हुए कहा कि विवादित रहने के बावजूद उक्त कॉलेज को शिक्षा विभाग से एफलेटेड और अनुदान की राशि कैसे मिल गयी। तालीमि मिशन शिक्षा पदाधिकारी से स्वयंभूटोन ने कहा कि अनुदान अभी तक नहीं मिली है। उन्होंने कहा कि तीन चार वर्ष पूर्व कुछ जिला राशि कॉलेज को अनुदान की राशि दी गयी है लेकिन इंसान इंटर कॉलेज को अब तक

अनुदान नहीं दी गयी है। जिला शिक्षा पदाधिकारी ने कहा कि एफलेटेड उसे अवश्य दी गयी है और उसके विवादित रहने की कोई सूचना मेरे पास नहीं है। इससे पूर्व उक्त जमीन पर दो पक्षो की एफेडेटो के बाद धारा 144 लगा दी गयी थी। जिसमें एक पक्ष बबलू अंसारी ने कहा कि न्यायालय द्वारा मेरे पक्ष में फैसला आया है। इससे पूर्व 1 वर्ष 12 को तालीमी मिशन कोर सोसायटी का इंडिपेंडेन्ट सिस्टर सैयद शफिक ने निदेशक विद्या विद्यालय परीक्षा समिति का पत्र लाकर सोसायटी को भेज कर दावाकार को अपवाहार में तालीमी मिशन एवं प्रबन्धन समिति का गठन करने का निर्देश पर जबाब दिया कि तालीमी मिशन कोर सोसायटी का सामाजिक निदेशक सह अध्यक्ष पटनवी डा सैयद हसन ने सम्बन्धित निर्देशों गतिविधियों के कारण प्रबन्ध समिति को पदमुक्त कर दिया था। उन्होंने भी इस विवादित महाविद्यालय के अवधान को अलगैधानिक करार देते हुए कहा कि लगभग 500 छात्र-छात्राओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

उन्होंने निदेशक से अनुरोध किया कि जमीन में अवैध कब्जे के संचालित इस कॉलेज को प्रबंधन समीति जांच कराकर जांच। 29 अप्रैल 17 को प्रबन्धन इंसान इंटर कॉलेज सिंघिया जांच ने भी दीक्षीयतन को पत्र लिखा कर उक्त भूखंड को पास सत्रान 10/2015-16 में शामिल नहीं करने का अनुरोध किया है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने मामले की जांच के लिए अनुमंडल पदाधिकारी को आदेश दिया है।

इधर इंसान इंटर कॉलेज सिंघिया का प्रबन्धन समिति के गठन के बाद से ही कॉलेज में ताला लटका हुआ है। कॉलेज के प्रबन्धन समिति के सदस्यों ने कहा कि जिसे प्रबन्धन की जिम्मेदारी दी गयी है वही कॉलेज को बन्द कर रखा है। जिसके कारण छात्र-छात्राओं का भविष्य अधर में लटका हुआ है।

मे केस नंबर-10/2015-16 भूमी विवाद चल रहा है। इस भूमी विवाद भी एक व्यंग टाइप को मोर ले रखा है एक ही कॉलेज के दो-दो प्राचार्य होने का भूमी उप समाहर्ता किशनगंज को दलील दे रहा है अब इसमे सही प्राचार्य कौन है यह जॉच का बिषय है। जिसके लिए दोनों प्राचार्य को भूमी उप समाहर्ता द्वारा पार्टी बनाया गया है कि पहले प्राचार्य ही अपना फैसला करें कि सही मायने मे ओरिजिनल प्राचार्य कौन है ? इस जमीन मे इसके पूर्व मे केस न0-24/2012 पटना हाईकोर्ट से दावा खारिज कर दिया गया। इंसान इंटर कॉलेज की जमीन नही होने का दावा खारिज कर दिया गया। इस वक्त पता चलता है कि उक्त इंसान इंटर कॉलेज के मो0 इदरिश मो0 सलाम एंव सैयद शिफा हाफिज आपस मे लड़ रहे है कि मै प्राचार्य हुँ तो....। वर्ष 2012 से उक्त जमीन पर ये जमीन इंसान इंटर कॉलेज विवाद के दायरे मे आज तक चल रहा है। इसकी सुचना मीडिया द्वारा समय-समय पर खबर के माध्यम से प्रकाशित भी किया गया। आप गौर करे कि शिक्षा विभाग की मिली-भगत या लापरवाही कहे जो कार्य किया गया है सूत्रों के हवाले से खबर है कि डीसीएलआर किशनगंज को भी दबाव गणमान्य व्यक्ति को लेकर दिया जा रहा है। आप गौर करे कि ये लोग प्राचार्य का लड़ाई, कॉलेज का लड़ाई, और भूमी का भी लड़ाई कहे या विवाद करने पर तुले हुए है। जो जॉच का बिषय है की मात्र तीन कमड़े मे उतने-उतने छात्र-छात्राओं को कैसे बैठा शिक्षा ग्रहण करवाते है ये समक्ष से परे है...? और तो और स्कुल का कमरा जिस प्रकार से बनाया गया है उसमे तो मात्र 20 से 25 छात्र ही बड़ी मुश्किल से बैठ सकता है। जानकार कहते है कि ये सब ड्रामा सिर्फ और सिर्फ सरकारी अनुदान लेने के लिए किया जा रहा है। एक तरफ से देखा जाए तो सरकार को भी चुना लगाया जा रहा है। ताकि ससमय अनुदान की राशि का बंदरबॉट किया जा सके। जिसमे जिले के शिक्षा विभाग के अधिकारी, कर्मचारी साथ दे रहे है। आखिर इन लोगो को छात्र-छात्राओं का भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का हक किसने दिया है जो प्रतीत होता है कि मो0 इदरिश, मो0 सलाम व इनके लोग कभी भी मार-धार पर उतारू हो सकते है। जिला प्रसाशन को इसमें उचित निर्णय लेने का जरूरत है ताकि विधि-व्यवस्था कायम रहे। ●

डीईओ को नहीं मालूम सूचना अधिकार का प्रावधान

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज शिक्षा मे लूट की छुट है। डीईओ को सुचना अधिकार अधि नियम का सायद प्रावधान मालूम नही है या नही जानते।सूत्रो से मिली जानकारी के अनुसार जिला शिक्षा पदाधि कारी किशनगंज श्री विश्वनाथ साह को जैसे कार्यालय कर्मी घुमा रहा है वैसे घूमते है।गौर करे कि वर्ष-2016-17 मे माध्यमिक शिक्षा कार्यालय के द्वारा प्रश्न-पत्र की खरीद की गई।नवम् वर्ग के परीक्षा हेतु।वर्ष-2016-17 जिसमे सहायक लेखापाल सूमित कुमार के द्वारा (बीएमएसएपी) इसी से संबधित सुचना,सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत लो0सु0पदा0-सह- जिला शिक्षा पदाधिकारी किशनगंज से दिनांक-02.05.2018 को मांग किया गया।सुचना उपलबध नही कराएं जाने के कारण आवेदक द्वारा विधिवत प्रथम अपील क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक पुर्णिया प्रमंडल पूर्णिया से किया गया।किन्तु प्रथम अपीलीय प्राधिकार महोदय द्वारा आवेदक को किसी प्रकार का दिशा निर्देश नही दिया गया। तब जाकर जिला शिक्षा पदाधिकारी किशनगंज अपने कार्यालय पंत्राक-368 दिनांक-13.07.2018 से आवेदक को सुचना उपलब्ध करा रहे है कि श्री सुमित कुमार के द्वारा बताया गया है कि आपके द्वारा मांगी गई सुचना किस प्रश्न पत्र के संबध मे है अंकित नही है। अत:सुचना स्पष्ट कराना चाहेगे।गौर करे तो जिला शिक्षा पदाधिकारी किशनगंज महोदय को मालूम होना चाहिए कि जिससे संबधित सुचना हो उसी से पुछकर जबाव उपलब्ध करा रहे है क्या कोई भी चोर कहेगा कि मैने चोरी कि है? और ये कैसा डीईओ है जिनको ये भी पता नही कि प्रश्न पत्र सिर्फ एक ही बार खरीदा गया है। आपको बताते चलेकि विभिन्न उ0उ0वि0 एवं उ0वि0 मे नवम्बर-वर्ष-2016-17 मे मात्र एक ही बार प्रश्न पत्र की खरीद की गई है।जो बिना विज्ञप्ति/टेण्डर के जिसमे बहुत बड़ा गबन है सायद जिला शिक्षा पदाधिकारी किशनगंज महोद्य समय दे रहे हो कागजात सही करने को प्रतीत यही हो रहा है। ऐसे अनेको प्रश्न है जिसमे शिक्षा विभाग किशनगंज का पोल खुलता जा रहा है। चाहे आवेदक को सुचना उपलब्ध करवाएं या नही सत्य तो सत्य ही होता है।एक और गौर करने वाली बात यह है कि संजय कुमार जो 5 वर्ष पूर्व डीपीओ-1 के कार्यालय मे सेवा पुस्तिका/सत्यापन के नाम पर एक हजार रूपए वसूली कर रहा था जिसको मीडिया ने अपने कैमरे मे घुस की राशि लेते और दबाव मे लौटाते हुए कैद भी किया था। जिसमे तत्कालिन जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना-1 श्री चन्द्रशंखेर शर्मा ने अपने ब्यान मे कहा कि जॉच करवा रहे है प्रमाणित होने पर कार्रवाई की जाएगी। उसके बाद सुचना के अधिकार के तहत मांग किया गया सुचना के जबाव मे कहे कि आरोप प्रमानित नही हुआ है जिससे कार्रवाई करने का कोई प्रश्न ही नही उठता और कार्रवाई नही कर कार्रवाई के नाम पर तबादला किया गया।फिर से संजय कुमार डीपीओ-1 कार्यालय मे आ फिर से वही खेल आंरम्भ कर वसूली कर रहा है। सूत्र बताते हैं कि डिपटेशन के नाम पर या विभागीय कोई भी कार्य सजंय कुमार के बिना नही हो सकता। ऐसे ही निलंबित शिक्षक अपुर्व कुमार जिसके उपर भवन निर्माण कराने मे लाखों लाख रूपए का गबन किया है जिसका उजागर ठाकुरगंज निवासी श्री नवीन कुमार के द्वारा किया गया किचन बनाने में, शौचालय बनाने मे गबन किया और जिला शिक्षा पदाधिकारी किशनगंज अपना सरकारी टैब अर्पुव कुमार को दिए हुए है। जिससे की जो भी सरकारी मेल जानकारी आता है पहले अर्पूव कुमार ही देखता है फिर डीईओ देखते है। अगर कुछ भजाने वाला बात रहता है तो इससे भी अपूर्व कुमार पीछे नही हटता, पर सवाल यहॉ यह है कि जब डीईओं किशनगंज को साक्ष्य सहित जानकारी दी गई तब तो उनको कार्रवाई करना था ना कि और सरकारी टैब निलंबित शिक्षक को दे नियम की धज्जिया नहीं उड़ाते। उससे गबन का सारा रूपए जो भवन नही बनाकर गबन किया है उसका वसूली करते।ऐसे ही सुमित कुमार एवं केशव कुमार का सर्टिफिकेट एवं कार्य अनुभव प्रमाण की मांग कि गई तो डीईओ अपने कार्यालय पंत्राक-367/370 दिनांक-13.07.2018 से कह रहे है कि श्री सुमित कुमार/श्री केशव कुमार के द्वारा बताया गया कि आपके द्वारा मांगी गइ सुचना किस सर्टिफिकेट एवं किस अनुभव के संबध मे है अंकित नही है। डीईओ साहब पहले ही अगाह कर दिए की सर्टिफिकेट और अनुभव प्रमाण पत्र की मांग किया जा रहा जल्दी ही व्यवस्था कर लो।एक और सुचना था कि प्रध ान सचिव शिक्षा विभाग जो प्रतियोजन रोकने के लिए जो आदेश पत्र दिए थे वो उपलब्ध कराने को क्यो कि प्रधान सचिव शिक्षा विभाग बिहार पटना का आदेश को दरकिनार करके ये लोग प्रतिनियोजन रूपए लेकर करते आ रहे और पूछने पर इतना ईमानदार बन जाते है कि इनके जैसा इमानदार पुरे भारत वर्ष मे नही है। और तो और अनुश्रवण मद मे लाखो लाख रूपए का गबन है। जिस वाहन मे डीईओ खुद चलते है नियम की धज्जिया उड़ाते हुए वो वाहन निलंबित शिक्षक अपुर्व कुमार का है और उस वाहन का अपूर्व कुमार सुमित कुमार से मिलिभगत करके दो-दो बार राशि की निकासी किया है, जो अपने आप मे जालसाजी है। जिले के जिलाधिकारी से अनुरोध करते हुए कहना चाहता हूँ कि उक्त जो जो प्रश्न मांग किया गया है, उसपर खुद जॉच करे सत्य स्वंय सामने आ जायेगा और शिक्षा विभाग के अधिकारी जो ईमानदारी का झुठा ढोल पीटते है वो खुलकर सामने आयेगा। ●

पानी एक विलक्षण तरल पदार्थ

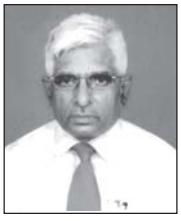

● ललन कुमार प्रसाद

हमारी पृथ्वी के तीन चौथाई क्षेत्र में पानी है और एक चौथाई क्षेत्र में भूमि। इसके अतिरिक्त सभी जीवधारियों एवं वनस्पतियों में भी पानी एक बड़ी मात्रा में मौजूद है। यह उस हवा में भी विद्यमान है, जिसे हम श्वास के साथ अंदर लेते हैं और उस जमीन में भी व्याप्त है, जिसपर हम चलते हैं। समुद्रों, नदियों एवं झीलों में भी यही भरा पड़ा है। वास्तव में पानी का भंडार इतना अधिक है कि हमारी धरती का संभवत: कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा, जो पानी के साधारण गुणों से परिचित न हो। लेकिन, साधारण सा दिखने वाला यह रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन तरल पदार्थ अन्य सभी तरल पदार्थों की तुलना में अत्यंत विचित्र है। यह एक असाधाराण तरल पदार्थ है। सच तो यह है कि पृथ्वी पर पानी से बढ़कर अद्‌भूत और कुछ नहीं है।

हवा, पानी और भोजन जीवन के मूलभूत जरूरतों में से एक है। जीवन की मूलभूत जरूरतों में से हवा के बाद पानी ही सर्वाधिक मूलभूत जरूरत है। पानी के बगैर हम जिंदा नहीं रह सकते। मनुष्य ही नहीं, समस्त प्राणी जगत पानी के बगैर जिंदा नहीं रह सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि सर्वप्रथम जीवन की उत्पत्ति जल में ही हुई थी। अनेक उपयोगी कार्यों जैसे ठंढ़ा करना, स्वच्छ करना, खाना पकाना, आग बुझाना और नगरों के अवशिष्टों को ले जाने आदि में पानी एक प्रबंध कारक भी है। समान्य परिस्थितियों में पानी द्रव है, जबकि इसे गैस होना चाहिए। क्योंकि हाईड्रोजन और ऑक्सिजन दोनो ही गैस है और इन्हीं दो तत्वों के संयोग से पानी बनता है।

यूं तो ताप परिवर्तन के साथ प्राय: सभी पदार्थ ठोस, द्रव और गैस तीनों अवस्थाओं को प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु एकमात्र पानी ही ऐसा पदार्थ है, जो प्रकृति में ठोस, तरल और गैस तीनों अवस्थाओं में पाया जाता है। ध्रुवों और ऊँचे पर्वतों पर यह वर्फ के रूप में मिलता है। वर्फ से ध्रुवों और पर्वतों का लगभग 15074200 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र सदा ढ़का रहता है। यह वर्फ एक करोड़ दस लाख घन मीटर से भी अधिक है। यदि यह वर्फ एक साथ पिघल जाये तो सारी पृथ्वी के समुद्रों का तल 52 से 55 मिटर तक ऊँचा उठ जायेगा, जिसका फल यह होगा कि संसार के अधिकांश बंदरगाह डूब जायेंगे, अनेक द्वीप सागर के गर्भ में समा जायेंगे और अनेक समुद्र तटीय नगर जलमग्न हो जायेंगे। आकाश में तैरते हुए बादलों में पानी ही वाष्प के रूप में रहता है, जिससे पृथ्वी पर प्रति वर्ष 119000 घन किलोमीटर वर्षा होती है। आकाश में तैरने वाले बादलों का कुछ वजन भी होता है, ऐसा मालूम नहीं पड़ता। क्योंकि इसे हवा जहां चाहे बहाकर ले जाती है। किन्तु बादल का वजन होता है, क्योंकि वह घनिभूत जल के कणों से बना होता है। बड़े आकार के किसी बादल का वजन तो हजारों टन होता है। समुद्र, नदियों और झीलों में यह द्रव के रूप में मिलता है।

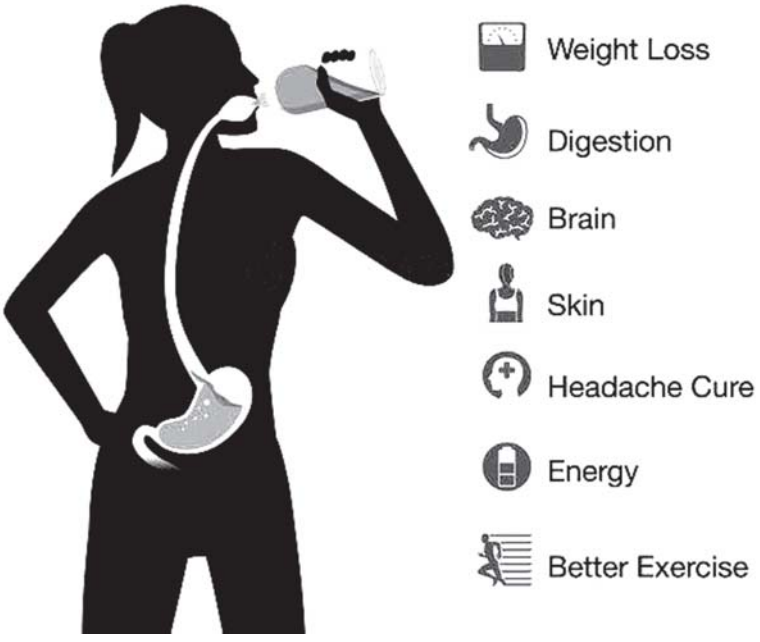

भौतिकी का सिद्धांत है और प्राय: यह देखा भी गया है कि पदार्थ गर्म करने पर फैलते हैं और ठंढ़ा करने पर सिकुड़ते हैं। अर्थात् गर्म करने पर पदार्थ का आयतन बढ़ता है और ठंढ़ा करने पर घटता है। परन्तु पानी

के साथ ऐसा करने पर आश्चर्यजनक परिणाम मिलते हैं। ठंढ़ा करने पर 4 डिग्री सेल्सियस तक तो पानी के आयतन में कमी होती है यानि घनत्व में वृद्धि होती है, किन्तु इस तापमान से अधिक ठंढ़ा करने पर इसके आयतन में प्रसार होता है। यानि घनत्व में कमी होती है। अर्थात् 4 डिग्री सेल्सियस तापमान पर पानी का घनत्व अधिकत्तम होता है। शून्य डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक ठंढ़ा करने करने पर तरल पानी वर्फ में परिवर्तित हो जाता है और पानी से कम घना यानि हल्का होने के कारण पानी पर तैरते रहता है। यही कारण है कि वर्फ के टुकड़े को पानी रखे ड्रम में डालने पर वह तैरता है, जिसका 90 फिसदी हिस्सा पानी की ऊपरी सतह के अंदर रहता है और दस फिसदी हिस्सा पानी के ऊपरी सतह के ऊपर रहता है। इसलिए ठंढ़े प्रदेशों में तापमान अधिक गिर जाने के कारण झीलों एवं नदियों के पानी का केवल ऊपरी सतह ही जमकर वर्फ में परिवर्तित हो जाती है। लेकिन नीचे का भाग तरल रूप में ही बना रहता है। वर्फ की इसी सुरक्षात्मक कवच के चलते पानी में मछलियों तथा अन्य सभी जल जीवों का जीवन सुरक्षित रहता है, क्योंकि वातावरण के निम्न ताप का प्रभाव झील की निचली सतह के पानी पर नहीं पड़ता है। 4 डिग्री सेल्सियस पर पानी सबसे भारी होता है। यही भारी पानी सतह की ऑक्सिजन को लेकर जलाशयों के तल में चला जाता है और वहां से विषैली गैसों व पदार्थों को ऊपर ढ़केलता है। यही कारण है कि जलाशयों के तलहट्टी का

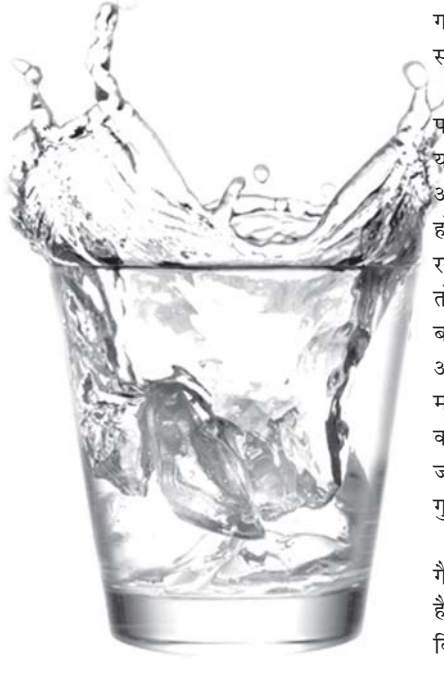

पानी के सामान्य गुण		
अणुभार (परमाणु द्रव्यमान इकाई में)	–	18
अपेक्षित घनत्व (20^0C पर)	–	0.9982
उच्चत्तम घनत्व का तापमान	–	4^0C
पानी का उच्चत्तम घनत्व	–	1.0
हिमांक	–	0^0C
क्वथनांक	–	100^0C
विशिष्ट ताप (20^0C पर)	–	1.0
द्रवण का गुप्त ताप (कैलोरी प्रतिग्राम में)	–	79.9
वाष्पण का गुप्त ताप (कैलोरी प्रतिग्राम में)	–	539.0
पृष्ठ तनाव (22^0C पर डाइन प्रति सेमी में)	–	72.8
आवर्त्तनांक (20^0C पर)	–	1.3330
विस्कोसिटी (22^0C पर सेंटीपॉयस में)	–	1.002
डाइलेक्टिक स्थिरांक	–	80.2

पानी भी ऑक्सिजन तथा पोषक तत्वों से भरपूर बना रहाता है, जिससे तलहट्टी में रहने वाले जलजीव जीवित तथा स्वस्थ रहते हैं। फिर यदि पानी में ऐसी विलक्षणता न होती तो वातावरण का तापमान शून्य डिग्री सेल्यिस के नीचे होते हुए भी समुद्रों, झीलों तथा नदियों का समस्त जल वर्फ में बदल जाता और वातावरण का तापमान पुनः बढ़ने पर अधिकांश वर्फ पिघल न पाता।

पानी के जमने और उबलने के बीच तापमान का अंतर सभी तरल पदार्थों की अपेक्षा सर्वाधिक (शून्य डिग्री सेल्सियस से 100 डिग्री सेल्सियस) होता है। अर्थात् इतनी बड़ी तापमान सीमा के बीच कोई भी अन्य द्रव तरलावस्था में नहीं रह सकता है। पानी के इसी गुण के कारण प्राणी एवं पेड़-पौधे वातावरण के ठंढ़क और गर्मी के इतने अधिक अंतर को झेल सकने में समर्थ होते हैं।

अन्य सभी द्रव पदार्थों की अपेक्षा पानी की उष्माधारिता सबसे अधिक होती है। यही कारण है कि यदि किसी खाली बर्तन को आग पर रख दे तो थोड़ी देर के बाद बर्तन लाल हो जायेगा, परन्तु उसी बर्तन में थोड़ा सा पानी रखकर उतने ही समय के लिए आग पर रख दे तो बर्तन लाल नहीं होगा, सिर्फ पानी का तापमान बढ़ जायेगा। इस बात को एक अन्य उदाहरण से और भी स्पष्ट किया जा सकता है। यदि समान मात्रा की सौर ऊर्जा का उपयोग समान आयतन के बालू और पानी को गर्म करने के लिए किया जाये तो पानी के अपेक्षा बालू का तापमान पांच गुणा अधिक हो जायेगा।

पानी का गुप्त ताप ठोस, तरल और गैस तीनों प्रकार की सभी वस्तुओं में सर्वाधिक है। अब प्रश्न उठता है कि गुप्त ताप क्या है? किसी पदार्थ का गुप्त ताप उष्मा की वह मात्रा है जो बिना तापमान में परिवर्तन लाए एक ग्राम पदार्थ की अवस्था परिवर्तन (ठोस से तरल और तरल से वाष्प) के लिए आवश्यक है। इसलिए पानी उष्मा यानि ऊर्जा की सबसे अधिक चोरी करता है। अर्थात् अन्य सभी पदार्थों की तुलना में पानी में छुपाई गई अतिरिक्त उष्मा की मात्रा सबसे अधिक होती है। मतलब पानी को थोड़ा सा ही क्यों न गर्म किया जाए, जितनी उष्मा की आवश्यकता इसे निश्चित तापमान तक पहुंचाने के लिए होती है, यह उससे अधिक ताप ग्रहण करके अपने अंदर छुपा लेता है। लेकिन, ठंढ़ा करने पर पुनः इसे बाहर निकाल देता है। यही कारण है कि समुद्र तटीय इलाकों में वातावरणीय तापमान सालों भर लगभग एक समान बना रहता है। अर्थात् सर्दियों में न अधिक ठंढ़ा पड़ता है और न गर्मियों में अधिक गर्मी पड़ती है। पानी गर्म होने के पहले बहुत गर्मी सोखता है। लेकिन, वर्फ में आधी ही उष्मा लगती है। इसलिए वर्फ जल्दी पिघल जाता है। इसके कारण धरती का तापमान स्थिर रहता है। पानी की आणविक संरचना के हिसाब से इसे मायनस 80 डिग्री सेल्सियस पर उबलना चाहिए लेकिन यह 100 डिग्री सेल्सियस पर उबलता है। वर्फ को मायनस 100 डिग्री सेल्सियस पर पिघलना चाहिए पर यह शून्य डिग्री सेल्सियस पर पिघलता है। अगर ऐसा नहीं होता तो धरती पर जीवन संभव नहीं होता।

पानी संसार का सबसे अच्छा विलायक या घोलक है। अधिकांश कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थ पानी में घुल जाते हैं। पानी अभी तक ज्ञात सभी विलायकों में सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए पानी को सार्वभौमिक विलायक कहा जाता है। वस्तुतः पानी में धरती के आधे से अधिक तत्व घूल जाते हैं। पानी के इसी अनोखे गुण के चलते पेड़-पौधों और हमारे जीवन के विभिन्न अंगों तक

भोजन पहुंचाने का कार्य संभव हो पाता है। भोजन के पचने के बाद पानी में घूलकर ही शरीर के अनावश्यक पदार्थ फेफड़ों से कार्बन डाईऑक्साईड गैस के रूप में, गुर्दे से पेशाब के रूप में और त्वचा से पसीने के रूप में बाहर निकलते हैं। दरअसल अपनी विलक्षण विलायक क्रिया द्वारा पानी की एक ऐसे सार्वभौमिक तरल माध्यम का कार्य करता है, जिसमें सारी अंत:कोशिय और वाह्यकोशिय रसायनिक अभिक्रियाएं संपन्न होती है। इस तरह हम पाते हैं कि पानी की विलक्षणता के चलते ही हमारे शरीर के भीतर की संभवत: सभी रासायनिक अभिक्रियाएं संपन्न होती है। पानी एक अक्रिय विलायक है। यह जल की विलक्षणता ही है कि पदार्थो को अपने में घोलने के उपरांत यह स्वयं अपरिवर्तित रहता है। इसी कारण पानी को अन्य विलायकों से अलग कर सकते हैं।

कभी-कभी किसी पदार्थ के घूलने से पानी के गुण में विचित्र परिवर्तन भी हो जाता है, मसलन यदि पानी में साधारण नमक घोल दिया जाये तो पानी का हिमांक शून्य डिग्री सेल्सियस से काफी कम हो जाता है। भारी हिमपात के कारण बंद हो गई सड़कों पर यातायात पुन: खोलने के लिए पानी के इस गुण का लाभ उठाया जाता है। बात यह है कि नमक का घोल छिड़कने से जमी हुई वर्फ गल जाती है।

पानी के इसी गुण का उपयोग कर वर्फ में नमक मिलाकर हिममिश्रण बनाया जाता है। इस मिश्रण का तापमान लगभग 18 डिग्री सेल्सियस कम (यानि मायनस 18 डिग्री सेल्सियस) होता है।

पानी का पृष्ठ तनाव बहुत अधिक होता है, इसलिए जब पानी की पतली धार ऊपर से नीचे गिराते हैं तो पतली परत में फैलने के बजाए बूंद का रूप ले लेता है। इसी गुण के कारण यह संकरी नलिकाओं में अपने आप बहुत ऊपर चढ़ जाता है। यही कारण है कि पौद्यों की जड़ों द्वारा अवशोषित पानी दुनियां के सर्वाधिक ऊँचे पेड़ों 'रेड उड' में बिना किसी यंत्र की मदद से पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण को झुटलाते हुए कोई 450 फूट ऊपर चढ़ जाता है। पानी के अत्यंत संकड़ी नलिकाओं में तेजी से ऊपर चढ़ने के विलक्षण गुण के कारण ही खून की कोई 96 हजार किलोमीटर लंबी नरियों (सिराओं और धमनियों) में लगातार प्रवाहित होता रहता है। खून दरअसल पानी ही है, क्योंकि खून में 83 फिसदी पानी ही होता है।

★ पानी की विलक्षणता का रहस्य :- पानी की विलक्षणता का कारण पानी के अणुओं के बीच विद्यमान हाइड्रोजन बंद है। बात यह है कि पानी के एक अणु में हाईड्रोजन के दो परमाणु और ऑक्सिजन के एक परमाणु होते हैं, जो एक सिध में न होकर एक कोणीय स्थिति में होते हैं। यह कोण 105.5 डिग्री का होता है। साथ ही पानी के अणु परस्पर हाईड्रोजन बंधो द्वारा ही बंधित होते हैं। अर्थात् पानी में हाईड्रोजन का प्रत्यक परमाणु केवल ऑक्सिजन के परमाणु के साथ ही बंधित नहीं होता अपितु पानी के दूसरे अणुओं के साथ भी बंधित होता है। पानी के उपयुक्त सभी विलक्षण गुणों के पीछे उसके अणुओं के बीच इन्हीं हाईड्रोजन बंधों का हांथ है, जो समस्त प्राणियों और पेड़- पौधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पानी के रसायन विज्ञान पर ज्यों-ज्यों अधिक जानकारी प्राप्त हो रही है, वैसे-वैसे पानी के प्रति हमारी आम धारणा भी बदल रही है। आम धारणा है कि पानी हाईड्रोजन के दो और ऑक्सिजन के एक परमाणु से तैयार, 18 परमाणु भार का एक रसायनिक यौगिक है। परन्तु पानी के अनेक गुणों के अध्ययन के पश्चात् आधुनिक रसायन विज्ञान का मानन है कि पानी वास्तविक में H_2O का बहुलक है। उबलता हुआ पानी $(H_2O)_3$ होता है और वर्फ $(H_2O)_4$ होती है। साधारण पानी इन दोनो का मिश्रण है।

★ पानी के कुछ दिलचस्प तथ्य :-

☞ धरती का 71 फिसदी भाग पानी से ढ़का हुआ है, जिसका 97.4 फिसदी भाग खाड़ा यानि नमकिन है, जो पीया नहीं जा सकता। 1.52 फिसदी पानी नदियों, झीलों एवं झरनों के रूप में उपलब्ध है, जो पीया जा सकता है। धरती पर 13600 घन किलोमीटरी पेयजल उपलब्ध है, जिसमें से सिर्फ 14000 घन किलोमीटर पानी उपयोग में आ पाता है।

☞ उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों पर ग्लैशियर व आईसवर्ग के रूप में इतना पानी वर्फ बनकर जमा है कि दुनियां भर की सभी नदियों में एक हजार सालों तक बहता रह सकता है।

☞ किसी न किसी समय धरती का सम्पूर्ण पानी वायुमंडल में जलवाष्प के रूप में प्रवेश करता है। यही वाष्प जीवनदायी वर्षा बनकर धरती पर गिरता है। फिर भी वायुमंडल में धरती पर उपलब्ध कुल पानी का 0.001 फिसदी भाग यानि एक प्रशित का हजारवां ही रहता है। 'धरती पर पानी का चक्र' सूर्य की ऊर्जा से चलता है। पानी पवन धाराओं के प्रभाव से वाष्पित होता है।

☞ सभी सजीव वस्तुएं पानी की बनी है। मसलन मानव शरीर में लगभग 65 फिसदी हिस्सा पानी है। एक व्यस्क मानव शरीर में लगभग 35 से 42 लीटर पानी सदा बना रहता है। हमारे दांतों में 10 फिसदी, त्वचा में 20 फिसदी, हड्डीयों में 22 फिसदी, मस्तिष्क में 74.5 फिसदी, मांसपेशियों में 75.6 फिसदी, गुर्दे में 82.3 फिसदी और खून में 83 फिसदी पानी होता है। मछली में 77 फिसदी, हांथी में 70 फिसदी, आलू में 80 फिसदी और टमाटर में 94 फिसदी पानी रहता है।

☞ एक व्यक्ति अपने जीवन काल में लगभग 61 हजार लीटर पानी पीता है।

☞ एक किलोवाट बिजली प्राप्त करने के लिए 18 हजार लीटर पानी की जरूरत पड़ती है।

☞ डेयरी की एक गाय को 4.5 लीटर दूध देने के लिए 18 लीटर पानी पीना आवश्यक है।

★ पानी गुरू है :-

☞ गुरू अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता

है। पानी भी ऐसा ही करता है। पानी से सीख लेकर हम भी अंधकार से प्रकाश की ओर जा सकते हैं। मसलन, पानी सहजता से बहता है। आड़े-तीरछे किनारों और जलमार्गों के अनुसार हो जाता है। पानी कम से कम विरोध का रास्ता अपनाता है। राह में कोई बाधा आ जाये तो, ठिठकता नहीं, रूकता नहीं, रास्ता मोड़कर आगे बढ़ जाता है। अपने सहज, शांत प्रवाह में पानी किसी से टकराता नहीं है। टकराने में ऊर्जा नहीं गंवाता। अपना रास्ता निकालता जाता है, बढ़ता जाता है। हमें पानी की तरह टकराने में ऊर्जा बर्बाद नहीं करना चाहिए, आगे बढ़ते चला जाना चाहिए।

☞ चूकि पानी किसी चीज का विरोध नहीं करता है, इसलिए पानी में सहने की असीम क्षमता होती है। आप लाठी मारो, मुक्का मारो, पानी अपने में जज्ब कर लेता है। सहने की क्षमता का कोई अंत नहीं है, यही गुण मार्सल आर्ट की ताकत भी है और सार भी है।

☞ पानी का ना कोई रूप होता है और ना कोई आकृति। कप में पानी डालों वह कप का रूप ले लेता है। बोतल में पानी डालो, वह बोतल का रूप ले लेता है। कटोरी में पानी डालों, वह कटोरी का रूप ले लेता है। ग्लास में पानी डालों वह ग्लास का रूप ले लेता है। पानी सहजता से किसी भी आकृति में ढ़ल जाता है। यह व्यक्ति के लचीलेपन की निशानी है। पानी के इस गुण से हमें सीख लेनी चाहिए की हमें हर वक्त कुछ न कुछ सकारात्मक सिखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

☞ पानी एकदम मुलायम होता है, पर चट्टानों को भी घिसकर गोल बना देता है। यह कोमलता से स्थितियों को अपने अनुकूल ढ़ालने की कला है। पानी के इस गुण से हमें सीख मिलती है कि विनम्रतापूर्वक मीठा बोलकर हमें बिगड़े हालता को भी अपनपे अनुकूल बना सकते हैं।

☞ पानी पर लकीर खींचों, टिकता नहीं है। लकीर खींचने के साथ-साथ लकीर मिटती भी चली जाती है। पानी के इस गुण से हमें सीख मिलती है कि हमें किसी बात को लेकर किसी से द्वेष नहीं रखनी चाहिए। मिल-बैठकर, बातचीत करके भुला देना चाहिए। फिर मिलजुल कर प्रेम भाव से एक होकर आगे बढ़ते चले जाना चाहिए।

☞ तेल या किसी दूसरे तरल पदार्थ की तरह पानी किसी भी सतह से चिपकता नहीं है। पानी की तरह हमें भी किसी वस्तु या व्यक्ति से व्यर्थ का लगाव नहीं होना चाहिए। मसलन, जब हम किसी नाव से नदी पार करते हैं, तो नदी पार करने के बाद मोह में फंसकर नाव में बैठे नहीं रहना चाहिए। हमें यह नहीं सोंचना चाहिए कि नाव की बदौलत हम नदी पार कर पाए हैं। इसलिए इसे छोड़कर आगे कैसे बढ़ सकते हैं, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। कृतज्ञता स्वीकार कर आगे बढ़ जाना चाहिए। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- **www.psfsm.in**

स्वतंत्रता दिवस एवं
रक्षाबंधन की
हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
श्रीराम प्रसाद सिंह
पैक्स अध्यक्ष सह मुखिया प्रतिनिधि
चेरन पंचायत, हरनौत, नालंदा

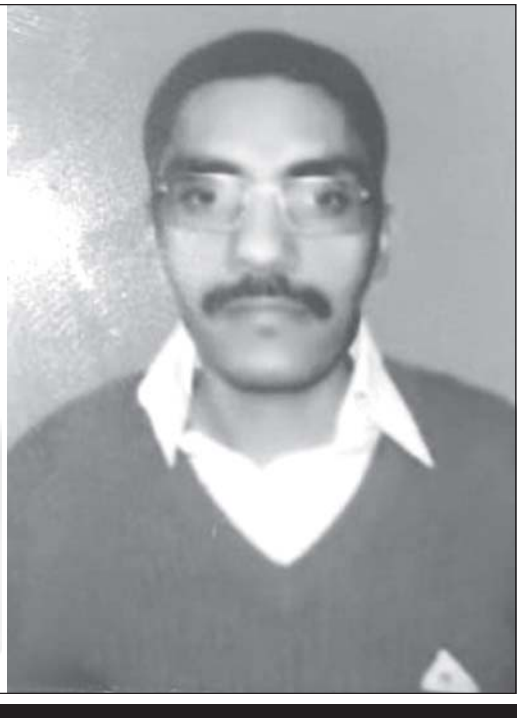

● **ललन कुमार प्रसाद**

हवा के बाद पानी ही सर्वाधिक मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन है। धरती का 71 प्रतिशत भाग पानी से ढ़का हुआ है, जिसका 97.4 फिसदी भाग खारा यानि नमकिन है, जो पिया नहीं जा सकता और ना ही रोजमर्रा के कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। 1. 08 फिसदी भाग दक्षिणी और उत्तरी ध्रूवों पर वर्फ के रूप में जमा हुआ है। केवल 1.52 फिसदी भाग नदियों, झिलों और झरनों के रूप में उपलब्ध है, जो पीने योग्य है और जिसका इस्तेमाल रोजमर्रा के कार्यों के लिए किया जा सकता है। 1.6 फिसदी भाग पानी धरती की कोख में है, जो पीने योग्य है और जिसका इस्तेमाल रोजमर्रा के कार्यों के लिए किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि पृथ्वी पर पानी की कोई कमी नहीं है, फिर भी मीठे पानी की उपलब्धता सिमित है।

तिब्बत के पठारों में मौजूद हिमालयी ग्लैशियर सारे एशिया में करीब 160 करोड़ से अधिक लोगों को मीठा पानी मुहैया कराते हैं। इसमें भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल की नौ बड़ी नदियों में पानी की आपूर्ति होती है, जिसमें गंगा और ब्रह्मपुत्र भी शामिल है। दरअसल, नदियों से ओत-प्रोत जैसा भूगोल भारत का है, वैसा संसार में कोई भी देश नहीं है। विश्व बैंक का आंकड़ा बतलाता है कि भारत में सलाना 76000 करोड़ घन मीटर पानी उपलब्ध होता है, जो दुनियां के किसी भी दूसरे देश से अधिक है। लेकिन, देश की इतनी बढ़ी हुई आबादी (करीब 130 करोड़) के हिसाब से बहुत ही सीमित है।

यह मत भूले की हवा, पानी और भोजन बुनियादि तत्व होने के साथ-साथ जीवन की मूलभूत जरूरतों में से एक है। जीवन की मूलभूत जरूरतों में से हवा के बाद पानी ही सर्वाधिक मूलभूत जरूरत है। पानी के बगैर हम जिंदा नहीं रह सकते। मनुष्य ही नहीं समस्त प्राणी जगत पानी के बगैर जिंदा नहीं रह सकते। फिर भी हम पानी की अहमियत के प्रति अंजान बने हुए हैं। अनवरत बेतहाशा बढ़ती आबादी का बोझ, शहरीकरण का विस्तार, औद्योगिकरण का विस्तार, भारी मात्रा में भू-जल का दोहन, वन क्षेत्रों में लगातार हो रही कमी, सिंचित भूमि क्षेत्रों में लगातार हो रही वृद्धि, प्राकृतिक व कृत्रिम जल स्त्रोतों की उपेक्षा, वर्षा जल संचयन व संरक्षण का आभाव, पानी की बर्बादी आदि के चलते आज सारी दुनियां के ज्यादातर लोग बूंद-बूंद पानी को तरस रहे हैं। आज हम हवा के बाद सर्वाधिक मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन पानी की कमी से बुरी तरह परेशान हैं। दरअसल हम बचपन से ही पानी को मुफ्त की वस्तु और अथाह समझते हैं, इसलिए हम जी भर के इसका इस्तेमाल करते हैं और बर्बाद भी करते हैं। आज हालाता यह है कि बहुत ही थोड़े लोग पानी का सदुपयोग करते हैं और बहुत ही ज्यादा लोग मुफ्त और अथाह समझकर दुरूपयोग करते हैं। पानी के संग्रहण व संरक्षण को महत्व नहीं देते हैं। अर्थात खुद ही अपना कब्र खोदने में लगे हुए हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए की कभी न कभी कुबेर का खजाना भी खाली हो जाता है। यदि हम अविलम्ब नहीं सुधरे तो एक दिन हमारे लिए पानी का भी यही हश्र होगा।

जल संकट की समस्या चौतरफा है। पहला की लगातार बेतहाशा बढ़ती आबादी के चलते पानी की मांग में अनवरत भारी वृद्धि होती जा रही है। दूसरा की ग्लैशियरों के लुप्त होने तथा भू-जल के बेतहाशा दोहन से स्वच्छ पेयजल की मात्रा में लगातार तेजी से कमी होती जा रही है। तीसरा पेयजल जो भी उपलब्ध है, वह तेजी से प्रदुषित होता जा रहा है। चौथा हम बहुत अधिक मात्रा में पानी बर्बाद करते हैं। लेकिन हम पानी बना नहीं सकते हैं, सिर्फ बचा सकते हैं। इसलिए पानी चाहिए तो बंद किजिए पानी को व्यर्थ में बहकर बर्बाद होने से।

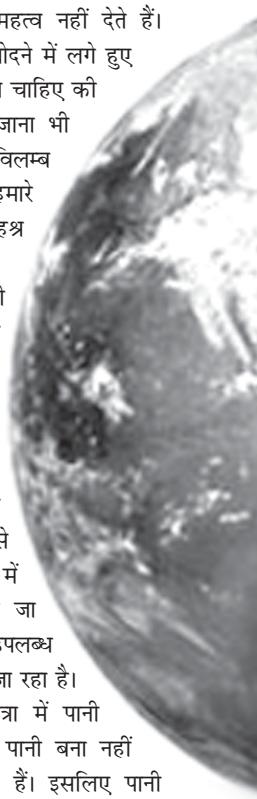

सारी दुनियों में जल संकट की गंभीर स्थिति को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ को 1993 में 22 मार्च को ''विश्व जल दिवस'' घोषित करना पड़ा था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2010 में स्वच्छ जल और सफाई मनुष्य का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया। पानी की कमी को लेकर ऐसी भयावह स्थिति में आपके द्वारा बचाया गया पानी का हर बूंद अनमोल है। जरा सोचिए क्या आपने कभी पानी बचाने की कोशिश की है? यदि नहीं तो अभी से शुरू कर दिजिए।

★ जल संरक्षण के सरल व कारगर उपाय :-

☞ फिलहाल देश की आधी से अधिक कामकाजी आबादी खेती किसानी से जुड़ी हुई है, जिसमें सिंचाई की अहम भूमिका है। हमारे देश में उपलब्ध जल संसाधनों का 90 फिसदी पानी सिंचाई में इस्तेमाल होता है, जो कि पूरी दुनियां में सर्वाधिक है। मसलन इजरायल में सलाना औसतन 10 सेमी से भी कम वर्षा होती है। इसके बावजूद वह अनाज का निर्यात करता है। दूसरी ओर भारत में सलाना 100 सेमी से भी अधिक वर्षा होती है, फिर भी हमें सिंचाई के लिए पानी की कमी पड़ जाती है। इसलिए हमें खेती में पानी की खपत कम करने के लिए इजरायल की तरह सुक्ष्म सिंचाई प्रणाली जैसे द्वीप सिंचाई प्रणाली अपनानी चाहिए।

☞ बरसात प्रारंभ होने के पहले खेतों को समतल करने के बाद खेतों के मेड़ों को अपेक्षाकृत ऊँचा व मजबूत बनाकर बारिस के पानी को बेकार बहकर निकल जाने से बचाया जा सकता है। गांवों में औसतन जितनी वर्षा होती है, यदि उसका महज 15 फिसदी ही सहेज लिया जाये तो वहां सिंचाई से लेकर पेयजल की सारी जरूरतें पूरी हो सकती है। खेतों के मेड़ों पर पेड़ लगाकर जलौढ़ को रिर्चाज किया जा सकता है। जलौढ़ का मतलब भू-जल का स्त्रोत, जिसमें पानी भरा जाता है।

☞ अनुमान है कि भारत में वर्षा सलाना औसतन 100 सेमी से भी अधिक होती है। जिससे 4 हजार बीसीएम (बीलियल क्यूबिक मीटर) यानि 4 हजार अरब घन मीटर पानी मिलता है। जिसमें से 1953 अरब घन मीटर पानी बहकर नदियों में चला जाता है। इसलिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग के द्वारा वर्षा जल अवश्य सहेजे। मसलन कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू की सरजापुर रोड स्थित रियायशी कॉलोनी 'रेम्बो ड्राइव' के 250 घरों में पानी की सप्लाई नहीं थी। लेकिन आज यह कॉलोनी पानी के मामले में आत्म-निर्भर है। वर्षा जल संग्रहण के लिए हर घर में एक रिचार्ज कुंआ बनाया गया है। स्ट्राम वाटर ड्रेनेज बनाया गया है। अब कॉलोनी वाले जितना पानी धरती से लेते हैं, उतना पानी संचयन के जरीए धरती में वापस लौटा भी देते हैं।

☞ हर हालत में तालाबों को पाटने से रोकना होगा। तालाबों, नदियों तथा झीलों के अतिक्रमण पर रोक लगानी होगी। इसके लिए सरकार को सख्त कानून बनाने चाहिए और उसका सख्ती से कार्यान्वयन भी करना चाहिए।

☞ जल संरक्षण के लिए जल स्त्रोंतों के समुचित रख-रखाव पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके लिए जर्जर और क्षतिग्रस्त हो गए तालाबों और कुंओं की सही समय पर मरम्मत करानी होगी। जिन तालाबों और कुंओं की तलहट्टी में जमी गाद को वर्षों से नहीं निकाली गई है, उनकी सक्रियता पर प्रतिकूल असर पड़ गया है। इसलिए ऐसे तालाबों और कुंओं से गाद निकलवानी होगी। ऐसा करने से मृत पड़े तालाब और कुंए जिंदा हो जायेंगे।

☞ लगातार बढ़ती आबादी, शहरीकरण व औद्योगिकरण के विस्तार के चलते जंगलों और वृक्षों की अंधाधूंध कटाई से भूमिगत जल स्तर पर में लगातार कमी होती जा रही है। इसलिए लगातार वृक्षारोपण कर भू-जल के स्तर को कम होने यानि नीचे होने से बचाना होगा।

☞ अंधाधूंध भू-जल के दोहन को संख्त कानून बनाकर तथा उसका सख्ती से क्रियान्वयन कर नियंत्रित करना होगा।

☞ लगातार बेतहाशा बढ़ती आबादी के चलते भू-जल की खपत में भारी इजाफा होता जा रहा है। इसलिए सख्त कानून बनाकर और उसका क्रियान्वयन कर लगातार बेतहाशा बढ़ती आबादी को नियंत्रण में रखना होगा।

☞ घर के अंदर पाईप या नल की लिकेज को दुरूस्त रखें, क्योंकि लिकेज के कारण टपकते नल से तीन घंटे में एक लीटर से ज्यादा पानी बेकारा बह जाता है। इसलिए घर में जहां कही भी नल लिक करे, उसे तुरंत ठीक करवाएं। पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद तुरंत बंद कर दें।

☞ सार्वजनिक पार्कों, मंदिरों, अस्पतालों, रेलवे स्टेशनों आदि जगहों में लगी नल की टोटी प्राय: खुली या टूटी रहती है, जिसके चलते प्रति दिन हजारों लीटर पानी बेकार बह जाता है। लोगों में जागरूकता लाकर ऐसा होने से रोका जा सकता है। पानी अनमोल प्राकृतिक संसाधन है, इसे

बेकार बर्बाद न होने दे।

☞ ब्रश करते समय यदि वाश वेशिन का नल खुला है तो एक बार में चार से पांच लीटर पानी बेकार बह जाता है। इसलिए ब्रश के दौरान नल को बंद रखे।

☞ सेविंग करते समय नल खुला छोड़ने से पांच से सात लीटर पानी बर्बाद हो जाता है, इसलिए मग में पानी लेकर सेविंग करे।

☞ नहाते समय सावर (झरने) का इस्तेमाल न करे और यदि करे भी तो कम से कम करे। दरअसल नहाते समय सावर का इस्तेमाल करने पर सावर के नीचे से जल्दी हटने का मन नहीं करता है। नतीजा आदमी कुछ ज्यादा देर तक स्नान करते रहता है। इसलिए सावर के बजाय बाल्टी से नहाने पर पानी की खपत बहुत ही कम हो जाती है। नहाने के लिए बाथ टब का इस्तेमाल बिल्कुल ही नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके इस्तेमाल से एक बार स्नान करने में कम से कम 300 लीटर पानी खर्च हो जाता है।

☞ नल के नीचे शब्जी, फल और अनाज न धोंए। इसके बदले बाल्टी या डेकची या पतीला में पानी लेकर इन चीजों को धोने से पानी की खपत बहुत कम हो जाती है। शब्जियों और फलों को धोने में इस्तेमाल किए गये पानी का इस्तेमाल पेड़-पौधों को सिंचने में करें।

☞ नल के नीचे बर्तन धोने के बदले बाल्टी या टब का इस्तेमाल करने पर चार-पांच लोगों के परिवार में रोजाना 20 से 25 लीटर पानी की बचत होती है।

☞ वाशिंग मशीन में दो जोड़ा कपड़ा धोएं या दस जोड़ा, पानी उतना ही लगता है। इसलिए वाशिंग मशीन का उपयोग तभी करे जब एक साथ बहुत से कपड़े धोने हो। ऐसा करके चार-पांच आदमी का परिवार हर महीने 4500 लीटर पानी बचा सकता है। फिर ऐसे वाशिंग मशीन उपयोग में लाए, जिससे कम से कम पानी के इस्तेमाल द्वारा कपड़ों की धुलाई की जाती है।

☞ शौचालय में बड़ी आकार वाली टंकी लगे फ्लश से एक बार में 8 लीटर पानी और छोटे आकार वाली लगे टंकी के फ्लश से एक बार में 5 लीटर पानी की खपत होती है। लेकिन अब ऐसा कमोड निकल गया है कि एक बार में सिर्फ एक लीटर पानी की खपत होती है। इसलिए शौचालय में इसी आधुनिक कमोड का इस्तेमाल करे और पुराने कमोड को हटाकर उसकी जगह इसी आधुनिक कमोड को लगवा दे। अर्थात् अब सिर्फ आधुनिक फ्लश का इस्तेमाल करे, जिसमें पानी की खपत बहुत कम होती है। इससे चार-पांच आदमी के परिवार में प्रतिदिन 25 से 30 लीटर पानी की बचत होती है।

☞ गीजर से गर्म पानी निकालते समय पहले ठंढ़ा पानी आता है, जिसे आमतौर पर लोग व्यर्थ बहा देते हैं। ऐसा न करें। ऐसे ठंडे पानी को अलग से बाल्टी में जमा कर लें और जरूरत के मुताबिक दूसरी जगह इस्तेमल करें।

☞ एक कार को एक बार पाईप से धोने में 150 लीटर पानी खर्च हो जाता है, जबकि बाल्टी में पानी लेकर धोने से महज 20 लीटल पानी खर्च होता है, इसलिए कार एवं बाईक को धोने के लिए पानी को बाल्टी में लेकर इस्तेमाल करें।

☞ जो लोग अपने घर में लॉन के चारों ओर फूल व खूबसूरत पौधों की बागवानी करते हैं, उन्हें पानी के पाईप के बजाए झरने वाला वाटर कैन से पौधे को सिंचना चाहिए। ऐसा करने पर पानी की बहुत अधिक बचत होती है।

☞ पानी साफ करने वाले आर.ओ. मशीन से एक लीटर पानी साफ करने में 3 से 4 लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। इसलिए आर.ओ. से पानी साफ करने के दौरान बेकार हो गए व्यर्थ पानी का इस्तेमाल पेड़-पौधों को सिंचने, कार, बाईक, बर्तन और ट्वायलेट में इस्तेमाल करे।

☞ एक ए.सी. को चलाने में रोजाना 15 लीटर पानी निकलता है, इसलिए ए.सी. से निकले पानी को बेकार बहने के बजाए इकट्ठा कर जरूरत के मुताबिक दूसरी जगह इस्तेमाल करें।

☞ हर घर, होटल, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, दफ्तर आदि जगहों पर पानी की मीटर लगवाएं और पानी का बिल भरे। ऐसा करने पर पानी की बर्बादी पर ब्रेक लग जायेगा।

☞ ध्यान रहे पानी का इस्तेमाल दो ही जगहों पर सबसे ज्यादा होता है- बाथरूम और किचेन में। इसलिए पानी बचाने के लिए उपयुक्त उपायों में से कुछ बहुत ही प्रमुख उपायों को कागज पर टाइप कराकर बाथरूम और किचेन में ऐसे स्थानों पर चिपका दें, जहां आपकी नजर अपने आप चली जाती है। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

जमीन की नमी व उपजाऊ मिट्टी के संरक्षण का नायाब तरीका है खेतों को समतल करना

● ललन कुमार प्रसाद

यदि आपका खेत ढ़ालवा या उबर-खाबर है तो उसे बरसात के पहले एकसार समतल अवश्य कर लिजिए, क्योंकि खेतों को एकसार समतल करने का यही सही समय है, अन्यथा आपके खेतों की उर्वरा शक्ति लगातार कमजोर होती चली जायेगी और अंतत: आपके खेत, खेती योग्य नहीं रह जायेंगे। लेकिन, आमतौर पर हमारे किसान भाई इस तथ्य से अंजान हैं। वे नहीं जानते हैं कि खेतों को उबर-खाबर या ढ़ालवा रहने देने से क्या-क्या हानियां होती है और उन्हें एकसार समतल कर देने पर कौन-कौन से लाभ पहुंचते हैं। इसलिए वे खेतों को एकसार समतल बना लेने की ओर ध्यान नहीं देत हैं। किन्तु उनकी यह धारणा बहुत ही भ्रामक है।

★ असमतल जमीन की हानि :-

1. असमतल जमीन की ढ़लान के कारण वर्षा का पानी खेतों में सूखने के बजाय ढ़लान से होकर बाहर निकल जाता है, जिससे फसलों को बढ़ने के लिए जमीन में पर्याप्त पानी (नमी) नहीं मिल पाता है और इसलिए पैदावार में भारी कमी हो जाती है। दरअसल, ढ़लान के चलते पानी खेतों में बगैर रूके ही तेजी से बाहर निकल जाता है। नतीजा जमीन में नमी की बहुत ही कम मात्रा संग्रहित हो पाती है, जिसका फसलों पर बड़ा ही विपरित प्रभाव पड़ता है। ऐसा इसलिए कि भारत में रबी फसल पूरी तरह जमीन में संरक्षित नमी पर निर्भर करता है, क्योंकि हमारे देश में सिंचाई की व्यवस्था बहुत ही दयनीय है। सच्चाई तो यह है कि अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के किसान भाईयों को भी सिंचाई की दैनिक व्यवस्था के चलते इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

2. भारी वर्षा के कारण ढ़लान वाली जमीन से ढ़लान के चलते वर्षा का पानी तेजी से बहकर खेत से बाहर निकलता है तो अपने साथ व खेत की ऊपरी सतह की उपजाऊ मिट्टी को भी बहाकर ले जाता है। इतना ही नहीं, वर्षा का पानी अपने साथ जमीन की ऊपरी सतह के ठीक नीचे की सतह की मिट्टी के पोषक तत्वों को भी धीरे-धीरे घुलाकर बहा ले जाता है। नतीजा खेतों के उत्पादन क्षमता में भारी कमी आ जाती है। शुरू-शुरू में तो खेत की ऊपरी सतह की मिट्टी के बहाव के कारण होने वाला भूमि कटाव इतना धीमा होता है कि इसका पता भी नहीं चलता। लेकिन धीरे- धीरे भूमि के कटाव की रफ्तार उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती है। फलस्वरूप कुछ ही वर्षों के बाद जमीन में खाईयां दिखने लगती है, जिसके चलते खेत टुकड़ों-टुकड़ों में बंट जाते हैं और अंतत: खेती योग्य नहीं रह जाते। इस तरह किमती और उपजाऊ जमीन नष्ट हो जाती है।

3. जमीन उबर-खाबर होने से खेतों में पानी का वितरण समाना रूप से नहीं हो पाता है। ऊँची जमीन में कम या बिल्कुल ही नहीं और नीची जमीन में अधिक पानी इकट्ठा हो जाता है। नतीजा खेत की सिंचाई अधिक करनी पड़ती है। फिर भी फसल के उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

4. जमीन असमतल होने से बोआई एक सी गहरी नहीं की जा सकती है। कुछ स्थानों पर बीज गहरे दब जाते हैं तो कुछ स्थानों पर सतही रह जाते हैं। इससे भी पैदावार में भारी कमी हो जाती है।

जमीन उबर-खाबर होने से फसल लगे खेत में निराई-गोराई करने में भी कठिनाई होती है, जिसके चलते इस कार्य को तेजी से नहीं किया जा सकता और खर्च भी ज्यादा पड़ता है।

✯ एकसार समतल जमीन के लाभ :-

1. जमीन को समतल करना ही उपरोक्त सभी समस्याओं का एकमात्र निदान है। जमीन को समतल करने से सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि वर्षा का पानी जमीन में संग्रहित होने के साथ-साथ खेतों की ऊपरी सतह की उपजाऊ मिट्टी वर्षा के पानी के साथ बह जाने से बच जाती है। नतीजा, खराब से खराब जमीन से भी अच्छी उपज ली जा सकती है। मिट्टी का बहाव रूक जाने से मिट्टी का कटाव भी रूक जाता है, जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों की रक्षा होती है और जमीन नष्ट होने से बच जाता है।

2. खेतों में पानी का वितरण समान रूप से होता है तो वर्षा और सिंचाई या दोनो पानी का सही उपयोग कर सकते हैं। साथ ही सिंचाई में लागत भी कम आती है।

3. जमीन समतल होने से फसल लगे खेत में खर-पतवार हटाने हेतु निराई-गोराई में आसानी होती है, जिससे इस कार्य में तेजी आ जाती है और इसलिए खर्च भी कम पड़ता है।

✯ खेतों को एकसार समतल करने के उपाय :- खेतों के समतलीकरण हेतु ग्रीड पद्धति अपनानी चाहिए। इस पद्धति में खेतों की लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार मेड़ बनाकर उन्हें उपयुक्त आकार के चौकोर टुकड़ों में बांट दिया जाता है, उसके बाद बक्स्क्रेपर, डम्पीलेवल और लकड़ी का पटेला नामक यंत्रों की सहायता से समतलीकरण का कार्य पूरा किया जाता है। जरूरत पड़ने पर सीधी खुदाई करके या मिट्टी भरकर भी खेतों को एकसार समतल करने का कार्य कर सकते हैं।

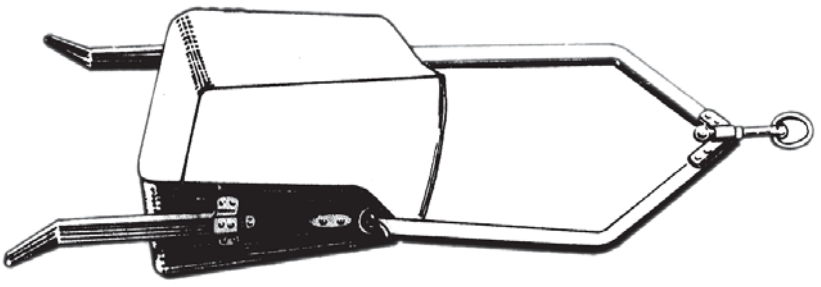

बकस्क्रेपर नामक कृषि यंत्र की मदद से उबर-खाबर जमीन को सरलता से और सस्ते में एकसार समतल किया जा सकता है। बकस्क्रेपर द्वारा खेत की उठी हुई मिट्टी खुरच ली जाती है, जो इसी यंत्र के अंदर इकट्ठी होती चली जाती है। फिर मिट्टी से भरे इस यंत्र को वहां ले जाते हैं, जहां मिट्टी भरने की जरूरत होती है और मिट्टी को वही गिरा देते हैं। यदि बकस्क्रेपर को काम में लाने के पहले खेत की जुताई कर दी जाये तो खेत को एकसार समतल करने में अधिक सहुलियत होती है।

खेतों को समतल करने के कार्य में डम्पीलेवल नामक कृषि यंत्र की सहायता ली जाती है। एक जोड़ा बैल की मदद से चलाया जाने वाले इस यंत्र से उबर-खाबर जमीन को अच्छी तरह से एकसार समतल किया जा सकता है। खेतों की बार-बार जुताई करके और तब लकड़ी का पटेला चलाकर जमीन को कुछ हद तक समतल

किया जा सकता है। लेकिन जमीन को समतल करने की यह विधि कोई खास व्यवहारिक नहीं है।

✯ जमीन को एकसार समतल करने से जुड़ी सावधानियाँ :-

1. खेत को समतल करने के पहले मेड़ों की मरम्मत करके उन्हें मजबूत कर देना चाहिए। इससे बरसात में पानी का बहाव तो रूकता ही है, साथ-साथ मिट्टी का बहाव भी रूक जाता है। अर्थात् पानी तो संग्रहित होती है, मिट्टी की भी रक्षा होती है। नतीजा, फसल के लिए जरूरी पानी खेतों में संरक्षित रखने में मदद मिलती है। ऐसे खेतों में जमा पानी को अधिक से अधिक समय तक जमीन के अंदर ही अंदर रिस-रिसकर चले जाने का मौका मिलने के चलते होता है। खेतों में पानी के नालियों को मेड़ के साथ-साथ रखना चाहिए।

2. बोआई कें पहले खेतों को समतल करने का काम शुरू कर दिया जाना चाहिए। जमीन को समतल करते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि जमीन को पूरी तरह से समतल करने के बजाय बहुत ही हल्की सी ढ़ाल बनाये रखे। ऐसा करने से सिंचाई तथा जल-निकास के कार्य में सुविधा होती है।

3. जमीन को समतल करने हेतु मिट्टी की वास्तविक कटाव शुरू करने से पहले पूरी जमीन की उपजाऊ मिट्टी को खेत के एक कोने में इकट्ठा कर देना चाहिए और तब जमीन को समतल करने के बाद उस उपजाऊ मिट्टी को समान रूप से पूरी जमीन पर बिखेर देना चाहिए।

4. इस तरह हम सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि जमीन समतल होने से हमारे किसान भाई न केवल वर्षा एवं सिंचाई के पानी का भरपूर लाभ ले सकेंगे, वरन अपने खेतों के उपजाऊ मिट्टी को बचाने तथा जमीन को नष्ट होने से बचाने में भी सक्षम हो जायेंगे।

✯ चमत्कारिक है मेड़ों को वृक्षों से सुसज्जित किया जाना :- भारत एक कृषि प्रधान गांवो का देश है और किसान गांवों में रहते हैं, जहां खेत मेड़ों के द्वारा टुकड़ों-टुकड़ों में बंटा होता है। खेत के मेड़ों पर ऐसे पौधे लगाने चाहिए जो चार-पांच वर्षों में वृक्ष का रूप ले लें। मेड़ों पर 6-6 फीट की दूरी पर शीशम का वृक्ष लगाना चाहिए। ऐसा करने पर भारत मकानों तथा फर्नीचरों के लिए टिकाऊ व मजबूत लकड़ी का उत्पादन करने वाला दुनियां का सबसे बड़ा देश बन जायेगा, जिसे दुनियां भर में निर्यात करके किसानों

के साथ-साथ देश भी मालो-माल हो जायेगा। अपने देश में मकानों और फर्नीचरों के लिए लकड़ी की कोई कमी नहीं रह जायेगी। यदि मेड़ के दोनो तरफ एक ही व्यक्ति का खेत हो तो मेड़ों पर आम, लिची, अमरूद, कदम, सेव, जामुन, नासपाती आदि के फलदार वृक्ष दस-दस फीट की दूरी पर लगाने चाहिए। ऐसा करने पर भारत आम, लिची, अमरूद, कदम, सेव, नासपाती आदि फलों का उत्पादन करने वाला दुनियां का सबसे बड़ा देश बन जायेगा। भारत के लोगों के लिए विविध उम्दा फलों की कोई कमी नहीं रहेगी। इन फलों का निर्यात कर देश और किसान दोनो ही मालोमाल हो जायेंगे। ऐसा करने में सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि इसके लिए अलग से एक इंच जमीन का इंतजाम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बस सिर्फ मेड़ों की जमीन का उपयोग भर कर लेना होगा। खेतों के मेड़ों पर वृक्ष लगाने के फायदे अनंत हैं :-

1. वृक्षों की जड़ें मिट्टी को बांधकर रखती है, जिससे मेड़ मजबूत व टिकाऊ बने रहते हैं। उन्हें बार-बार मरम्मत करने की जरूरत नहीं पड़ती है।

2. वृक्षों की जड़ों में लंबे समय तक पानी संरक्षित करने की क्षमता होती है। यही कारण है कि मेड़ों पर वृक्ष लगाना लंबे समय तक पानी को संरक्षित करने की बहुत ही कारगर तकनीक है।

3. वृक्षों से जमीन पर गिरी पत्तियां, छोटी-छोटी टहनियां, फल-फूल आदि अपघटित होकर (सड़कर) मिट्टी को अकार्बनिक व कार्बनिक पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन, पोटैशियम, फास्फोरस आदि के यौगिकों के रूप में पोषक तत्व प्रदान करते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ती है और उसकी छिद्रिलता भी बढ़ जाती है। इस कारण वर्षा से प्राप्त पानी रिस-रिसकर अधिक से अधिक मात्रा में जमीन के अंदर चला जाता है। जिससे भू-जल का स्तर ऊँचा उठता है।

4. पेड़-पौधों के कारण ही हवा में ऑक्सिजन की मात्रा 21 फिसदी बनी रहती है, जिसकी बदौलत मानव सहित समस्त प्राणी जीवित है। दरअसल, प्रकाश संस्लेशन की प्रक्रिया के द्वारा पौधे वायुमंडल से कार्बन डायऑक्सइड लेते हैं और उसे अपने लिए भोजन में परिवर्तित कर लेते हैं तथा वायुमंडल में ऑक्सिजन छोड़ते हैं। एक सर्वेक्षण द्वारा पाया गया है कि एक हेक्टेयर वन क्षेत्र द्वारा प्रतिवर्ष वायुमंडल से 3.7 टन कार्बन डायऑक्साईड अवशोषित की जाती है और बदले में 2 टन ऑक्सिजन वायुमंडल में छोड़ी जाती है। इस तरह पेड़-पौधे समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु दोहरी भूमिका निभाते हैं- एक वायुमंडल में हानिकारक कार्बन डायऑक्साईड की मात्रा घटाकर तथा दूसरा लाभकारी ऑक्सिजन की मात्रा बढ़ाकर हवा की प्राकृतिक रचना में संतुलन को बरकरार रखते हैं।

5. वृक्ष अपनी भौतिक संरचना की बदौलत मिट्टी की हिफाजत करने में अहम भूमिका निभाते हैं। वृक्षों के वितान या छतरी वर्षा व भूमि के बीच एक क्षैतीज आड़ बना देते हैं, जिसके कारण वृक्षों के बूंदों का संघात मिट्टी पर बहुत कमजोर पड़ जाता है। जिससे मिट्टी के संरक्षण में बहुत ही सहायता मिलती है। वर्षा के चलते होने वाली मिट्टी के क्षरण में बहुत ज्यादा कमी आ जाती है। नतीजा आकाश से जमीन पर गिरती वर्षा की असंख्य बूंदों की प्रहार के चलते होने वाली मिट्टी के कटाव में बहुत अधिक कमी आ जाती है, अर्थात् खेत बर्बाद होने से बच जाता है।

6. पूरे देश में फैले वृक्षों से सुसज्जित मेड़ बादलों को समरूम से बरसने के लिए मजबूर कर देंगे। नतीजा झमाझम बारिश के बजाए रिमझिम बारिश होगी। फलस्वरूप बाढ़ और सूखा दोनो से हमें बहुत हद तक निजाद मिल जायेगा।

7. वृक्ष जैव विविधता बरकरार रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। मसलन वृक्ष पक्षियों को आश्रय देते हैं।

8. वृक्षों के अनगिनत पत्ते ग्लोवल वार्मिंग पर कारगर रूप से ब्रेक लगा देते हैं, क्योंकि यह वातावरण को शीतल बनाए रखने में बहुत ही कारगर भूमिका निभाते हैं। इससे वर्तमान में बदले हुए मानसून के ट्रेंड को पहले जैसी अवस्था में पहुंचा देने में उल्लेखनीय मदद मिलेगी।

9. मेड़ों पर वृक्ष लगाने पर अलग से जमीन का इस्तेमाल किए बगैर देश के वन क्षेत्र में बहुत ज्यादा इजाफा हो जायेगा। जिससे देश के बिगड़े पर्यावरण में आमूल सकारात्मक परिवर्तन हो जायेगा। हमारा देश पूरी दुनियां में पर्यावरण संरक्षण के मामले में शीर्ष पर पहुंच जायेगा।

10. अनाजों के उत्पादन में भी हमारा देश शीर्ष पर पहुंच जायेगा, क्योंकि कृषि का भविष्य उपजाऊ मिट्टी और सतही और भू-जल पर निर्भर करता है और ये तीनों ही हमें वृक्ष से मिलते हैं। वृक्ष उपाजाऊ मिट्टी के कारखाने हैं और सतही व भू-जल के संरक्षण में बहुत ही कारगर भूमिका निभाते हैं।

11. मेड़ों पर वृक्ष लगाने से उस समय भी खेत हरियाली से भरा-पूरा दिखाई पड़ेंगे, जब खेतों में से तैयार फसलों को काट लिया गया होगा। अप्रैल (वैशाख) और मई (जेष्ठ) में भी किसान वृक्षों की शीतल छाया में काफी राहत महसूस करेंगे और आराम भी फरमा सकेंगे। भयंकर गर्मी के ऐसे मौसम में जब खेत विरान दिखते हैं, उस समय भी मेड़ों पर लगे वृक्षों के द्वारा प्रदान की गई हरियाली के बीच मनमोहक दिखाई पड़ेंगे। ऐसी भयंकर गर्मी में भी हमारे किसान भाई हरियाली और शीतलता का भरपूर लुफ्त उठा पायेंगे।

इस तरह हम इस निष्कर्ष पर पहुंच जायेंगे की खेतों को एकसार समतल बनाने और मेड़ों पर वृक्ष लगाने का लाभकारी असर निश्चित रूप से चमत्कारिक होगा।

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

बिहार के सीमांचल से कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी का सफर

● सुमित राज यादव

किसी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व क्या है, कोई अर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के व्यक्ति जब शिक्षा के माध्यम से स्वयं को तथा अपने परिवार को पिछड़ेपन की दल-दल से निकालता है, बेहतर जान सकता है। वह यह कभी नहीं चाहता कि उनकी अगली पीढ़ी कुछ ऐसे कार्यों में व्यस्त होकर अपनी बहुमूल्य समय को बर्बाद करें जो कतई लाभकारी न हो।

आपने अवसर, सोशल मीडिया पर न्यूज फीड से गुजरते हुए या फिर किसी सार्वजनिक मंच पर ऐसे व्यक्ति को देखा होगा, जो बार-बार सुरजापुरी युवाओं को शिक्षा के प्रति गंभीर होने के लिए प्रोत्सोहित करने का प्रयास लगातार करते रहे हैं। उस शख्सियत का नाम है-डॉ. मुमताज नेय्यर जो कि सीमांचल क्षेत्र की हर वो मुद्दों पर चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो या फिर सामाजिक, आर्थिक, आधारित संरचना की दयनीय स्थिति हो, सरकार तथा स्थानीय प्रशासन की लापरवाही के विरोध में अपनी आवाज बुलन्द करते रहे हैं। सीमांचल क्षेत्र जो कि बिहार के उत्तरी जिलों अर्थात् किशनगंज, अररिया, पूर्णियाँ और कटिहार को सम्मिलित रूप से कहा जाता है। हाँ मुमताज नैय्यर, एक प्रतिष्ठित भारतीय वैज्ञानिक तथा बिहार के सीमांचल क्षेत्र, किशनगंज जिले का एक नौजवान है, जो कि हाल ही में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, जो कि दुनिया के सबसे प्रतिष्ठत विश्वविद्यालयों में से एक है, में अपनी सेवा देने का सुनहरा अवसर मिला है। वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पैथोलॉजी विभाग के इम्यूनोलॉजी डिविजन में रिसर्च एसोसिएट के रूप में शामिल हुए हैं। अपने शोध कार्यों के अलावा, वह विशेष रूप से अपने विभाग के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को भी पढ़ाएंगे।

चूंकि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी जैसी प्रतिष्ठित संस्थान में अपनी सेवाएं प्रदान करना भारतीय विद्वान के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि समझी जाती है। हालांकि, स्वतंत्रता या पूर्व-स्वतंत्रता के पश्चात्, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करना भारतीय अभिजात वर्ग के परिवारों के बच्चों के लिए एक पसंदीदा मंतव्य रहा है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध भारतीय पूर्व छात्रों में से कुछ इस प्रकार है:

प्रतिभावान भारतीयों गणितज्ञ-श्रीनिवासन रामानुजन 1913 से 1918 के दौरान ट्रिनिटी कॉलेज में रहे और वह कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के ट्रिनिटी कॉलेज के फेलो के रूप में चुने जाने वाले पहले भारतीय थे।

भारत के तीन प्रधानमंत्री-पंडित जवाहरलाल नेहरू 1907 और 1910 के दौरान ट्रिनिटी कॉलेज में रहकर अपनी शिक्षा पूरी की। राजीव गाँधी इम्पीरियल कॉलेज में 1961 और 1964 के दौरान रहकर अपनी शिक्षा पूरी की तथा डॉ. मनमोहन सिंह जो कि 1955 और 1957 के दौरान सेंट जॉन कॉलेज में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी की। प्रसिद्ध हिंदी कवि हरिवंश राय बच्चन जो अपनी सर्वश्रेष्ठ कविता मधुशाला के लिए जाने जाते हैं, 1955-1957 के दौरान सेंट कैथरीन कॉलेज में रहकर शिक्षा प्राप्त की तथा वे कैम्ब्रिज में अंग्रेजी में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करने वाले दूसरे भारतीय थे। डॉ. मुमताज नैय्यर को स्कूली शिक्षा के दौरान औसत प्रदर्शन करने वाले छात्रों में गिना जाता था, लेकिन उन्हें स्वयं पर पूरा भरोसा था कि आगे चलकर उनके परिश्रम एवं लगन का परिणाम बेहतर होगा। बचपन से ही उन्हें विज्ञान विषय में बहुत रूचि थी, लेकिन विज्ञान का मानव जाति को प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान उन्हें तब हुआ जब वह जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में बायोसाइंस की पढ़ाई कर रहे थे। विज्ञान में उनकी रूचि को देखकर उनके शिक्षकों ने उन्हें विज्ञान में ही अपना कैरियर बनाने के लिए प्रेरित किया, फिर वे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखे और एक के बाद एक उपलब्धियों को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहे।

बिहार के किशनगंज जैसे जिले में जहाँ बुनियादी सुविधाएँ-बिजली, सड़क और स्वास्थ्य व्यवस्था का अभाव है, रह रहे अपने परिवार के जीवन स्तर में सुधार लाने की इच्छा उनके मन में बचपन से ही था। उन्होंने रात में अध्ययन के लिए बिजली न होने के कारण किरोसीन लैंप का उपयोग किया करते थे, जो कि आमतौर पर उस क्षेत्र के सभी ग्रामीणों के लिए रात्री-समय में उजाला का साधन के रूप में एकमात्र विकल्प था। उन्होंने स्कूली शिक्षा के दौरान कक्षा 3 से 8 वीं तक अध्ययन सामग्री के अभाव में कारण अपने मित्रों से पुस्तकें मांग कर पढ़ाई की। जामिया मिलिया इस्लामिया से स्नातक की पढ़ाई करने के दौरान अपने जीवन-यापन के लिए उन्होंने होम-टयूशन देकर रूपये कमाने की शुरूआत की थी। फिर बाद में सहायता राशि के रूप में उन्हें अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय वक्फ बोर्ड तथा अन्य संगठनों से जामिया मिलिया इस्लामिया और जामिया हमदार्द, नई दिल्ली से स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान छात्रवृति मिली जिसका आभार वह आज भी किया करते हैं।

डॉ. मुमताज नैय्यर अपने परिवार के सदस्यों का उनकी पढ़ाई के खारित बलिदानो को कभी नहीं भूले, विशेष रूप से अपने बड़े भाई जैनुल अबेदीन को, जिन्होंने अपने छोटे भाइयों, मुश्ताक अहमद और मुमताज नैय्यर की शिक्षा हेतु खर्चों के लिए पैसे कमाने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी थीं। उनके बड़े भाई मुश्ताक अहमद ने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् वर्तमान में दिल्ली के कनॉट प्लेस में स्थित एक प्रतिष्ठित रेस्तरां में प्रबंधक के रूप में कार्यरत हैं, जबकि सबसे बड़े भाई अबुल कसीम जो ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट की पढ़ाई पटना विश्वविद्यालय से की वर्तमान में बिहार के हाजीपुर स्थिति जवाहर नवोदय विद्यालय में पी.जी.टी. शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

जैविक खोज के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्टता के अलावा डॉ. मुमताज नैय्यर सीमांचल क्षेत्र के लोगों को शिक्षा, बुनियादी सुविधाओं और सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों के प्रति जागरूक बनाने के लिए भरसक प्रयास करते रहे हैं। सोशल मीडिया तथा संचार के अन्य सेवाओं के माध्यम से, वह लगातार विभिन्न सामाजिक, आर्थिक मुद्दों पर तथा सरकार का सीमांचल क्षेत्र में विकास के प्रति सौतेला व्यवहार के खिलाफ सरकार तथा संबंधित अधिकारी एवं जनप्रतिनिधियों की कार्य-प्रणाली पर सवाल उठाते रहे हैं। इसके अलावा क्षेत्र के युवाओं के लिए जो प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बेहतर कैरियर चुनने की दिशा में मार्गदर्शन के लिए, डॉ. मुमताज नैय्यर हमेशा उपलब्ध रहते हैं।

नोबेल पुरस्कार विजेता था, भारतीय अर्थशास्त्री, अमर्त्य सेन 1957-1963, 1998-2004 के दौरान ट्रिनिटी कॉलेज में पूर्वस्नातक और स्नातक छात्र के रूप में रहे तथा बाद में एक शिक्षक के रूप मे भी अपनी सेवाएं देने लगे।

अन्य उल्लेखनीय पूर्व छात्रों में सरोजनी नायडू, जे.सी. बोस, होमी भाभा, भारतीय सांख्यिकी संस्थान के संस्थापक पी.सी. महालनोबिस, कलकत्ता उच्च न्यायालय के विख्यात अधिवक्ता नूरूल होदा, राजनेता और राजनयिक रघुनाथ परांजपी, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के पूर्व राष्ट्रपति नागेन्द्र सिंह, भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष विक्रम साराभाई और कोलंबिया विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर जगदीश भगवती।

पिछले कुछ सालों में डॉ. मुमताज नैय्यर

शिक्षा तथा शोध जगत में नए कीर्तिमानों को हासिल करते हुए न केवल अपने सीमांचल क्षेत्र को गौरवांवित कर रहे हैं, बल्कि बिहार राज्य का नाम वैश्विक मंच पर लाने में अपना योगदान दे रहे हैं। शिक्षा और शोध में उनकी उत्कृष्टता इस क्षेत्र में रूचि रखने वाले युवाओं के लिए प्रेरणादायक साबित हो सकती है। डॉ. मुमताज नैय्यर की शैक्षणिक उपलब्धियां इस प्रकार है:

★ **प्रारंभिक शिक्षा** - अपने गांव में मकतब और मदरसा में रहकर पढ़ाई की।

★ **माध्यमिक शिक्षा** - ठाकुरगंज हाई स्कूल, ठाकुरगंज फिर बाद में मुस्लिम साईस कॉलेज पटना से इंटरमीडिएट की परीक्षा (1996-1998) पास की।

★ **स्नातक की डिग्री** - जामिया मिलिया इस्लामिया सेंट्रल यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से बी. एस.सी. बायोटेक्नोलॉजी की शिक्षा (2001-2004) पूरी की।

★ **स्नातकोत्तर** - एम.एस.सी. बायोटेक्नोलॉजी, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली (डीम्ड युनिवर्सिटी) से एम.एस.सी. बायोटेक्नोलॉजी की परीखा (2004-2006) पास की।

★ **पी.एच.डी.** - फिजियोलॉजी नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस, पुणे से पी.एच.डी. (2007-2012) की शिक्षा हासिल की।

★ **पोस्ट-डॉक्ट्रेट रिसर्च** - साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय, यूनाईटेड किंगडम से पोस्ट-डॉक्टरेट रिसर्च की पढ़ाई पूरी की।

पेप्टाइड एंटागोनिज्म और पेप्टाइड मध्ययस्थ एन.के. सेल सक्रियन (2012-2013)।

प्राकृतिक किलर सेल रिसेप्टर KIR2DS2 द्वारा पैथोजेनिक फ्लैविवायरस की पहचान (2013-2018),

★ **रिसर्च एसोसिएट** - वर्तमान में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यूनाईटेड किंगडम में रिसर्च एसोसिएट के रूप में कार्यरत हैं।

मेडिसीन के क्षेत्र में डॉ. मुमताज नैय्यर की उपलब्धि जिका, डेंगू और हेपेटाइटिस-सी जैसे वायरस के कारण होने वाली जानलेवा बीमारियों जो कि दुनिया भर के लाखों लोगों को प्रभावित करते हैं, के इलाज के लिए टीकों का खोज बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उनके शोध कार्य को अमरीका की प्रतिष्ठित जर्नल, साइंस एण्ड इम्यूनोलॉजी में तथा जर्नल ऑफ इम्यूनोलॉजी एवं ह्यूमन इम्यूनोलॉजी ने प्रकाशित किया है। इंडिया टुडे के साथ साक्षात्कार में, डॉ. मुमताज नैय्यर ने अपनी खोज के बारे में कहा कि ''हमारा निष्कर्ष (खोज) 'वायरस' से उत्पन्न होने वाली बीमारियों के चिकित्सा के लिए एक नई दिशा प्रदान करती है, जिसे आसानी से कैंसर चिकित्सा के क्षेत्र में अनुवादित किया जा सकता है। हमारा निष्कर्ष बहुत ही रोमांचक है, लेकिन यह अभी भी शुरूआती चरण में है, और निश्चित रूप से अपने वाले समय में आगे के अध्ययन और नैदानिक परीक्षणों के लिए बहुत ही लाभकारी साबित होगी।

नप में डस्टबिन खरीद मामले में घोटाला

● **धर्मेन्द्र सिंह**

किशनगंज में ईओ रहते हुए विनोद कुमार पर डस्टबिन खरीद मामले में घोटाला करने का मामला उजागर हो चुका है। अभी वे नगर परिषद खगड़िया के कार्यपालक अधिकारी (ईओ) हैं। वहां भी उनके कारनामे एक के बाद एक खुल रहे हैं। ताजा मामला खगड़िया नप में डस्टबिन खरीद का है, जिसमें ईओ ने डस्टबिन सप्लायर एजेंसी को पूरी राशि का भुगतान कर दिया, जबकि नियम के तहत 10 प्रतिशत राशि काटी जानी थी। अधिवक्ता अजिताभ सिन्हा ने लोक शिकायत निवारण कार्यालय में इसकी शिकायत की थी। अब इस मामले में अगली सुनवाई 19 जुलाई को होनी है। ईओ ने गत 7 मार्च को डस्टबिन के लिए आपूर्ति आदेश जारी कर कहा कि आयकर व अन्य कर तथा 10 प्रतिशत सुरक्षित जमा राशि की कटौती के बाद शेष राशि का भुगतान होगा, लेकिन 8 मार्च को आदेश में बदलाव कर नया आदेश निकाला कि टंकन की भूल से आपूर्ति शर्त की क्रम संख्या 7 में 10 प्रतिशत सुरक्षित जमा राशि कटौती की बात अंकित हो गई है, जिसे हटाया जाता है। दूसरा पत्र निकाल 10 प्रतिशित सुरक्षित राशि की कटौती की बात शर्त से हटा दी। वही विनोद कुमार, ईओ, नप खगड़िया कहते है की डस्टबिन की खरीद क्रय समिति और बोर्ड की अनुमति से

की गई है। नील कमल कंपनी के डस्टबिन खरीदे गए हैं, इसमें हाउस बिल्ड दिया जाता है और एक वर्ष की गारंटी रहती है। इसलिए सुरक्षित जमा राशि नही काटी जा सकती है। जिला लोक शिकायत निवारण अधिकारी ने ईओ को दोषी पर कार्रवाई का आदेश दिया है।सवाल है कि ईओ किसके खिलाफ कार्रवाई करेंगे? टेंडर खोलने से लेकर काम आवंटित करने तक हर मामले के लिए ईओ खुद जिम्मेदार होते हैं। जब ईओ ने खुद आदेश में बदलाव किया तो कार्रवाई किस पर करेंगे? अधिवक्ता अजिताभ सिन्हा ने बताया कि डस्टबिन सप्लाई की रेस में कई एजेंसियां थी। एजेंसियों ने 10 प्रतिशत राशि कटौती को ध्यान में रखकर ही टेंडर भरा होगा।टेंडर के बाद आपूर्ति आदेश की शर्त में बदलाव का अधिकार ईओ के पास होता है। यह बदलाव टेंडर से पहले हो सकता है, काम आवंटित होने के बाद नही। जब अन्य एजेंसी टेंडर की रेस से बाहर हो गए और काम आवंटित हो गया तो शर्त में बदलाव कर एक एजेंसी विशेष को लाभ पहुंचाया गया। ●

सेवा स्थायी है तो वेतन स्वतः स्थायी होना चाहिए

● आनन्द प्रकाश पाण्डेय/अशोक तिवारी

सरकार में शिक्षा का अधिकार जैसे महत्वपूर्ण कानून को लागू कर दिया है। लेकिन इसके जदयू में आने वाले नियोजित शिक्षकों को मरहूम रखा है। इससे प्रदेश के तमाम नियोजित शिक्षकों की आर्थिक, मानसिक, सामाजिक पसमांदी है, वह दूर नहीं हो सकती। वर्तमान सरकार ने वायदे तो बहुत किये लेकिन मूलभूत सुविधाओं से इन्हें अलग-थलग रखा है। एक ओर इन शिक्षकों को कोल्हू के बैल की तरह शोषण किया जा रहा है, तो दूसरे तरफ एक ही तरह के कार्य करने के लिए पुराने शिक्षकों को हजार रूपये दिए जा रहे है। क्या यह समान कार्य के लिए समान वेतन जैसे कानून का उल्लंघन नहीं है? बार-बार इस बात का हवाला दिया जाता है कि उनकी नियुक्ति नियमावली निम्न है। आखिर इस भिन्नता का दोषी कौन है? शिक्षक या मौजूदा व्यवस्था?

ध्यातव्य हो संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 का खुला उल्लंघन किया जा रहा है। समान कार्य के लिए समान वेतन पर भी माननीय सवार्वेच्च न्यायालय ने कई बार अपनी स्थिति स्पष्ट कर चुके हैं। जब समयानुकूल नियमावली तथा अन्य सेवा-शर्तो में सुधार हो सकता तो शिक्षक नियमावली 2012 क्या ब्रह्मा की लिखी गई रचना है, जो बदली नहीं जा सकती है। आज नियोजित रूपये मानदेय प्राप्त कर रहे हैं वहीं अन्य शिक्षक हजार ऐसे में वैमनस्यता का भाव स्वाभाविक है। ऐसे में शिक्षा का अधिकार तथा अन्य कानूनों और तुगलकी फरमानों से क्या भला होने वाला है? जब तक दोरंगी नीति का खात्मा नहीं होगा, नियोजितों को सम्मान नहीं मिलेगा तब तक सारी शैक्षिक योजनाएँ और अन्य कानून बेमानी साबित होते रहेंगे? सिफ ऐलान भर कर देने से कि गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए एक संभव प्रयास करेंगे। आखिर कब तक? यह एक यक्ष प्रश्न है। तभी तो स्वयं बिहार विधान परिषद के पूर्व सभापति श्री ताराकांत झा ने भी शिक्षकों को भी उचित सम्मान मिलने की बातें कही थी। करोड़ों नौनिहालों के भविष्य निर्माता ही भूखा रहेगा तो ज्ञान का सागर कैसे पल्लवित - पुष्पित होता रहेगा? यह जमीनी हकिकत कि नियोजित शिक्षक अपने आपको ठगा सा महसूस कर रहे हैं। अपना ज्यादा ध्यान शैक्षिक कार्यो पर न देकर अपने परिवार के भरण-पोषण की घोर चिंता में रहते हैं। ऐसे में सरकार की क्या जिम्मेवारियाँ बनती है? बार-बार दिग्गज शिक्षाविदों द्वारा यह दुहराया जाता रहा है कि शिक्षा का विकास राज्य सरकार की प्राथमिकता में है। प्राथमिकता वाले क्षेत्र में प्रथम कृषि, द्वितीय ग्रामीण सड़कें, तीसरी शिक्षा का दर्जा दिया गया है, जिसमें शिक्षा पर 15054 करोड़ शिक्षा पर खर्च किये जाएंगे। ऐसे में शासन को यह नहीं भूलना चाहिए कि जबतक प्रदेश के नियोजित शिक्षकों की तकदीर नहीं बदलेगी तब तक शिक्षा के स्तर की तस्वीर नहीं बदलेगी। ऐसे में वेतन फिटमेंट कमिटि की सिफारिश की भी मुखालफत की जा रही है जो निन्दनीय है। आज प्रदेश में सभी नियोजित शिक्षकों की जो भूख और आर्थिक झंझावत से जो दारूण दुःखदायी तस्वीर नजर आ रही है वह किस करवट बैठेगी सोंचनीय है। वक्त का तकाजा है कि मौजूदा प्रदेश शासन के खिलाफ आक्रोश व्याप्त है। क्या यह शासन के ढोल के पोल खोलने हेतु पर्याप्त है। मौजूदा शासन ने शिक्षकों की बिरादरी को कई खंडों में बाँटकर शिक्षकों की अस्मिता की विरादरी को कई खंडों में बाँटकर शिक्षकों की अस्मिता पर कठोर कुठाराघातकरने का कार्य किया है, जो दोरंगी नीति का द्योतक है। ऐसे में दिनानुदिन शिक्षक समुदाय 1917 के रूसी क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं।

सर्वविदित है कि जब जनता के सब्र का बाँध टुटता है, तो मजबूत सत्ता की कुर्सी भी बहते देर नहीं लगती। यह आत्मचिंतन का विषय है कि ऐसा क्यों हो रहा है? जिससे शिक्षक

> बिना किसी योग्यता के संधरण के बावजूद एम. पी., एम.एल.ए., मिनिस्टर बनकर महज 5 सालों में ये सभी खुद के लिए जो कर लेते हैं, वे शिक्षक 60 साल की सेवा के पश्चात् भी नहीं कर पाते। ध्य है भारत देश जहाँ अपने हक-हुकूक के लिए सड़क पर आंदोलन और न्यायालय का चक्कर काटना पड़ता है। समयानुसार वेतन के अभाव दर्जनों भर शिक्षकों काल-कलवित हो चुके है। ऐसे सरकार की दोगली नीति के कारण शिक्षकों ने सुप्रीम कोर्ट का दरबाजा खटखटाया है। ऐसे में गुणवतापूर्ण शिक्षा का ख्याब सरकार का अध्र में है और रहेगा। सरकार की इस नीति पारितोषिक शिक्षक समुदाय निःसंदेह देगा।

समुदाय को सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। जिसकी पूर्व से बहाली है, उनको तो समय पर वेतन मिल नहीं रहा है फिर लाखों शिक्षकों को बहाल किया जा रहा है, उन्हें ससमय वेतन कैसे मिलेगा? सरकार हमेशा से संसाधन का रोना रोती आ रही है। शिक्षक नियोजन नियमावली को शिक्षक एवं शिक्षा के हित में व्यापारिक होना चाहिए। सरकार को शिक्षक नियोजन नियमावली के प्रति समक्ष साफ रखनी चाहिए। 2006 में नयी नियमावली बनी और 2012 तक में कई बार नियमावली परिवर्तित हो गई। एक पंचवर्षीय योजना तक भी नियमावली टिक नहीं पायी। नियोजित शिक्षक कान्टेक्ट पर नहीं है। इन शिक्षकों की सेवा 60 वर्षों की है। शिक्षकों की सेवा स्थायी है तो वेतन स्वत: स्थायी होना चाहिए। जब सरकार नियोजित शिक्षकों की नियुक्ति में शैक्षिक व प्रशैक्षणिक योग्यता समान खोजती है, काम के घंटे समान है, तो उसके अनुरूप वेतन चाहते हैं, तो क्या गुनाह करते हैं। यह सरकार के दोयम दर्जे की सोंच का परिचायक है। इस विषम परिस्थिति में सरकार को चाहिए कि नियोजितों की लंबे समय से चली आ रही माँग ''समान कार्य के लिए समान वेतन तथा अन्य माँगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए ताकि करोड़ों नौनिहाल के भविष्य के निर्माता को आर्थिक तंगी, भूख तथा जिल्लत की जिंदगी जीने पर मजबूर न होना पड़े। नियोजित शिक्षकों की स्थिति बयां करने के लिए उपर्युक्त पंक्तियाँ बिल्कुल सटीक प्रतीत होती है। ''कमजोर नहीं है इतने हम सब दुनियाँ को दिखलाएं शिक्षकों की ताकत का अबकी अहसास करायेंगे।●

बहरौली पंचायत का विकास हमारा सपना : अजीत सिंह

● आनन्द प्रकाश पाण्डेय/अशोक तिवारी

पंचायत हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता, सुदृढ़ता और सुव्यवस्था तथा हमारे मृत्युंजयी लोकतंत्र का रक्षा कवच है। किसी भी समुदाय, समाज या राष्ट्र की समृद्धि एवं उन्नति संबंध संस्थाओं के उन अन्तर्तन्तुओं के प्रसार का प्रतिफलन होता है, जिनकी सन्दर्भीय समाज या समुदाय में पूर्णत: पैठ होनी है। पंचायत एक सर्वमान्य संस्था के रूप में प्राचीन काल से ही भारतीय जनमानस में अधिष्ठित रही है। पंचायत हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पहचान

पंचायत हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता, सुदृढ़ता और सुव्यवस्था तथा हमारे मृत्युंजयी लोकतंत्र का रक्षा कवच है। इसकी रक्षा में हमें इसके लिए सदैव तत्पर रहना होगा तब ही जाकर हम उम्मीद की किरण के रूप में आम लोगों के उम्मीदों पर खरे उतर सकते हैं। हर जनप्रतिनिधि का सिर्फ विकास की लक्ष्य होना चाहिए।

अजित सिंह
मुखिया, ग्राम पंचायत राज बहरौली

है। यह हमारी गहन सूझ-बूझ के आधार पर व्यवस्था निर्माण करने की क्षमता का परिचालक है। यह हमारे समाज में स्वाभाविक रूप से समाहित, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता एवं संपूर्ण स्वतंत्रता के प्रति निष्ठा का द्योतक है।

जो मार्गदर्शक होते हैं, उनके पास दूर दृष्टि होती है। वे अपनी धुन के पक्के होते हैं। उनका यही जोश व जूनून दूसरे लोगों की कल्पनाओं को जगा देता है। कोई भी बड़ी उपलब्धि जोश के बिना नहीं होती। दूसरे के सद्गुणों को देखने की कोशिश कीजिए, चापलूसी नहीं कीजिए, सच्चा गुण-विवेचन दीजिए, प्रचुर प्रोत्साहन दीजिए और फिर आप मानव व्यवहार के क्षेत्र में गुरू बन जायेंगे। यदि हमें यह पूर्व अनुमान हो कि अमुक व्यक्ति, अमुक परिस्थिति में किस तरह का व्यवहार करेगा तो उस व्यक्ति से हमारे संबंध थोड़े बेहतर हो सकते हैं और इस प्रकार यह प्रभावशील मानवीय संबंधों का आधार बन सकता है।

बहरौली मुखिया द्वारा कराये गए कार्यों पर एक नजर :-

- ☞ बहरौली पाण्डेय टोला वार्ड नं. 1 में बड़वाघाट बहरौली मुख्य मार्ग से गोड़ टोला तक पी.सी.सी. लगभग 11.80 फीट।
- ☞ कुंवर टोला वार्ड नं. 4 में पृथ्वी चंद सिंह के घर से हमेश साह के घर तक पी.सी.सी. लगभग 650 फीट।
- ☞ वार्ड नं. 7 हदिश मियां के बथान से नहर तक 1750 फीट पी.सी.सी.
- ☞ वार्ड नं. 3 शिवजी महतो के घर से बहारन राय के घर तक 95 फीट पी.सी.सी.
- ☞ 14 नं. वार्ड में जन, नल योजना सम्पन्न।
- ☞ वार्ड नं. 2, 5, 10, 13 में बोरिंग सम्पन्न पाइप का कार्य प्रारंभ।
- ☞ बहरौली कोठी मल्लाह टोला में वर्षों से जर्जर पड़े सड़क का मिट्टीकरण 600 फीट।
- ☞ शिव नगर लोहार टोला से मुख्य सड़क तक 300 फीट मिट्टीकरण।
- ☞ श्मशान घाट में मिट्टीकरण वाड। नं. 2, 5, 10, 26
- ☞ कैंप लगाकर घर-घर में बिजली संबंध कराया गया। पूरे पंचायत 100% विद्युतीकरण।
- ☞ लगभग 250 उज्जवला गैस का कनेक्शन उपलब्धा कराया गया।
- ☞ लंबित पेंशन में लगभग 96% का लाभ लाभुकों को प्राप्त।
- ☞ 15 अगस्त तक पूरा पंचायत ओ.डी.एफ. घोषित।
- ☞ उम्दा शौचालय निर्माण में बहरौली पंचायत पूरे सारण प्रमंडल में अग्रणी।
- ☞ कई धार्मिक स्थलों का निजी कोष से जीर्णोद्धार।

आज के समय में जहाँ राजनेता, अधिकारी, जनप्रतिनिधि जहाँ लूट-खसोट, गंदी

राजनीति से बाज नहीं आते। उसकी वह गंदी सोंच ''अपना काम बनता, भाँड़ में जाये जनता'' इसी मार्ग पर चलना श्रेयस्कर समझते हैं। उन्हें न तो आम जनता की फिक्र है और न देश की। जब काम करने का जज्बा हो तो कठिनाईयाँ खुद नतमस्तक हो जाती है। केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका टीम ने पूरे पंचायत के कार्यों को खुद परखा। शौचालय हो या सड़क, जल, नल योजना हो या अन्य कार्य सभी का स्तर उम्दा, बेहतरीन। इक्के-दुक्के ही मुखिया होंगे, जिन्होंने उम्दा किस्म की सड़क बनाई होगी वरना कई पंचायतों में बनी सड़कें एक बरसात भी नहीं सहन कर पाती। बहरौली में हाल ही में निर्मित सड़कों का दीदार किया जा सकता है। देखने मात्र से ही प्रतीत हो रहा है, इसकी क्वालिटी क्या है? मुखिया अजित सिंह ने बताया कि बहरौली में एक घर भी ऐसा नहीं है, जो विद्युतीकरण से वंचित हो। हमारा यथासंभव रहता है कि जो कार्य हो उसकी क्वालिटी में समझौता नहीं करता। आये दिन जो भी अधिकारी इस पंचायत में आते हैं वे बेहतरीन कार्य की प्रशंसा भी करते हैं। ●

मशरक पूर्वी की जनता की सेवा में सदैव तत्पर - मृदुला देवी

● आनन्द प्रकाश पाण्डेय/अशोक तिवारी

पंचायतें, ग्रामीण विकास और कल्याणकारी योजनाओं के बेहतर मंच हो सकती है। सता का यह विकेन्द्रीकरण शासन प्रशासन और समाज में बड़ा बदलाव रहा है। राज्य की कई पंचायत इसके उदाहरण भी है। इन पंचायतों में सुव्यवस्थित तरीके से कार्य हुए हैं। सत्ता के विकेन्द्रीकरण के कारण चीजें आसान हुई है। गाँवों के विकास में गाँवों में योजना बनाना और इसका क्रियान्वयन पंचायत जनप्रतिनिधियों को करना है। केन्द्र सरकार के स्वच्छता अभियान एवं बिहार सरकार के सात निश्चय योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए सूबे के सभी जिलों में विकास योजनाएँ, व्यापक स्तर पर चलाये जा रहे हैं। यह दीगर बात है कि गाँव से शहर तक चकाचक करने हेतु युद्ध स्तर पर कार्य अविराम जारी है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत हर घर जल व शौचालय।

योजना को मूर्त रूप दे रहा है, सारण के

★ मशरक पूर्वी की जानता की सेवा के 24 घंटे तत्पर है। उन्हें किसी मायने में कष्ट न हो, इसके लिए विशेष ध्यान रखा जाता है, पंचायत का विकास हमारी प्राथमिकता है।

अमर सिंह, मुखिया प्रतिनिधि।

★ पंचायत में चहुंमुखी विकास को इसके लिए मैं प्रयत्नशील हूँ। हमारा पंचायत आदर्श पंचायत हो। आम जनता के सहयोग से यह संभव हुआ।

मृदुला देवी,
मुखिया मशरक पूर्वी पंचायत।

ग्राम पंचायत राज मशरक पूर्वी में मुख्य रूप से कराये गए कार्यो पर एक नजर :

- ☞ संपर्क मार्गो को मुख्य मार्ग से जोड़ने के उद्देश्य से लगभग 12000 फीट ईंटकरण व मिट्टीकरण।
- ☞ नहर व पईन की सफाई।
- ☞ कब्रिस्तान व श्मशान में मिट्टी भराई।
- ☞ कई विद्यालयों में मिट्टी भराई।
- ☞ कई विद्यालयों में मिट्टीकरण।
- ☞ वृद्धा पेंशन 100, वृक्षारोपण-6 यूनिट, कबीर अन्त्येष्टि-10
- ☞ 7 नं. वार्ड में 650 फीट पी.सी.सी.
- ☞ 10 नं.वार्ड में 700 फीट पी.सी.सी.
- ☞ 8 नं. वार्ड में 700 फीट पी.सी.सी.
- ☞ 3 नं0. वार्ड में 500 फीट पी.सी.सी.
- ☞ जल-नल योजना क्रमशः वार्ड नं.-15, 7, 8, 12 में सम्पन्न।
- ☞ 13 नं. वार्ड में जल-नल योजना का कार्य जारी।
- ☞ प्रखंड परिसर में सोलिंग।
- ☞ बघउत में मिट्टीकरण।
- ☞ बाँध पर मिट्टीकरण
- ☞ हनुमान गंज में पोखरा निर्माण।
- ☞ 3 नं.- वार्ड में मिट्टीकरण।

मशरक प्रखंड के ग्राम पंचायत राज मशरक पूर्वी में और जनप्रतिनिधियों के लिए नजीर भी पेश

कर रही है। ग्राम पंचायत राज मशरक पूर्वी की मुखिया मृदुला देवी। उम्दा शौचालय निर्माण, वृक्षारोपण, संपर्क मार्गों का निर्माण, वृद्धापेंशन, कबीर अंत्येष्टि, आवास योजना के क्षेत्र में काबिले तारीफ कार्य को अंजाम दिया है। पिछले दिनों हर घर नल का जल योजना का युद्ध स्तर पर कार्य मशरक पूर्वी पंचायत में प्रारंभ है। मुखिया मृदुला देवी के निर्देशन में पंचायत में नाला निर्माण कार्य भी बेहतरीन हो रहा है, जिसमें मानकों का विशेष ख्याल रखा जा रहा है। मुखिया मृदुला देवी का मानना है कि विकास की रोशनी हर अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। ●

परिस्थितियों के मुख्यमंत्री

● **आनन्द प्रकाश पाण्डेय/अशोक तिवारी**

राजनीति के दलाल चुप हैं, ब्रजेश ठाकुर जैसा भेड़िया अस्पताल में आराम कर रहा है, किसके रहमों करम पर? अरे ऐसा भेड़िया कल मरे अथवा आज मर जाए, इस दरिन्दे को अस्पताल में क्यों रखा जा रहा है? आप कितने मजबुर हो गए है। परिस्थितियों के मुख्यमंत्री महोदय। मंजू वर्मा से आपका अगाध स्नेह तो पल्ले पड़ता है पर ब्रजेश ठाकुर पर कृपा ..... कई सवालों को जन्म देता है। आज बिहार की हर बेटी, बहन, माँ शर्मिंदा हैं कि उसने ऐसे टुच्चे नेताओं को चुना है, जो नारी सशक्तिकरण की बात कर उनकी अस्मत को लूटते हैं, फिर उनके कल्याण की योजनाओं को सामने लाकर ठहाके लगाते हैं। नैतिकता अगर थोड़ी भी है तो भेजो ब्रजेश ठाकुर को सलाखों के अंदर, अंतरआत्मा जगे तो इस्तीफा लीजिए मंजू वर्मा से। मुख्यमंत्री महोदय आम आवाम नपुंसक हो चला है, नहीं तो ब्रजेश ठाकुर को बीच चौराहे पर गोली मार देनी चाहिए। सुशासन बाबू इंसानियत हो तो इंसाफ कीजिए, हंटर बोले अंकल मधु, तोंद वाले माननीय नेता जी सबके सब कहाँ गायब हो गए? कहीं ..... कृपा तो नहीं .....। राजनीति हिस्सा न लेने का सबसे बड़ा दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति हम पर शासन करने लगता है। राजनीति में अच्छे लोगों की भागीदारी बहुत जरूरी है और उनका चयन और भी उतना ही हितकर। आज भी समय है अच्छे लोग आगे आयें। ताकि समय रहते अपने राज्य को, देश को और खुद को बचायें। सबसे अहम बात यह है कि लोहा ही लोहा को काट सकता है। बिहार की राजनीति जाति और दलगत भावनाओं से उपर अभी भी नहीं उठ पायी है। युवा के नाम पर परिवारवाद, जाति धर्म के नाम पर अलगाव का बोलबाला आज भी है। ऐसे में बुद्धिजिवियों को उसी हथियार का प्रयोग कर इस तरह की भावना के समूल नाश रणनीति बनानी होगी। ''वयम् राष्ट्र रे जागृयाम् पुरोहिता'' की सार्थकता सिद्ध करनी होगी।

इस गंदी राजनीति में जो भी कदम रखता है, वो सच्चा ही होता है। लेकिन इस हमाम में अपने के बाद सब नंगे हो जाते हैं। बीते कुछ वर्षो को याद कीजिए, भारत की राजनीति ने किस तरह करवट बदला था। कई राज्यों के दिग्गजों को मुँह की खानी पड़ी थी। जनता ने ईमानदार स्वच्छ युवा छवि के लोगों को जीता कर भेजा कि अब राज्य और देश का भला होगा। लेकिन आम जनता को क्या हासिल हो रहा है? आप ही बताएँ? जिसको जनता ने चुना था, क्या वो गलत थे? कइयों ने अनशन किया, स्लम बस्तियों की सफाई की, राजनीति में सफलता पाने के लिए क्या-क्या नहीं किया। इसलिए यह कहना अतिशयाक्ति होगी कि राजनीति में अच्छे लोगों का आगमन नहीं हो रहा है, जो अनुचित है। राजनीति में आते वो अच्छे ही लोग है, लेकिन वे जल्द ही राजनीति सीख गिरगिट की भाँति अपना रंग बदल देते हैं। देश व राज्य का भला तभी संभव है जब कोई नि:स्वार्थ भावना से कार्य करने हेतु आएँ। लेकिन ये ओजस्वी भावना आज किसी के पास नहीं है। यह सोंचनीय मसला है। जो व्यक्ति पूरे जोश और समाज के हित के लिए राजनीति में कदम रखता है और सता पाने के बाद उसमें बदलाव आने लगता है, क्योंकि वो अपने ईमान को बरकरार नहीं रख पाता? कोई कहता है ''बिहार बदल देंगे।'' कोई कहता है ''बढ़ता बिहार'', अरे कलम व जनता-जनार्दन की मानों तो भीतर नेता लोग पहले खुद को बदलें खुद की सोंच को आगे बढ़ाये। बिहार तो वैसे भी बहुत अच्छा है और भरा-पूरा है। बस इसे अपनी गंदी राजनीति के द्वारा इसे लूटने का जरिया न बनाएँ।'' दूसरी तरफ दूसरा दल कहता है ''..... कार्यकर्त्ताओं में दम, इसलिए बिहार जितेंगे हम।'' ये जुमले कहकर जनता को जातिवादी, अलगाव वाद का पाठ पढ़ाने वाले टुच्चे नेता सिर्फ और सिर्फ गदर कराने की फिराक में मगजमारी करते हैं। नेताजी आपका दूसरा कार्यकाल खत्म होने को है-लेकिन आपके तथाकथित भक्तों के दीदार नहीं हो सके। तो यह कैसा विकास? हम विकास भी कर जाएँ और लोग शौषण के शिकार भी रह जाएँ। तो यह कैसा विकास? हम विकास भी कर जाएँ और पीने का शुद्ध पानी भी मयस्सर नही हो तो यह कैसा विकास? नितीश जी कहते हैं विकास का तात्पर्य बुनियादी ढाँचे का विकास और मानव विकास दोनों है। जितना जोर बुनियादी ढाँचे पर होगा। उनका कहना है कि लोग ऐसा न विकास का मॉडल चला दें कि गैर आजादी बढ़ जाय। विकसित लोग और विकसित हो जाएँ और पिछड़े लोग और हाशिए पर चले जाएँ। नीतीश जी यह भी कहते नहीं थकते कि 25000 साल पहले का इतिहास है। हम तिजारत के लिए नहीं जाने जाते। हम या तो सुशासन के लिए जाने जाते थे या ज्ञान के लिए पटना शासन का केन्द्र था तो नालंदा ज्ञान का। ऐसी बात भी नहीं कि जनता उनके बात से संतुष्ट नहीं है। लेकिन जनता के जेहन में कुछ अनसुलझे सवालों के सैलाब से कुछ ताजातरीन सवालों से नितीश जी को दो-चार करा रहा हूँ। उनसे भी बिहार की जनता जानना चाहती है वैसे तो जनता जानती है कि इन सवालों का जवाब नितीश जी देने में असमर्थ है। ऐसे मनरेगा जैसी योजनाएँ क्यों टाँय-टाँय फिस्स हो रही है? ऐसी योजना के बाद ऐसे हालात कैसे हो गए? अकेले मनरेगा में 80% किसका विकास हुआ है? जनता सब जानती है। सच्चाई तो यह है कि प्राइमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक की स्थिति पहले कभी 50 सालों में नहीं हुई थी। अब की तुलना में हालात आज से कल बेहतर थे। निकू जी स्कूलों में सिर्फ मजदूरों और गरीब किसानों के बच्चे पढ़ रहे है। इन स्कूलों से पढ़कर निकलने वाले बच्चे सिर्फ अपवाद छोड़कर मनरेगा के मजदूर, बाहुबली नेताओं के बंदूक ढोने वाले निकलेंगे। फिर विकास का झूठानाटक क्यों? आइए हम इस विषय पर सौ बार मंथन करें और अन्त में वही करें जो राज्य व देश के हित में है। ''वह बेईमान नेता सही है, हर दिल से खेलती है। मैं भोली जनता सी हूँ, हर बार उसी को चुनती। चुनांचे यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि लालच में भ्रष्ट व्यक्ति को वोट देकर कुर्सी देते हैं और वह हमारा सिर्फ और सिर्फ शोषण ही करता है। इसके लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। हर बार सोंचते हैं कि अबकी बार सही करूंगा फिर वहीं बात शराब व चंद रूपये इमान का सौदा। पाँच सालों तक फिर कोसना। फिर पाँच साल बाद हम वही करते हैं। यहीं हमारी नियति बन चुकी है किस इसका उन्मूलन हो चुका है। अभी हाल ही में चेचक और डायरिया के कई मामले मुजफ्फरपुर व कटिहार में आये थे। सरकार ने पीने का साफ पानी मुहैया करा दिया है तो फिर किन परिस्थितियों में लोगों की अकाल मौतें हुई। हो सके तो एक गाँव का नाम बताया जाय जहाँ सरकारी प्रयासों से पीने का साफ व शुद्ध पानी मुहैया कराया हो। अगर बिहार में भूखमरी न है तो क्यों जहानाबाद में महादलितों (जो उनके एजेण्डे में सबसे उपर है) उनके बच्चे आज भी चूहे मारकर खा रहे हैं। पटना सिटी जैसे स्थान पर गरीब के बच्चे नालियों से मछलियाँ मार कर खा रहे हैं। अगर बिहार में भूखमरी नहीं है तो सरकारी स्कूलों में कई बार ऐसा हुआ है कि बच्चे छिपकली वाली खिचड़ी खाकर बिमार पड़े और कईयों की दर्दनाक मौते भी हुई है।

आज के परिवेश में सरकारी स्कूलों ने उन्हीं के बच्चे पढ़ रहे हैं, जिनके परिवारों में भुखमरी सबसे ज्यादा है। अगर बिहार में गैर बराबरी नहीं बढ़ रही है तो क्यों शिवहर जिले में प्रति व्यक्ति आय 15 रूपये से भी कम है। क्या इससे पता नहीं चलता कि कितना विकास हो रहा है। अगर विकास होता तो दिनो-दिन युवकों का बिहार से पलायन नहीं होता। अन्य राज्यों में बिहारी मारे व शोषित हो रही है। एक बार निकु जी आएं तो घर-घर शराब पहुँचा दिया अब कह रहे हैं शराब को छोड़वा दिया, हास्यास्पद लगता है। ●

सरकारी आदेश की धज्जियाँ उड़ा रहे बालू नाव माफिया

● रामपाल प्रसाद

दारू बंदी के बाद बालू बंदी एक बड़ी चोट है, हालांकि प्रकृति की रक्षा व बालू माफियाओं के अवैध खनन से सरकार को आने वाले राजस्व में भारी घाटा होने के कारण, सरकार ने इसपर सख्त कानून बनाया है किन्तु सारे ढ़ाक के तीन पात साबित होते दिख रहे है। बताते चले कि बिहार में अवैध खनन में जुटे बालू माफिया सरकारी सिस्टम को ध्वस्त करने के लिए लगातार नये पैंतरे इस्तेमाल कर रहे हैं। इ–चालान का घोलमेल करने के साथ ही माफिया तत्व एक ही अनुमति प्राप्त घाट के लाइसेंस पर कई घाटों से उठाव होनेवाले बालू का चालान निर्गत करने का खेल भी खेल रहे हैं। ऐसा नहीं है कि इस गोरखधंधे की जानकारी जिला खनन या स्थानीय पुलिस–प्रशासन के अधिकारियों को नहीं है, लेकिन सब लोग जानबूझ कर आंखें मूंद बैठे रहते हैं। ज्ञात हो कि खनन के लिए अधिकृत एजेंसी द्वारा स्वीकृत घाट से काफी दूर जाकर चालान केंद्र बनाया जाता है, ताकि दूसरे अस्वीकृत घाटों से आनेवाले बालू लदे वाहनों का चालान भी काटा जा सके। बिहटा व मनेर में कई जगहों पर यह स्थिति देखी जा सकती है। इ–चालान व मैनुअल चालान में हेरफेर कर खनन एजेंसी वास्तविक कटनेवाले चालान का हिसाब–किताब छिपा लेती है और इसका फायदा बालू माफिया उठा लेते हैं।

गौरतलब हो कि बालू खनन का ठेका प्राप्त कंपनी को बिहटा में चार घाटों पांडेयचक, कटेसर, आनंदपुर और महुआर से ही बालू खनन की स्वीकृति प्राप्त है। इसमें भी कितने क्षेत्रफल भाग में खुदाई की जानी है, यह तय है। लेकिन नियमों का उल्लंघन करते हुए एजेंसी महुआर और पांडेयचक जैसे घाटों पर निर्धारित से दोगुने से अधिक भाग पर खनन का काम कर रही है। इसके साथ ही छोटे–छोटे घाटों जैसे बिंदौल, दोघडा, निसरपुरा आदि से भी तेजी से बालू की निकासी की जा रही है। सनद् रहे कि वन एवं पर्यावरण मंत्रालय तथा सिया (स्टेट इन्वायरमेंट इंपैक्ट एसेसमेंट अथॉरिटी) की अनुमति के बाद ही खान एवं भूतत्व विभाग किसी भी घाट पर खनन की मंजूरी देता है। अवैध खुदाई से जहां नदी की धारा बदलने का खतरा होता है, वहीं इसके दूसरे कई पर्यावरणीय नुकसान भी हैं। इसके बावजूद प्रशासन अवैध खनन को लेकर लापरवाह है। जानकारी के मुताबिक बिहटा, मनेर व बिक्रम के डेढ़ दर्जन से अधिक अवैध घाटों पर खनन का काम चल रहा है। भोजपुर जिले में हाल के दिनों में पहली बार अवैध बालू खनन के खिलाफ तीन जिलों की विशेष टीम द्वारा पूरे दिन सर्च अभियान चलाया गया था। इस दौरान टीम ने अवैध बालू लदी तीन नावों को जब्त भी किया गया, हालांकि पुलिस को देखते ही अवैध करोबारी भाग निकले। मालूम हो कि हाल के दिनों में सोन नदी का पानी बढ़ने से दर्जनों नाव संचालकों द्वारा बालू का अवैध कारोबार किया जा रहा था। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए भोजपुर डीएम के आदेश पर चले विशेष अभियान में पूरे लाव लश्कर के साथ पटना छपरा व भोजपुर की टीम के साथ एनडीआरएफ की टीम ने दो बोट को लेकर छापेमारी की। दिगर बात है कि भोजपुर जिले में कोइलवर इलाके के करीब 90 फीसदी लोगों की आजीविका का मुख्य साधन लाल बालू का कारोबार है। यहां के सोन नदी से बालू लेकर प्रतिदिन करीब दो हजार गाड़ियां प्रदेश के अन्य इलाकों सहित उत्तर प्रदेश भी जाती हैं। करोड़ों रुपये का कारोबार होता है। इस काम में करीब दस हजार मजदूर लगे हैं, इसलिए हर तरह के व्यवसायियों के लिए भी यह इलाका फायदेमंद माना जाता है। सोन नदी में बाढ़ का संकट देखते हुये सरकार ने एक जुलाई से 30 सितंबर तक बालू खनन पर प्रतिबंध लगा दिया गया, बावजूद इसके नदी से नावों द्वारा अवैध रूप से कोईलवर पुल के नीचे खुदाई कर बालू का अंधाधूंध दोहन किया जा रहा है। इस बाबत ब्रॉडसन कॉमोडिटीज प्राइवेट लिमिटेड ने बिहार के कई क्षेत्रों में इस फैले अवैध कारोबार के विरोध में शिकायत पत्र निर्गत किया। ज्ञात हो कि ब्रॉडसन कॉमोडिटीज प्राइवेट लिमिटेड ने जिला पदाधिकारी भोजपुर, आरक्षी अधीक्षक भोजपुर, सहायक निदेशक, जिला खनन कार्यालय, भोजपुर सहित जिला पदाधिकारी सारण को बीते 21 जुलाई 2018 को शिकायत पत्र निर्गत कर बताया कि पटना, भोजपुर एवं सारण जिला के सोन नदी से सैकड़ों नावों द्वारा प्रतिदिन बालू का उत्खनन कर सारण जिला के विभिन्न घाटो पर एवं नदी के रास्ते उत्तर प्रदेश के सीमा से अवैध रूप से बालू का प्रेषण किया जा रहा है, जबकि माननीय ग्रीन ट्रीब्यूनल कलकता तथा विभाग के निर्देशानुसार जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर माह में सभी नदी तल से बालू का उत्खनन करने पर रोक है। इसके बावजूद नाविकों द्वारा बालू का उत्खनन एवं प्रेषण किया जा रहा है। उक्त शिकायत पत्र में ब्रॉडसन कॉमोडिटीज प्राइवेट लिमिटेड ने लिखा है कि मेरे कंपनी के पदाधिकारी/कर्मचारी के द्वारा उत्खनन कर रहे नाविकों को उत्खनन कार्य से रोकने एवं सोन नदी से भगाने के लिए कहने पर नाविकों के द्वारा विरोध किया जाता है। प्रति नाव पर 20 व्यक्तियों की संख्या रहती है। इस प्रकार 20–25 नावों के नाविकों की संख्या काफी अधिक हो जाती है एवं उनके पास हथियार एवं डंडे रहते हैं, इसलिए हमलोगों के द्वारा रोक लगाना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए प्रशासन के द्वारा पुलिस बल के सहारे अवैध रूप से उत्खनन एवं प्रेषण कर रहे नाविकों पर रोक लगाया जा सकता है तथा नाविकों पर कानूनी कार्रवाई करने की कृपा की जाये। बहरहाल, कार्रवाई को पूरा होता न देख 28 जुलाई को मनेर थाना में शिकायत दर्ज करायी गई। किन्तु कोई भी कार्रवाई नहीं हुई और नदी से नावों द्वारा अवैध खनन जारी है। बताते चले कि उक्त ब्रॉडसन कॉमोडिटीज प्राइवेट लिमिटेड ने पुनः 30 जुलाई 2018 को सहायक निदेशक, जिला खनन कार्यालय पटना, जिला पदाधिकारी पटना सहित वरीय आरक्षी अधीक्षक पटना को शिकायत पत्र भेजा था। पत्र के आलोक में बिहार सरकार के खान एवं भुतत्व विभाग के विशेष सचिव सह निदेशक द्वारा दिनांक 31/07/18 को अपने ज्ञापांक 3188 में जिला पदाधिकारी पटना/सारण/एवं भोजपुर को ब्रॉडसन कॉमोडिटीज प्राइवेट लिमिटेड के शिकायत पत्र पर जांच हेतु भेजा गया तथा उक्त विभाग द्वारा खान एवं भूतत्व विभाग बिहार, पटना के प्रधान सचिव को भी इसकी प्रतिलिपि भेजी जा चुकी है। बावजूद इसके कोई भी कार्यवाई होते नहीं दिख रही है। ●

ब्रजेश के दम पर जितता है गणेश

● धीरज कुमार

झारखण्ड प्रदेश का दूसरी बड़ी जिला चतरा जो कि जर, जंगल, पहाड़, कोयला से घिरी हुई है। चतरा जिला का लोग जंगल में मंगल मानते हैं। चतरा जिला का कई ऐसी प्रखण्ड है। जो नक्सलवाद से घिरी हुई है। बताते चले कि टंडवा सिमरिया पत्थलगड्डा, लावलौग, कुन्दा प्रतापपुर एवं हाटरगंज जो बिहार से सटी हुई है। बताते चले कि जिसमें (TPC) तृतीय प्रस्तुति कमिटी का प्रभाव सर चढ़ कर बोलता है। चतरा जिला में टंडवा ऐसे प्रखण्ड है कि जहाँ कोयला ही कोयला है। जनकारी के अनुसार आने वाले दिन में धनबाद जिला से बड़ी कोयलांचल जिला होगी जहाँ कोयला के लिए खुनी संघर्ष होगा जिस प्रकार धनबाद जिला में कोयला का बर्चस्व को लेकर एक दूसरा का माफिया खुन का प्यासे है। कोयला का मतलब धन ही धन और जब बात धन की होगी तो सबसे बड़ी धनी खुद को कभी कमजोर नहीं होने देगा। ज्ञात हो कि झारखण्ड में सिंह मेनसन को भला कौन नहीं जानता कहा तो यहाँ तक जाता है कि कोयला की कारीक से न तो राज्य सरकार का चेहरा बच पाया नहीं केन्द्र सरकार का और वर्तमान भाजपा का मोदी सरकार पर यह आरोप बार-बार लगता आ रहा कि यहाँ से रघुवर सरकार काफी धन राशि केन्द्र तक पहुँचा रही है।

बिहार के समीप होने की वजह से चतरा जिला में कोयला को लेकर बड़े स्तर पर वर्चस्व की लड़ाई छिड़ेगी (TPC) टी.पी.सी. और टाइगर ग्रुप अपना झाड़ा गाड़ने की प्रयास करेगी। चतरा जिला में अपराध और नक्सलवाद से भी उपर टी.पी.सी. का वर्चस्व बनाया हे। उसी की पकड़ रघुवर सरकार पर है। विपक्षी यहां तक आरोप लगाते हैं कि टी.पी.सी. से राजा सरकार प्राप्त का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसका सहयोग झारखण्ड विधान सभा में सिरकत करता है, जी हाँ जिस प्रकार शोले फिल्म में माँ अपने बच्चों को कहती है, बेटा सो जा नहीं तो गब्बर आ जायेगा कुछ ऐसी ही चतरा जिला में देखने और सुनने का मिला है कि बेटा कुछ मत बोल नहीं तो गंझु आ जायेगा।

दो भाइयों का जोड़ी चतरा जिला में नहीं बल्कि झारखण्ड प्रदेश में चर्चा का विषय है। छोटा भाई ब्रजेश गंझु टी. पी. सी. का सुप्रीमो है। जिसको देखते ही गोली माने का फरमान जारी कर रखा है। ब्रजेश गंझु बढ़ते खुनी बर्चस्व के आगे राज्य सरकार भी बौना दिखती है। या यूं कहें कि ब्रजेश गंझु से भी सरकार अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन लेकर विपक्ष को डरवाते हैं। क्योंकि कुख्यात, दुर्दात, खुंखार, टी.पी.सी. का सर्वेसर्वा ब्रजेश गंझु का बड़ा भाई गनेश गंझु चतरा जिला का सिमरिया विधान सभा का माननीय विधायक है। देश का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं झारखण्ड के मुख्यमंत्री रघुवर दास ईमान्दारी का ढोल पिटते है तथा भ्रष्टाचार एवं नक्सलवाद सहित अपराध वाद पर नकेल कसने की बात करते हैं। P.M. और C.M. यह दवाब गनेश गंझु पर क्यों नहीं सेट करता है। क्या सिमरिया विधान सभा से गनेश गंझु का कोई विकल्प नहीं?

आखिर क्यों अपराधी ब्रजेश गंझु का भाई भाजपा का खिलाफ चुना गया? क्या भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, अपराधी, नक्सवादी के सगे संबंधियों को उम्मीदवार बनाकर भाजपा सुशासन लाना चाहती है?

ब्रजेश गंझु का आतंक की वजह से विधायक गनेश गंझु से आम तो आम खास भी थर-थर कांपते हैं। वेसे में दोनों भाई के करतुत को प्रकाशित करने से पत्रकार भी जोखिम उठाना नहीं चाहते। कुछेक ने लिखने के हिम्मत

जुटाई वह भगवान के प्यारे हो गये। जब चतरा जिला में कोयला उत्पादन में लगी कंपनी मगध , अम्रपाली, उषा मर्टिन, सहित अन्य छोटी कंपनी जब कोयला का वर्चस्व कोयला को लेकर वर्चस्व का खेल जारी करेगी तब चतरा जिला में माफीयाओं के बीच खुनी संघर्ष का खेल बदस्तुर जारी रहेगा और पुलिस प्रशासन राज्य सरकार के साख बचाने में जुड़ी रहेगी। वहीं अपराधी ब्रजेश और उसका बड़ा विधायक गनेश अपना परचम लहराने के लिए किसी भी हद तक जायेगा, जिसके वजह से चतरा के आम नागरिक असुरक्षित महसुस करेगी? क्या गनेश गंझु का करतूतों को नहीं जानती भाजपा? किससे छुपा है कि टी.पी. सी. सुप्रीमों ब्रजेश गंझु का भाई गनेश गंझु है? आखिर क्यों नहीं पकड़ा जा रहा ब्रजेश गंझु क्या राजनैतिक संरक्षण प्राप्त है। दोनों भाई का कब तक डर का साया में जियेगा चतरा? ब्रजेश गंझु के खुनी एवं कुरूर, तेवर वातावरण का मुकाबला विपक्षी दल, कांग्रेस, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, झारखण्ड विकास मोर्चा, आजसु, राजद एवं विभिन्न पाटियां करने से डरती है। अब देखना होगा कि ब्रजेश गंझु पर सरकार कब तक नकेल कसती है? यह यू ही चलता रहेगा ब्रजेश गंझु का खेल। केवल सच प्रमाणिकता के साथ अगले अंक में पढ़ें चतरा जिला कोयला का काला सच प्रभावित लोगों का नाम एवं पद नाम कोयले विभाग का महालुट हम करेंगे बेनकाब।●

नेशनल एजेंडा फोरम को देशभर से मिल रहा अपार समर्थन

● **अभिषेक मिश्रा/ब्रजेश मिश्रा**

इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमिटी (I-PAC) ने महात्मा गांधी के 150वीं जयंती वर्ष के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 29 जून 2018 को नेशनल एजेंडा फोरम (NAF) लॉन्च किया है। NAF एक देशव्यापी पहल है, जिसके जरिए गांधी जी के 18–सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम पर चर्चा को पुनर्जीवित करना और इस चर्चा के जरिए देश की प्राथमिकताओं को पुनर्कल्पित और सहनिर्मित कर, समकालीन भारत के लिए क्रियान्वयन योग्य एजेंडा तैयार करना है। अब तक 6 देश एवं 20 राज्यों के 225 प्रतिष्ठित शख्सियत, 4,000 से अधिक कॉलेजों से 50,000 युवा एसोसिएट्स NAF से जुड़ चुके हैं। साथ ही 346 जिलों में फैले 283 सामाजिक संगठनों ने भी NAF को अपना समर्थन दिया है।

★ नेशनल एजेंडा फोरम अब तक विविध समूह एवं संगठन के लोगों से समर्थन हासिल कर चुका है, जिसमें ये लोग शामिल हैं :– यूनेस्को–एमजीआईईपी ने गांधी जी के 18–सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम पर आधारित, जनता के एजेंडे को तय करने, सतत विकास एवं शांति का प्रसार करने के लिए NAF के द्वारा किए जा रहे प्रयास को समर्थन दिया है। अरूण मोनीलाल गांधी (महात्मा गांधी के पोते), तुषार गांधी (महात्मा गांधी के पड़पोते) और नीलम गांधी (महात्मा गांधी की परपोती) ने समर्थन दिया है। साथ ही प्रो. रामजी सिंह (स्वतंत्रता सेनानी एवं भारत में गांधीवादी विचार के अध्ययन में अग्रणी), डॉ. रविन्द्र कुमार (पद्म श्री सम्मान से सम्मानित), नटवर ठक्कर (पद्म श्री एवं जमनालाल बजाज सम्मान से सम्मानित), डॉ. डी. चेल्लादुरई (डीन, गांधी रिचर्स फाउंडेशन), बाजी मोहम्मद (स्वतंत्रता सेनानी) जैसे गांधीवादी लोगों ने समर्थन दिया है। गांधी स्मारक निधि, सर्वोदय आश्रम,गांधी मिशन इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ

इंडिया जैसे गांधीवादी संस्थानों ने अपना समर्थन दिया है। श्रीमती तीजनबाई (कलाकार एवं पद्म भूषण से सम्मानित), श्री राजन मिश्रा (भारतीय शास्त्रीय संगीत गायक एवं पद्म भूषण से सम्मानित), डॉ. ब्रह्म दत्त (कुष्ठरोग के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य के लिए पद्म श्री से सम्मानित), डॉ उषा किरण (पद्म श्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित) एवं अन्य नागरिक सम्मान से सम्मानित लोगोंने अपना समर्थन दिया है। न्यायाधीश एन. एन. माथुर (राजस्थान एवं गुजरात हाई कोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश), श्री रणजीत शेखर मूशहरी (मेघालय के पूर्व राज्यपाल) जैसे प्रतिष्ठित सरकारी कर्मचारियों ने समर्थन दिया है। सुश्री मैरी कॉम (बॉक्सर एवं ओलंपिक पदक विजेता), पीटी ऊषा (ट्रैक एथलिट, एशियन गेम्स में पदक विजेता),सुश्री बबीता फोगाट (पहलवान एवं कॉमनवेल्थगेम्स में पदक विजेता), श्री आई एम विजयन (भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्वकप्तान), ईश्वर पांडेय (क्रिकेटर) जैसे खेल से जुड़े लोगों ने समर्थन दिया है। श्री पीयूष मिश्रा (अभिनेता, पटकथा लेखक एवं गीतकार), श्याम रंगीला (मिमिक्री आर्टिस्ट), पम्मी बाई (गायक, गीतकार एवं भंगड़ा डांसर), रजा मुराद (अभिनेता) एवं अन्य मनोरंजन से जुड़ी शख्सियतों ने अपना समर्थन दिया है। I-PAC की आगामी दो सप्ताहों में 21 राज्यों के 750 कॉलेज के छात्रों एवं 320 सामाजिक संस्थाओं तक पहुंचने की योजना है। NAF के लिए वोटिंग जारी है। नागरिक www-indianpac/naf पर लॉग इन कर NAF का हिस्सा बन सकते हैं और वोट देकर अपना एजेंडा एवं नेता चुन सकते हैं।

★ I-PAC के बारे में :– इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमिटी (I-PAC) छात्रों एवं युवा पेशेवरों की पंसद का एक ऐसा मंच है, जो उन्हें किसी भी राजनीतिक पार्टी के साथ जुड़े बिना देश की राजनीति एवं प्रशासन में अर्थपूर्ण भागीदारी का अवसर प्रदान करता है। 2013 में सिटिजन फॉर एकाउंटेबल गवर्नेंस (CAG) के रूप में शुरू हुए I-PAC ने विविध शैक्षणिक एवं

पेशेवर पृष्ठ

भूमि से जुड़े मेधावी युवाओं को एकसाथ लाकर, उन्हें चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा बनने एवं नीति–निर्धारण में प्रभावी योगदान देने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया है। I-PAC बेहतर ट्रैक रिकॉर्ड वाले दूरदर्शी नेताओं के साथ काम करता है। इस प्रक्रिया में, I-PAC नेताओं को नागरिक–केंद्रित एजेंडा तय करने, उन्हें मूर्त रूप देने और जनता के बीच ले जाने के सबसे प्रभावी तरीकों को अपनाने एवं व्यापक जन–समर्थन प्राप्त करने में मदद करता है।

महात्मा गांधी का ये 18 सूत्रीय कार्यक्रम कई सालों में लिखा गया लेकिन इसे देश के साथ 1945 में साझा किया गया। गांधी जी का ये 18 सूत्रीय कार्यक्रम बताता है कि स्वतंत्र भारत की प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए? हालांकि गांधी जी इसके बारे में खुद ही कहते थे कि इस सूची के बारे में यह नहीं मानना चाहिए कि यह संपूर्ण है। उनका मानना था कि पाठकों को भी कई नए और महत्त्वपूर्ण जोड़ने योग्य बिंदु मिलेंगे जिनको प्रोत्साहन देते हुए भारत की मुख्य प्राथमिकताओं में शामिल किया जाना चाहिए। गांधी जी की सोच को आगे बढ़ाते हुए आई–पैक अपने सहयोगियों और वॉलंटियर्स के साथ मिलकर देश के करोड़ों नागरिकों को नेशनल एजेंडा फोरम के माध्यम से एकजुट करने की कोशिश कर रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य गांधी जी के 18 सूत्रीय कार्यक्रम को आज के समय में चर्चा के माध्यम से लोगों के बीच ले जाना और उसे देश के विकास के लिए प्रयोग करना है। एनएएफ को देश के 530 जिलों के 1700 से अधिक कॉलेजों के 25000 से ज्यादा युवा वॉलंटियर्स ने मिलकर लॉन्च किया है, इसका मकसद भारत के नागरिकों को इन 4 कार्य–बिंदुओं के लिए एकजुट करना है।●

★ क्या हैं NAF के मुख्य 4 कार्य बिंदु–

1. सोच को आगे बढ़ाते हुए गांधी जी के 18 सूत्रीय संरचनात्मक कार्यक्रम को देश के लोगों के साथ साझा करना।
2. एजेंडा तैयार करना।
3. नेता को चुनना।
4. भारत के लिए अभियान चलाना।

कानूनी सलाह
शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ दण्ड प्रक्रिया संहिता के कुछ महत्वपूर्ण प्रबन्धों के बारे में जानकारी देने की कृपा करें।

दण्ड प्रक्रिया संहिता 1 अप्रैल, 1974 से लागू है। अन्य किसी विधि के अन्तर्गत आने वाले अपराधों का अन्वेषण, जाँच या विचारण दण्ड प्रक्रिया संहिता में उपबन्धित प्रावधानों के अनुसार ही किया जायेगा, लेकिन इस सम्बन्ध में कार्यवाही की रीति एवं स्थान का विनियमन करने वाली तत्समय प्रवृत किसी अधिनियमिति के अधीन रहते हुए। (धारा 4)

जहाँ किसी अधिनियम के अन्तर्गत किसी भिन्न प्रक्रिया का प्रावधान किया गया हो, वहाँ कोई अपराधिक मामला होते हुए भी इस संहिता में उपबन्धित प्रक्रिया को लागू करना आवश्यक नहीं होगा। दण्ड प्रक्रिया संहिता की कोई बात विशेष या स्थानीय विधि पर प्रभाव नहीं डालेगी। (धारा 5)

यदि किसी अधिनियम में केवल कुछ ही मामलों के लिए विशिष्ट प्रक्रिया का प्रावधान किया गया हो, और शेष मामलों की प्रक्रिया के सम्बन्ध में मौन हो तो जो मामले विशिष्ट प्रक्रिया से सम्बन्धित है, उन पर विशिष्ट प्रक्रिया लागू होगी एवं शेष मामलों पर दण्ड प्रक्रिया संहिता के प्रावधान लागू होंगे।

संज्ञेय एवं असंज्ञेय अपराध में अन्तर :- (1) संज्ञेय अपराधों में पुलिस बिना वारण्ट के अभियुक्त को गिरफ्तार कर सकती है। असंज्ञेय अपराध में पुलिस बिना वारण्ट के अभियुक्त को गिरफ्तार नहीं कर सकती है। (2) संज्ञेय मामलों में पुलिस अधिकारी बिना किसी आदेश के अन्वेषण शुरू कर सकता है। असंज्ञेय मामलों में बिना आदेश के अन्वेषण नहीं किया जा सकता है।

☞ धारा 24 के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार उच्च न्यायालय के परामर्श के बाद लोक अभियोजक या अपर लोक अभियोजक की नियुक्ति करती है।

☞ कोई व्यक्ति लोक अभियोजक या अपर लोक अभियोजक नियुक्त किये जाने पर पात्र केवल तभी होगा, जबकि वह कम से कम 7 वर्ष तक अधिवक्ता के रूप में विधि व्यवसाय करता रहा हो। (धारा 24 (7))

☞ केन्द्रीय या राज्य सरकार किसी मामले या किसी वर्ग के मामलों के प्रयोजनों के लिए किसी अधिवक्ता को जो कम से कम 10 वर्ष तक विधि व्यवसाय करता रहा हो, विशेष लोक अभियोजक नियुक्त कर सकती है। (धारा 24 (8))

☞ सहायक लोक अभियोजक की नियुक्ति राज्य सरकार करती है, इसकी नियुक्ति धारा 25 के अन्तर्गत होती है।

☞ पुलिस अधिकारी सहायक लोक अभियोजक नियुक्त नहीं किया जा सकता है।

☞ जिला मजिस्ट्रेट किसी अन्य व्यक्ति को किसी विशिष्ट मामले के प्रयोजनों के लिए भार साधक लोक अभियोजक नियुक्त कर सकता है।

☞ जो पुलिस अधिकारी उस मामले के अन्वेषण में भाग लिया है, उसे उस मामले में भार साधक लोक अभियोजक नियुक्त नहीं किया जा सकता है।

☞ धारा 25 (क) के अन्तर्गत अभियोजन निदेशालय स्थापित करने की शक्ति राज्य सरकार को दी गयी है।

☞ कोई व्यक्ति अभियोजन निदेशक या उप अभियोजन निदेशक के रूप में नियुक्ति के लिए केवल तभी पात्र होगा यदि वह अधिवक्ता के रूप में कम से कम 10 वर्ष तक व्यवसाय में रहा हो।

☞ प्रत्येक लोक अभियोजक, अपर लोक अभियोजक और विशेष लोक अभियोजक, अभियोजन निदेशक के अधीनस्थ होंगे।

न्यायालयों की शक्ति (Power of Courts)

न्यायालय का नाम कारावास एवं जुर्माना देने की शक्ति

उच्च न्यायालय	विधि द्वारा प्राधिकृत कोई दण्डादेश
सेशन न्यायाधीश/अपर सेशन न्यायाधीश सहायक	विधि द्वारा प्राधिकृत कोई दण्डादेश, मृत्यु दण्डादेश के सेशन न्यायाधीश लिए उच्च न्यायालय द्वारा पुष्टि की आवश्यकता होती है। 10 वर्ष तक के कारावास का दण्डादेश (धारा 28)
मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट/अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट/ मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट	7 वर्ष तक का कारावास
प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट/महानगर मजिस्ट्रेट	तीन वर्ष का कारावास या 10 हजार रूपया जुर्माना या दोनों
द्वितीय वर्ग मजिस्ट्रेट	एक वर्ष का कारावास या 5 हजार रूपये का जुर्माना या दोनों (धारा 29)

☞ जहाँ कारावास और जुर्माना दोनों दण्डादेश दिया गया है और जुर्माना देने में व्यतिक्रम करने पर कारावास की अवधि एक चौथाई से अधिक नहीं होगी जो उस अपराध के लिए विहित है। (धारा 30)

☞ एक ही विचारण में कई अपराधों के लिए सिद्धदोष होने के मामले में दण्डादेश क्रमवर्ती होने की दिशा में ऐसा व्यक्ति 14 वर्ष से अधिक के कारावास के लिए दण्डादिष्ट नहीं किया जायेगा तथा संकलित दण्ड उस दण्ड की समान मात्रा के दोगुने से अधिक नहीं होगा जिस एक अपराध के लिए वह न्यायालय सक्षम है।

व्यक्तियों की गिरफ्तारी (Arrest of Persons)

☞ पुलिस धारा 41 के अन्तर्गत बिना वारण्ट एवं आदेश के गिरफ्तार कर सकती है।

☞ यदि कोई व्यक्ति पुलिस अधिकारी की उपस्थिति में असंज्ञेय अपराध करता है तथा पुलिस अधिकारी द्वारा पूछे जाने पर अपना नाम और पता नहीं बताता है या गलत नाम या पता बताता है तो पुलिस अधिकारी बिना वारण्ट के गिरफ्तार कर सकती है। (धारा 42)

☞ धारा 43 के अन्तर्गत प्राइवेट व्यक्ति द्वारा की गयी गिरफ्तारी की गयी गिरफ्तारी तथा गिरफ्तारी में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के बारे में उपबन्ध किया गया है।

☞ धारा 43 के अन्तर्गत निम्न स्थितियों में कोई प्राइवेट व्यक्ति अपराधी को बिना वारंट के गिरफ्तार कर सकता है- 1. जब अपराध अजमानतीय और संज्ञेय हो। 2. अपराध प्राइवेट व्यक्ति की उपस्थिति में किया गया हो। 3. अपराधी उद्घोषित अपराधी हो।

(शेष अगले अंक में)

एनआरसी पूरे देश के लिए अच्छा संकेत : राधेश्याम

छाया : दीपक श्रीवास्तव

30 जुलाई को राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) की अंतिम मसौदा सूची जारी हुई जिसमें सिर्फ 40 लाख अवैध व संदिग्ध लोगों कि पहचान हो पाई है। जबकि सन् 2004 मे तत्कालीन केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री प्रकाश जयसवाल ने कहा था कि सवा करोड़ घुसपैठिया मे से लगभग आधा असम में मौजूद हैं। सन् 2016 मे गृह राज्यमंत्री श्री किरेन रिजिजू ने संसद में बताया कि 2 करोड़ बंगलादेशी घुसपैठिया देश में थे उन्होंने राज्यवार संख्या नहीं बताया लेकिन नये पुराने आँकड़े के हिसाब से 80 लाख से अधिक संख्या अभी भी असम में विराजमान है। असम मे सन् 1971 मे 72.5 प्रतिशत हिन्दू थे जो तीस साल बाद सन् 2001 मे घटकर 65 प्रतिशत से नीचे हो गये , दस वर्ष बाद 2011 घटकर 61.5 प्रतिशत से निचे रह गई। जो अभी वर्तमान मे 60 प्रतिशत से भी कम है। वहीं मुस्लिम अबादी सन् 1971 मे 24.5 प्रतिशत थी जो तीस साल बाद 6.4 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ कर 31 प्रतिशत हो गए। आज स्थिति ऐसी है कि असम में जनसंख्या घनत्व 397 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. की औसत से बढ़ा है। यह आँकडा राष्ट्रीय औसत 382 प्रतिव्यक्ति से ज्यादा है। धुबरी जिले में तो जनसंख्या घनत्व सबसे ज्यादा 1171 है, जबकि करीमगंज 673, बरपेटा 632, गोलपाड़ा 553, हेलांडी 497, और कछार 459 है। ये व्यवस्था रहा तो वहां के पारंपरिक लोग अल्पसंख्यक ही नहीं अपना सारा परंपरा भूलकर पश्चिम के प्रदेश में भागने को तैयार रहेंगे। उल्फा सपेरों एक इतिहास बन जायेंगे, हाँ कुछ राजनीतिक दलों के दुकान कुछ दिन और चल जायेगा। लेकिन ये गद्दार को कभी किसी के द्वारा माफ नहीं किये जायेंगे। असम बंगाल के पुराने लोगों जिनकी उम्र 80 वर्ष से ज्यादा है वो उस दर्दनाक दिनों नहीं भुले और आँखों से टकटकी लगाए सोचते रहे कि वो दिन आयेगा जब विभाजन के समय दस लाख हिन्दू मौत के घाट उतार दिए गये। कोई अपने माँ से कोई अपने पिता से कोई अपने भाई से तो कोइ अपनी बहन या पत्नी से अपने आँखों के सामने बिछड़ गये, उन्हें आज भी न्याय की उम्मीद है। उन आँखों ने लाशों की वो पहाड़ देखा था। उस पहाड़ नुमा लाशों के ढ़ेरों से कितने लोगों बिमारियों से मर गए। उन लाशों मे हमारे दलित बंगाली भाई व अन्य पिछड़े बंगाली वर्ग की बहुत बड़ी फौज थी। थोडे आर्थिक संपन्न तो सूचना मिलते ही बंगाल–असाम छोड़ने में लगे थे। आज फिर वो बंगला भूगोल पुराने इतिहास के तरफ बढ़ रही है। राजनीति को छोड़कर सभी राजनीतिक दलों व धर्मों के लोगों को देश और अपने भविष्य व बच्चों के लिए सोचना होगा कि हमारे बच्चों के भविष्य सुरक्षित रहे। हमने जब करीमगंज लोकसभा सदस्य से बात की तो उन्होंने माना कि उनके लोकसभा क्षेत्र में पचास प्रतिशत से ज्यादा मुस्लिम समुदाय के लोग हैं। इन तमाम बिन्दुओं पर प्रस्तुत है पत्रिका प्रतिनिधि **संजय सिन्हा** द्वारा **राधेश्याम विश्वास** के लिए गये साक्षात्कार के प्रमुख अंश :–

★ असम को कितना फायदा एनआरसी से है?

असम को फायदा होगा हमलोग चाहते हैं कि एक शुद्ध एनआरसी हो जाये क्योंकि ये हम जो सिटीजन हैं असम क्या है कि मिनि इन्डिया है। इस मे बहुत सारे बसाव के आदमी दुसरे स्टेट के आदमी रहते हैं, लगभग 52, 53 लैगवेज के आदमी रहते हैं, तो अगर ये सिटीजन रजिस्टार हो जाये तो हमारा जो बहुत दिन से विवाद चल रहा है कि वो ऐसा है हम ऐसा है तो ये बहुत दिनों से चल रहा विवाद सलट जायेगा तो हम एक यूनाइटेड असाम घेर सकेगें।

★ पुरे देश पर NRC होना चाहिए?

हाँ, एनआरसी पुरे देश पर होता है, तो अच्छा ही है।

★ क्या 2019 के चुनाव पर इसका असर आपके पार्टी को होगा?

देखिये इसको पोलिटिकल इसु नहीं बनना चाहिये हमारे हिसाब से क्योंकि ये तो हम यहां का नागरिक है हमको सिटीजन रजिस्टार मे नाम आ जायेगा ये कोई पोलिटिकल इसु नहीं है ये हमारा राइट है। लेकिन कोइ–कोई पार्टी अभी इसे पोलिटिकल इसु बना रहा है। कोई कोई बोलता है कि इतना लाख घुसपैठिया है इतना लाख फोरनरस है ये बात ठीक नहीं है क्योंकि अभी इन्डियन नागरिक है, उनको इस रजिस्टर के अंदर आना चाहिए और अभी जो 2019 का जो चुनाव होगा इसमें बहुत सारे मुद्दा है डोकलाम मुद्दा है ये सरकार बहुत सारे वादा के हिसाब से बना है और वो वादा पूरा नहीं हुआ यही सारा मुद्दा रहेगा।

★ पहले घुसपैठियों के वोट काँग्रेस झटक लेती थीं परंतु वो काम अब आपकी पार्टी करती हैं। क्या ऐसा माना जाये कि 2019 के चुनाव मे घुसपैठियों का मतदान एकतफा आपके पार्टी को मिलेगा?

ये सरासर गलत बात है क्योंकि हमें जो वोट संख्या मिला है उस मे ज्यादातर घुसपैठिया नहीं है ये पुफ्र हो जायेगा । एक परिवार में पांच आदमी है तो तीन का आया दो का नहीं आया , किसी के फादर का आया मदर के नहीं आया किसी के बेटा का आया तो बेटी का नहीं आया ये जो बताया जा रहा है घुसपैठिया है हम नहीं मानते कि सभी घुसपैठिया नहीं है ज्यादातर आदमी इन्डियन है। ये पुफ्र हो जायेगा। जो बाहर से भी आदमी असाम मे गया हुआ है वो भी एनआरसी रजिस्ट्रेशन के लिए दिया हुआ है, लेकिन दूसरे स्टेट अभी तक ओथेन्टिकेट कर के नहीं दिया है। इसलिए उनको हैग कर के रखा हुआ है। इस लिए सभी घुसपैठिया का बात सही नहीं है। क्योंकि 1997 मे एक इलेक्शन कमिशन ऑफ इन्डिया द्वारा असाम का जो कोड किया था, उसी के अधार पर एक नया तरीका का रुल बनाया है। इससे डिबुटरस निकाला है फोरनर निकाला है एसपर इन्डियन कॉन्ट्चुशन क्या है कि उसको भी वोट का अधिकार मिलना चाहिए तो हमें घुसपैठिया का वोट कैसे मिल गया ? घुसपैठिया का तो वोट अधिकार में नाम ही नहीं रहेगा ।

★ आपके पार्टी अध्यक्ष बदरूद्दीन अजमल सिर्फ एक समुदाय के पैरवी करते हैं, ऐसा लोगों का कहना है?

ये एक्चुअली ठीक नहीं है। असम मैनुअरटी कई तरीके के हैं और असम एक मिनी इन्डिया है। इसमें बहुत सारे भाषा के आदमी रहते हैं। तो, वैसे मैनुअरटी के लोगो से बात करता है तो उसका गलत मतलब निकाल देता है।

★ माना जाता है कि जहां मुस्लिम आबादी बढ़ती है वहां औरों धर्मो का रहना मुश्किल हो जाती है, असम में सन् 1971 मे 72.5 प्रतिशत हिन्दू थे जो कि 30 वर्ष बाद घट कर 65: के निचे चले गए जो अभी 60: से भी नीचे है हिन्दू। आप की राय क्या है ?

देखिए एक्चुअली बात ऐसा है कि जो फैमिली प्लानिंग है वो अनपढ़ लोगों नहीं मान रहा और जो पढ़ा लिखा है वो मान रहा है इसमें क्या हुआ कि इसमें लोगों का बढ़ना और घटना हुआ है ऐसा भी नहीं हुआ कि बाहर से आदमी आकर इधर बैठ गया है। और ज्यादातर आदमी बाहर गया है ऐसा कुछ बात नहीं है। लिखाई पढाई मे जो जितना एडवांस होगा उसका उतना दायित्व होगा कि हमारा फैमिली छोटा रहे। इस कारण से असाम मे कुछ आबादी (मुश्लिम) बढ़ा हैं।

★ क्या आपको AIUDF मे अल्पसंख्यक संसद सदस्य माना जा सकता है?

सही मे क्या हुआ आउट ऑफ थिरि मे एक हूँ क्योंकि पहले विधायक भी था मेरे पार्टी में, अभी भी एक है। बात ऐसा है कि ये पार्टी में अल्पसंख्यक हू या मैजूरिटी है ये बात नहीं है हमारे पारलियामेन्ट मे जो अधिकार है, करता हूँ। ऐसी बात नहीं सोचते हैं।

★ आप RSS को देश निर्माण में कहाँ देखतें हैं?

देखिए RSS जो अभी कर रहा है अभी जो उनका कहना है गौ रक्षा के नाम पर, मौव लिन्चिंग हो रहा है इस मे उनका हाथ है वो ठीक नहीं है इन्डिया का जो संविधान है उसमें सब जाति को अधिकार दिया हुआ है। भारत सभी देशों का मदद किया हुआ है।

★ संघ RSS का मानना है कि हिन्दस्तान मे रहने वाले सभी नागरिक एक हैं और पहले सनातनी हिन्द हैं, आप सहमत हैं?

देखिये हम सब इन्डियन है भारतीय हैं। धर्म के नाम पर डिविजन नहीं होना चाहिए।

★ आपकी संसद में असम के अन्य सांसदों के तुलना मे उपस्थिति लगभग सबसे ज्यादा है, क्या माने कि हम 2019 मे आपसे दुबारा मिलेंगे?

भगवान का आशीर्वाद हुआ और जनता का आशीर्वाद हुआ तो जरूर मिलेंगे।

पटना का सर्वश्रेष्ठ निजी इंजीनियरिंग कॉलेज

ISO 9001:2008 Certified

NSIT

NETAJI SUBHAS INSTITUTE OF TECHNOLOGY

Since: 2008

BIHTA PATNA: Beside (IIT Campus)
Only 25 Km. from PATNA JUNCTION

TOLL FREE No.- 1800 2700 477
Mob. : 7781020349

Wishes You
" A Happy Independence Day"
&
"Happy Raksha Bandhan"

E-mail : info@nsit.in Website : www.nsit.in

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षा बंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

मेथोडिस्ट हॉस्पीटल

प्रताप सागर,
बक्सर-802101 (बिहार)

-: सुविधाएँ :-
सभी सुविधाओं से लैश।
मुफ्त रेलवे पास।
गरीब रोगियों को विशेष छूट।

डॉ० आर.के. सिंह

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के पावन अवसर पर गउडाढ रूद्रनगर पंचायत की जनता सहित सम्पूर्ण बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

अशोक चौधरी

मुखिया
ग्राम पंचायत - गउडाढ रूद्रनगर,
बिहिया, भोजपुर

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सम्पूर्ण बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

विवेक कुमार बब्लू

अभराई इण्डेन
बिहिया, भोजपुर

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के पावन अवसर पर नया भोजपुर जदीद पंचायत की जनता सहित सम्पूर्ण बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

रिंकी यादव

मुखिया
पति - बच्चन यादव
ग्राम पंचायत - नया भोजपुर जदीद

केवल सच, केवल सच टाइम्स,
केवल सच पोर्टल न्यूज, केवल सच समाजिक संस्थान
की ओर से स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की
हार्दिक शुभकामनाएँ।

निवेदक : श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

बिरसा मुडा

सिद्धू मुर्मू

कान्हु मुर्मू

तिलका माझी

निलाम्बर पिताम्बर

निरमल महतो

विनोद बिहारी महतो

टेक लाल महतो

राम दयाल मुण्डा

"जतरा वीर टाना भगत केवल सच सम्मान - 2018"

130 वीं जन्मोत्सव महाकुंभ

09 सितम्बर, 2018 (रविवार)

स्थान - रिम्स सभागार, बरियातु, राँची (झारखण्ड)
समय - 1 बजे अपराह्न

Kewal Sach
हिन्दी मासिक पत्रिका
www.kewalsach.com

ब्रजेश मिश्र
संस्थापक सह संपादक
09431073769

निवेदक- **श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट एवं केवल सच पत्रिका परिवार**

बिहार कार्यालय- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
झारखण्ड कार्यालय- सेक्टर-1, ब्लॉक-22, फ्लैट-303, खेलगाँव हाउसिंग कॉलोनी, होटवार, राँची (झारखण्ड)
सम्पर्क संख्या :- 9955077308, 9308727077